



श्री

अथसुंदरदासकृत

सवैया

प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ अथसुं  
दरविलासतिरव्यते॥ ॥ मोजकारिगुरुदेवदया  
करि॥ शब्दसुनायकत्वौहरिनेरो॥ ज्यौंसविकैप्रगटे  
निसिजातसु॥ दूरकीयोभ्रमभांनअंधेरो॥ काय  
कवायकभांनसहूकरि॥ हेगुरुदेवहिंवदनमेरो॥ सुंद  
रदासकहेंकरजोरिके॥ दादूदयालकोहूनिनितचेरो॥  
१॥ पूरणब्रह्मविचारनिरंतर॥ कामनक्रौधनलोभन  
मोहे॥ श्रौत्रत्वचारसनाअरुघ्राणसु॥ देखिकछूक-  
हूनेननमोहे॥ ज्ञानस्वरूपअनूपनिरूपनजासुगिरा-  
सुनमोहनमोहे॥ सुंदरदासकहेंकरजोरिकेदादूदया  
लहिमोरिनमोहे॥ २॥ धारजवंतअडिगजितेंद्रियनि  
र्मलज्ञानगयोद्रटआदू॥ मालसंतोषदिमाभिनके  
घट॥ लगिरत्वोस्वअनाहूदनादू॥ भेषनपक्षनिरंत

रत्नक्षत्र ॥ ओर नहि कछू वाद विवाद ॥ एस बल छन  
 हैं जिन मां हिंस ॥ सुंदर के उर हैं गुरु दाद ॥ ३ ॥ भोजन में  
 बहि जात हुते जिन ॥ काटिलिये अपने कर आद ॥ ओ  
 र सदेह मिटाय दीयो सब ॥ कानन देर सुनाय के नाद ॥  
 पूर्न ब्रह्म प्रकास कीयो पुन ॥ छूट गयो यह वाद विवा  
 द ॥ ऐसी रूप अंजु करि हम ऊपर सुंदर के उर हैं गुरु दा  
 द ॥ ४ ॥ कोई कगोरष कां गुरु या पत कोई कदना दिगं  
 बर आद ॥ कौ उक कंथर को ऊक भर थर ॥ कौ ऊक-  
 बीर कोराषत नाद ॥ कौ ऊक हैं हरि दास हमारे जु ॥ -  
 यों करि ठानत वाद विवाद ॥ और तो संत सब ही-  
 सिर ऊपर ॥ सुंदर के उर हैं गुरु दाद ॥ ५ ॥ कोई बि  
 भूत जटान पथारिक हैं यह भेष हमारे हे आद ॥ को  
 ई कान फराय फिरे पुन ॥ कोई कसिंगी बजावत  
 नाद ॥ कोई ककेसलु चाई करे व्रत ॥ कोई कजंगम के  
 सिव वाद ॥ यों सब भूलि परे जित हितित ॥ सुंदर-  
 के उर हैं गुरु दाद ॥ ६ ॥ जोगी कहे गुरु जैन कहे गु-  
 रु ॥ बोध कहे गुरु जंगम माने ॥ भक्त कहे गुरु न्या-  
 सी कहे वनवासी कहे गुरु ओर वरवांने ॥ शेष कहे गु

रुसोफिकहेंगुरुयाहीतेंसुंदरहोतहेरानें॥ बाहूक  
 हेंगुरुबाहूकहेंगुरुहेंगुरुसोईसबेज्मममानें॥ ७॥  
 सोगुरुदेवल्लिपेंनछिपेंकछूसत्वरजोतमतापनि  
 वारी॥ इंद्रियदेहमृषाकरिज्ञानतसीतलतासमता  
 ऊरधारी॥ व्यापकब्रम्हविचारअखंडितहैतऊपा-  
 धिसबेजिनटारी॥ शब्दसुनायसंदेहमिटावत॥ सुं-  
 दरवागुरुकीबलहारी॥ ८॥ हेगुरुकोऊरध्यानहमा-  
 रे॥ पूर्णब्रम्हबतायदोयेजिन॥ एकअखंडितव्याप-  
 कसारे॥ रागरुद्वेषकरेंअबकोनसें॥ जोईहेमूलसो  
 ईसबडारे॥ संसयसोकमिठ्योमनकोसबतत्वविचा-  
 रकट्योनिरधारे॥ सुंदरसुधकीयेमलधोईकें॥ हे  
 गुरुकोऊरध्यानहमारे॥ ९॥ ज्यौकपडाधस्त्रीगहि-  
 व्योंततकाष्टहिकोंबटईकसिआने॥ कंचनकोजुसो  
 नारकसेपुनिलोहकोघाटलोहारहिजानें॥ पाहन-  
 कोंकसिलेतसिलावट॥ पात्रकुंभारकेहाथनिपाने  
 ॥ तेसेंहिशिव्यकसेंगुरुदेवजु॥ सुंदरदासतबेमन-  
 माने॥ १०॥ ॥ छंदमनहर॥ ॥ ऐसेगुरुदेवकों  
 हमारीजुप्रनामहें॥ सत्रुहूनमित्रकोऊजाकेसबहें

समान ॥ देह को समत्व छांडि आत्मा ही राम हैं ॥ और  
 हू ऊपाधि जाके कब हू न देषीयत ॥ सष के समुद्र में रह  
 त आठों जाम हैं ॥ रिद्धि अरु सिद्धि जाके हाथ जोरि आ  
 गे श्री ॥ सुंदर कहत ताके सब ही गुलाम हैं ॥ अधिक  
 प्रसंसा हम के से करि कहि सकें ॥ ऐसे गुरु देव को ह  
 मारे मु प्रनाम हैं ॥ ११ ॥ ज्ञान को प्रकास जाके अंध का  
 र भयो नास देह अभिमान जिन तज्यो जान सारधी ॥  
 सोई सुख सागर ऊजागर बैरागरु ज्यों ॥ जाके बेन सु  
 नत बिलात हैं बिकारधी ॥ अगम अगाध अति ॥ को  
 ऊन हि जने गति आत्मा को अनुभव अधिक अपारधी  
 ऐसे गुरु देव वंदनी कति हं लोक मां हो ॥ सुंदर विराज  
 मान सो मत उदारधी ॥ १२ ॥ सोई गुरु देव जाके दूसरी न  
 बात हैं ॥ काहू सो न रोष तोष काहू सो न राग दोष काहू सो  
 न घेर भाव काहू की न धात हैं ॥ काहू सो न बकवाद का  
 हू सो न संगन तो कोऊ पक्ष पात हैं ॥ काहू सो न दुष्ट बे  
 न काहू सो न लें न देन ब्रह्म को बिचार कछू और न सु  
 हात हैं ॥ सुंदर कहत सोई इस न को म हाईस ॥ सोई  
 गुरु देव जाके दूसरी न बात हैं ॥ १३ ॥ सद्य शिष्य पल

देसोसतगुरुजानीये॥ लोहकोंज्यों पारसषषांनहूँ प  
 लटलेत॥ कंचनछूवतहोतजगमेंप्रयानीये॥ द्रुमकों  
 ज्योंचंदनपलटकेलगायवास॥ आपकेसमानता  
 कोंसीतलताआनीये॥ कीटकोंज्योंभ्रंगहूपलटके  
 करतभ्रंग॥ सोरुडिजायताकोअचरजमानीये॥  
 सुंदरकहतयहसगरेमसिधवातसदसिपलटेंसो  
 सदगुरुजानीये॥ १४॥ गुरुबिनज्ञाननाहींगुरुबिन  
 ध्याननहींगुरुबिनआतमाविचारनलहतुहे॥ गु  
 रुबिनप्रेमनहींगुरुबिनप्रीतनहीं॥ गुरुबिनसील  
 हूसंतोषनगहतुहें॥ गुरुबिनप्यासनहींबुधीकोम  
 कासनहींभर्महूकोनासनाहीसंसेईरहतुहें॥ गुरु-  
 बिनवाटनाहीकोडीबिनहटाटनाहीसुंदरप्रगटलोक  
 वेदयोंकहतुहें॥ १५॥ पढ़ेंकेनबेठोपासअक्षरनबांच  
 सकेबिनहीपढ़ेंतेंकेसेंआवतहेपारसी॥ जोंहरिके  
 मिलेबिनपरखिनजानेंकोई॥ हाथनगरियेंरहे-  
 संसयनटारसी॥ वैदहुनमित्योकोउबूटीकोंबता  
 यदेतभेदबिनुपायेवाकेओषदहेछारसी॥ सुंदर  
 कहतमुरवरंचहूनदेरव्योआइगुरुबिनज्ञानज्योंही

अंधरेमे आरसी ॥ १६ ॥ गुरुके प्रसाद बुद्धि उत्तम  
 दिसा कोंगहें ॥ गुरुके प्रसाद भवदुःख विसराइयें ॥  
 गुरुके प्रसाद प्रेम प्रीत हू अधिक बाटे ॥ गुरुके प्रसा  
 द रायनाम गुन गाइयें ॥ गुरुके प्रसाद सब जोग की  
 जुगति जानें ॥ गुरुके प्रसाद संन्यमें समाधिलाइयें  
 ॥ सुंदर कहत गुरुदेव जो कृपा लहोई तिनके प्रसाद  
 तत्त्वज्ञान पुन पाइयें ॥ १७ ॥ जगमें न कोई हितका-  
 री गुरुदेव सो ॥ बूडत भौ सागरमें आयके बंधा वेधीर-  
 पार ऊलंगाय देत नाव कों ज्यों पैव सो ॥ पररूप गारीस  
 सब जीवनि के सारे काज कब हून आवे जाके गुन नि-  
 कोछे व सो वचन सुनाय भय भय सब दूर करे सुंदर  
 दरवाय देत अलष अभेव सो ॥ ओर हूसने हिह मनी  
 के करि देष सो धे ॥ जगमें न कोई हितकारी गुरुदेव  
 सो ॥ १८ ॥ गुरुतात गुरुमात गुरुबंधु जिन गात गुरुदे  
 व नरवशिष्य सकल संवासो हे ॥ गुरुदिये दिव्य नेन-  
 गुरुदिये गुरुव बेन ॥ गुरुदेव श्रवन दे सब दऊचा स्वी  
 हे ॥ गुरुदिये हाथ पाव गुरुदिये सीस भाव गुरुदेव पि  
 ड माही प्राण आय डारो हे ॥ सुंदर कहत गुरुदेव जु

ऋपालहोई फिर घाट घंडि करि मोहि निस ता सो हे  
 ॥१९॥ कोऊ देत पुत्र धन कोऊ देत बल धन कोऊ देत  
 राज साज देव रिषी मुन्यौ हैं ॥ कोऊ देत जं समान को  
 ऊ देत रस आन कोऊ देत विद्या ज्ञान जगत में गुन्यौ हैं  
 कोऊ देत रिद्धि सिद्धि कोऊ देत नव निधि कोऊ देत आ  
 र कछू ताते सी सधुन्यौ हैं ॥ सुंदर कहत एक दीयो  
 जिन राम नाम ॥ गुरु से ऊदार कोई देख्यो हेन सुन्यौ  
 हैं ॥२०॥ गुरु के अनंत गुन कापे कहें जात हैं ॥ भोमी  
 दू कीरें की तो संख्या कोऊ कहत हैं ॥ भारहू अठार  
 द्रुमतिन के जो पात हैं ॥ मेघन की संख्या सो ऊरुषि  
 नै कहि बिचार ॥ बूंदन की संख्या ते ऊ आय के बिला  
 त हैं ॥ तारें की संख्या सो ऊ कहि हे पुरान मांही ॥ रो  
 मनि संख्या पुनि जितने क गात हैं ॥ सुंदर जहां लो जं  
 तुति नही को आवे अंत गुरु के अनंत गुन कापे कहें  
 जात हैं ॥२१॥ गुरु की तो महिमा अधिक हे गोविंद ते  
 ॥ गोविंद के कीये जीव जात हैं रसातल को ॥ गुरु उपदे  
 से सो तो छूटे जम फंद ते ॥ गोविंद के कीये जीव बस परे  
 कर्मनि के गुरु के निवाजे सु फिरत हैं स्वच्छंद ते ॥ गोविं



दकेकीयेजीवबुडतभोसागरमें॥सुंदरकहतगुरु  
 काटेदुःखद्वंदते॥औरहंकहांलोकछूमुःषते॥कहो  
 बनायगुरुकीतोमहीमाअधिकहेगोविंदते॥२२॥  
 असीकोंनभेटगुरुदेवआगेराधीये॥चिंतामनिपा  
 रसकलपतरूकांमधेनुऔरहूअनेकनिधिवारि  
 वारिनाषिये॥जोईकछूदेषीयेसोसकलविनासवं  
 त॥बुधिमेविचारकरिबहूअभिलाषिये॥तार्तेम  
 नबचनकर्मकरिकरजोरी॥सुंदरचरनसीसमेल  
 दीनामाषीये॥बहूतप्रकारतीनोलोकसबसोधेह  
 हस॥असीकोंनभेटगुरुदेवआगेराधीये॥२३॥म  
 ह देवनामदेवजु॥रामानंदसुषानंदकहीयेअनंतानं  
 द॥सरसरानंदहूकेआनंदअछेवजु॥रैदासकबी  
 रदाससोजादासपीपादासदा  
 वहीकीटेवजु॥सुंदरकहतसंतप्रकटजगतमांही  
 ॥तेमेगुरुदासदासलागेहरिसेवजु॥२४॥गुरुदेव  
 सर्वोपरिअधिकविराजमान॥गुरुदेवसबहीते  
 अधिकगरिष्ठहैं॥गुरुदेवदत्तात्रयनारदसुकादि



हीचतुरस्वजांनपरविनअति॥परेजनिपिंजरेमोह  
 कुआ॥पायउत्तमजनमलाथलेचपलमना॥गाय  
 गोविंदगुनजीतजूवा॥आपहिआपअज्ञाननलनि  
 बध्योविनाप्रभुविमुखकैवारसुवा॥दाससुंदरकह  
 पर्मपदतोलहे॥रामहरिरामहरिबोलसुवा॥१॥हक  
 तुंहकतुंबोलतोता॥नफससैनांनकोआपनिकेदकर  
 ॥क्यातुनीमेंफिरयाषायगोता॥हेगुनःगारमिगुनाही  
 करतहे॥षायगाभारतबफिरेरोता॥जिनतुजेषाक  
 सेंअजबपैदाकीयातूंऊसेक्यौंफरामोसहोता॥दास  
 सुंदरकहेसरमतबहीरहे॥हकतूंहकतूंबोलतोता  
 ॥२॥भीतुहीभीतुहीबोलतूती॥आबकीबूंदऔ  
 जूदपैदाकीया॥नेनसुःषनासिकाकरसंजूती॥व्या  
 लऐसाकरेंउहीलीयांफिरे॥जागकेंदेषक्याकरेसू  
 ती॥भूलऊसषस्मकोंकांमतेंक्याकीया॥वेगदेया  
 दकरमरनिपूती॥दाससुंदरकहेसर्वसरवतोलहे  
 ॥भीतुहीभीतुहीबोलतोती॥३॥एकतूंएकतूंबो  
 लमेंनां॥अवलबुस्तादकेकदमकीषाकहैहिरसग  
 जारसबछोडफेंनां॥यारदिलदारदिलमांहितूंयाद

करहेतुजेपासतुंदेषनेना॥जानकाजानहेजिंदका  
जिंदहे॥सषुनकासषुनकछूसमऊसेना॥दाससुं  
दरकहेसकलघटमेंरहे॥एकतूएकतूबोलमेंना॥४  
॥॥छंदमनहर॥॥कानकेगएतेंकहाकानअसेहे  
तमूढ॥नेनकेंगएतेंकहानेनएसेपाइये॥नासिका  
गेएतेकहांनासिकासुगंधलेत॥मुःषकेगएतेंअसे  
मुषकहांगाईये॥हाथकेगएतेंकहांहाथएसेकाम  
होत॥पावकेगएतेंअसेपावकितधाइये॥याहीते  
विचारदेषसुंदरकहततोहि॥देहकेगएतेंअसेदेह  
कितपाईये॥५॥वारवारकह्योतोहीसावधानक्योंन  
होई॥ममताकीमोदसिरकाहेकोंधरतुहे॥मेरोधनमे  
रोधाममेरेरक्तमेरीबांममेरेपसुमेरेगाम॥भुल्योहिफि  
रतुहे॥तूतोसयोबावरोबिकायगईबुधीतेरी॥असो  
अंधकूपग्रेहतामेंतूंपरतुहे॥सुंदरकहततोहीनेकहू  
नआवेलजकाजकोंबिगारकेअकाजक्योंकरतुहे॥  
६॥तेरेतोकोंपेंचपरयोगांठिअतिधूरिगई॥ब्रह्मा  
आईछोरेक्योंहीछूटतनजबहू॥तेलसोंभिजोईक  
रिचीथरालपेटराषेकूकरकेपूछसधेहोतनहीतबहू

सासूदेतसीषबहूकीरीकोंगिनतजाई॥५॥ ५॥  
 दिनबीतगएसबहू॥सुंदरअज्ञानीअसो॥छोड्योन  
 हिअभिमान॥निकसतप्रानलगचेत्योनहीकबहू॥  
 ७॥वालुमाहीतेलनहीनिकसतकाहूविध॥पथर  
 नभीजेबहूवर्षतघनहे॥पानीकेमथेतेंकहूंधीवनह  
 पाईयत॥कूकसकेकूटेकहूनिकसतकनहेसंन्य  
 हीकीमूठीभरीहाथनपरतकछू॥ऊसरकेबोहेक  
 हानिपजतअनहे॥उपदेसआषदसांकोनविधिलगे  
 ताही॥सुंदरअसाधरोगभयोजाकेमनहे॥८॥विरी  
 माहीतिरेजानतसनेहीमेरे॥दारासुतविततेरोषोसि  
 षोसिषायगे॥ओरहीकुटंबलोगलुटेचहूओरहीते  
 मीठीमीठीबातकहीतोसोंलपटाएगे॥ ५॥ ५॥  
 बजबकोईनहीतेरोतबअंतहीकठनबांकी १७०ज  
 एगे॥सुंदरकहततातेजूठोईप्रपंचसब॥स्वप्नेकीन्या  
 ईसबदेषतविलांएगे॥९॥वारूकेमंदिरमांहीबेठीर  
 ल्योस्थिरहोय॥राषतहेजीवनकीआसकेऊदिनक  
 पलपलछीजतघटतजातघरिघरी॥बिनसतबार

भूसाइतउतफिरेताकीरहीभिन्नकी॥सुंदरकहतमेरी  
 मेरीकरिभूलोसठ॥चंचलचपलमायाभईकिंनकिं  
 नकी॥१०॥श्रवनलेजाईकरिनादकीलेडारेफासीनेन  
 वालेजाईकरिरूपबसकस्योहेनासिकालेजायकरिब  
 हूतसुंगावेगंधा॥रसनलेजाईकरिस्वादमनहस्योहे  
 ॥चर्महुलेजाईकरिनारीसोंस्पर्शकरे॥सुंदरकोईकसा  
 धूठगनितेंडस्योहे॥कामठगक्रोधठगलोभठगमोह  
 ठगठगनीकीनगरीमेंजीयआईपस्योहे॥११॥पायो  
 हेमनुष्यदेहऔसरबन्योहेआई॥एसीदेहवारवार  
 कहोकहापाइये॥भूलतहेबावरेतुंअबकेसियानो  
 होई॥रत्ननअमुलसोतोकाहेकूठगाईये॥समझि  
 विचारिकरिठगनिकोसंगत्याग॥ठगबाजिदेखीक  
 रिमननंदुलाईये॥सुंदरकहततातेसावधानक्युं  
 नहोई॥हरिकोभजनकरिहरिमेसमाईये॥१२॥  
 घरीघरीघटतछीजतजातछिनछिन॥भीजतही  
 गरीजातमाटीकेसोतेलहे॥मुक्तीकेद्वारेआईसाव  
 धानक्यौंनहोई॥वारवारचढतनत्रीयाकोसोतेलहे  
 ॥करिलेसक्रितहरिभजनअखंडनरयाहीमेंअंतर

परेयामेब्रह्ममेंलहे॥मनुषजनमयहजीतपावेहा  
 र॥अबसुंदरकहतयामेजूआकेसोषेलहे॥१३॥देव  
 तहीदेषतबूढापोदोरीआयोहे॥जोवनकोगयोराज  
 ओरसबभयोसाज॥आपनीदोहाईफेरदमामोवजा  
 योहेलकुटिहथियारलीयेनेनकरढाकदयेरचैतवार  
 भयोताकोतंबूसोतनायोहे॥दसनगएसमानोंदखा  
 नदूरकीयेजोगरीपरीसुआनबिछानोंबिछायोहे  
 ॥सीसकरकंपतसुसुंदरनिकाखोरिपु॥देषतहीदे  
 षतबूढापोदोरीआयोहे॥१४॥देहकोनदेहकछूदे  
 हकोममत्वछांडदेहतोदमामोंदियेदेहदेहजातहे  
 ॥घटतोघटतघरीघरीघटनासहोत॥घटकेगाएते  
 घटकीनफीरबातहे॥पिंडपिंडमांहीपिंडपिंडकोंऊ  
 पावतहे॥पिंडपिंडषातपुनपिंडहिकोपातहे॥सुंद  
 रनहोयजांसांसुंदरकहतजग॥सुंदरचैतन्यरूपसुं  
 दरविष्यातहे॥१५॥ ॥छंदइंदवजय॥ ॥

श्रीवत्सचाकटिहेलटकीकचऊपलटेअजहूरतवां  
 मी॥दंतगएसुषकेउषरेनषरेनगएसुषरोषरकां  
 मी॥कंपतदेहसनेहसुदंपतसंपतजंपतहेनिसजां

मी॥ सुंदर अंत हूँ भौन तज्यो न भज्यो भगवंत सुलोक  
हरां मी॥ १६॥ देह घटी पग मों मी मंडे न ही ओल ठियां  
पुन॥ हाथ लईजू॥ आंषि हूना कपरे सुख ते जल सी  
सह लेक टिघी चनईजू॥ ईस्वर कों कब हू न संभार  
त दुःष परें तब हई दईजू॥ सुंदर तोहि विषे सुख वंछ  
त॥ घोर गे ऐपें बगै न गएजू॥ १७॥ पाई अमोल कदेह  
यहे नर क्युं न विचार करे दिल अंदर॥ काम दुःख को धु  
लो भहु मोह लूट तहें दश दुदिशि हंदर॥ तूं अब वं  
छत हे सर लोक हि काल दुपाइ परे सुपुरंदर॥ छांडि  
कुबुद्धि सुबुद्धि हृदे धरि आत मराम भज्ये क्युं न सुंदर  
॥ १८॥ इंद्र निके सुःष मान तेहें सठ्या ही ही ते बहू ते दुः  
ष पावे॥ ज्यों जल में ऊष मांस ही लीलत स्याद बंध्यो ज  
ल बाहिर आवें॥ ज्यों कपि मूत न छांडत हे रस नाव स  
बंध पस्यो बिल लावे॥ सुंदर क्यो पही लेन संभारत जो  
गुरवाई सुकन विधावे॥ १९॥ कौन कुबुद्धि भई घट अंत  
र॥ तूं अपने प्रभु से मन चोरे॥ भूल गयो विषया सुष में  
सठ॥ लाल चला गिर ह्यौ अति थोरे॥ ज्यों को उकंचन  
छार मिलावत ले कर पाथर सो न गफोरे॥ सुंदर यानर



देहअमोलकतीरलगीनौकाफितवोरै॥२०॥दिषनकेन  
 रसोभतहंजेसेंआहीअनोपमकेलिकोषंभा॥भीतर  
 तोकछूसारनहीपुनी॥ऊपरलीलकअंबरदंभा॥बोल  
 तहंपरनांहीकछूसुधज्योंहिवयारतेंबाजतकुंभा॥रू  
 सरहेकपिज्योंछिनमांहीते॥याहीतेसुंदरहोतअचंभा  
 ॥२१॥दिषनकेनरदीसतहें॥परिललनतोपसुकेसबही  
 हैं॥बोलतचालतपीवतषातसुवेधरवेवनजातसही  
 हैं॥प्रातगाएरजनीफिरिआवतसुंदरयोंनितभारव  
 हीहैं॥ओरतोललनआईमिलेंसब॥एककुमीसिर  
 शृंगनहीहैं॥२२॥प्रेतभयोकिपिसाचभयोकिनिसाच  
 रसोजितहीतितडोले॥तूंअपनीसुधभूलगयो॥सुष  
 तेकछूओरकीओरहीबोले॥सोईऊपाईकरेजुंमरेप  
 चिबंधनतोकबहूनहीषोले॥सुंदरजातनमेंहरिपाव  
 तसोतननासकीयोमतिभोलें॥२३॥पेटतेंबाहिरहोत  
 हिबालकआईकेंमातुपयोधरपीनों॥मोहबंध्योदिन  
 हिदिनओरतरुनभयोवयकेरसभीनों॥पुत्रप्रपोत्र  
 बंध्योपरिवारसुअमेंहिभांतगयेपनतीनों॥सुंदर  
 रामकोनामविसारकेंआपहिआपकोंबंधनकीनों॥२४

॥ मात पिता सुत भाई बंध्यो जु वतिके कहै कहा काम क  
 रे हैं ॥ चोरिकरै बट पारिकरें कीर घीवन जी करि पेट भरे  
 हैं ॥ सीत सहै सिर धाम सहै कहें सुंदर सोरन माऊ भरे  
 हैं ॥ बांधिर ह्यो ममता सब सोन रया ही तें बांध्यो ई बांध्यो  
 फिरे हैं ॥ २५ ॥ तेरी ही चातुरी तो ही ले बोरें ॥ तू ठग के ध  
 न और को ल्यावत ॥ तेरो ऊतो घर और ही फोरे ॥ आ  
 गल गें सब ही जरि जाई सुत दू मरी दमरी कर जोरें ॥  
 हा कम को डर नं हीन सूजत सुंदर एक हिवार निचोरें  
 ॥ तू धर चेन ही आपन षाई सु ॥ तेरे ही चातुरी तो ही ले  
 बोरें ॥ २६ ॥ ॥ छंद मनोहर ॥ ॥ करत प्रपचइ  
 त पंचनी के वस परयो परदार रत भैन आनत बुराई  
 को ॥ पर धन हरे पर जीव की करत घात म दमांस षाई  
 लव लेसन भलाई को होय गोहि सावत ब सुष तेन  
 आवे जाब ॥ सुंदर कहत लेषो लेतराई राई को ॥ इहां  
 तो कीये विलास जम कीन तो ही त्रास उहां तो न ही हि  
 कछू राज पोषां बाई को ॥ २७ ॥ दुनीयां कों दोडता हे ओ  
 रत कों लोडता हे औजूद कों मोडता हे वटोई सराई  
 का ॥ सुरगी कों मोसता हे बकरी कों रोसता हे गरीबां

कोंषोंसताहेबेसहेरगाईका॥जुलमकोंकरताहेध  
 नीसोंनडरताहे॥दोंजगकोंभरताहेषजांनांबलाई  
 का॥होयगाहिसाबतबआवेगानजाबकलू॥सुंदर  
 कहतगुनेगारहेंषुदाईका॥२८॥करकरआयोजब  
 षरषरबाढ्योनीरभरभरबाज्योढोलघरघरजांन्यो  
 हे॥दरदरदोस्योजायनरनरआगेदीनबरबरबक  
 तननेंकअलसांन्योहे॥सरसरसोधेधनतरतरतो  
 रेपांनजरजरकाटतअधिकमोदसांन्योहे॥फरफ  
 रफूल्योफिरेडरडरपेनमूढहरहरहसतनसुंदरसं  
 कान्योहे॥२९॥जन्मसिरांन्योजाईभजनविमुखस  
 व॥काहीकोभवनकूपबिनमीचमरेहें॥गहतअ  
 विद्याजानसकनलनीज्यौंमूढकर्मविकर्मकरेंकर  
 तनडरेहें॥आपहीतेजातअंधनर्कनीमेंवारवार  
 अजहूनसंकमनमांहीअबकरेहें॥दुषकोसमोह  
 अवलोककेनआसहोई॥सुंदरकहतनरनागपास  
 परेहें॥३०॥जूठोजगअंनसननित्यगुरुबेनदेषे  
 आपनेंहूनेनतोऊअंधरहेंज्वानीमें॥केतेरावरा  
 जारंकभयेरएचलगएमिलगएधूरमांहीआएते

कहांनीमें॥ सुंदर कहत अब ताहीन सूरत आवे  
 चै ते क्यों न मूढ चित लाय हिरदां नीमें॥ भूले जन दा  
 व जात लोह के सो ताव जात आव जात ए से जे से नाव  
 जात पां नीमें॥ ३१॥ जग मग पगत जिस जि भजरा  
 मनाम काम क्रोध तन मन घेरि घेरि भारीये॥ फूठ भू  
 ढ हठ त्याग जाग भाग सुनि पुं निगुन ज्ञान आनी आन  
 वारी वारी डारीये॥ गही ताही जाही से सई ससी ससु  
 र नर और वात हेत तात फेरी फेर जारीये॥ सुंदर दरद  
 षोई धोई धोई वार वार सार संगरंग अंग हेरि हेरि धा  
 रीये॥ ३२॥ ॥ छंद दू मलीये॥ ॥ हठ जोग ध  
 रोत न जात भिया हरि नाम विना सुःष धूर परें॥ सठ सो  
 गं हरो छिन गत किया चरिचांम विना भूष पूरि जरे॥ भ  
 ट भोग परोधन घात धीया अरिकांम फिना सुःष जूरि  
 मरे॥ मठ रोग करोधन घात हिया पर राम तिनां दुष  
 दूर करे॥ ३३॥ गुरु ज्ञान गहे अतिलेई सुधी मन मोहत  
 जे सब काज सरे॥ धरि ध्यान रहें पति षोई सुधी रन लोह  
 व जेत बलाज परें॥ सुरतां न न हें हत होई रुषी तन छोह  
 स जे अब आज मरे॥ पुरथां न लहें मत धोई दुःषी जन

बोहरजेजबराजकरें॥३४॥ ॥छंदमनहर॥ ॥का  
 हेकोंफिरतनरभटकतठोरठोर॥डायुलकीदोरदेवी  
 देवसबजानीये॥जोगजज्ञजपतपतीर्थव्रतादिकनि  
 तिनहंकोफलसोऊमिथ्याईबषानीये॥सकलउपाय  
 तजिएकरामरामभजियाहीउपदेससुंनिक्षिदेमही  
 आनीये॥नाहीतेंसमुझिकरिसुंदरविश्वासधरि॥ओ  
 रकोऊकहेंकलूताकीनहीमानीये॥३५॥ ॥छंदइंद्र  
 वजय॥ ॥संतसदाऊपदेसबतावत॥केससबेसि  
 रस्वेतभएहें॥तूंममताअजहूनहीछांडतमोतहू  
 आयसंदेसदयेहें॥आजकेकालचलेउठमूरषतेरे  
 तोदेषतकेतेगयेहें॥सुंदरक्यैंनहिरामसंभारतया  
 जगमेकहोकोनरहेहें॥३६॥ ॥इतिउपदेस  
 चिंतामणिकोअंगसमाप्तः॥३॥ ॥अथका  
 लचिंअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंद्रव॥ ॥संदिरमा  
 लबिलायतहंगज॥ऊठददांमांदिनाइकदोहें॥ता  
 तहूमातत्रीयासक्तबंधवदेषधोंपामरहोतबिछैहें  
 जूठप्रपंचसोराचिरह्योसठ॥काठकीपूतरीज्यौंकपि  
 मोहें॥मेरीहिमेरीकहेंनितरसुंदरआंषिलगेकहीको

नकोकोहें॥१॥ एमेरेदेसविलायतहेंगजएमेरेमं  
दीरएमेरेथाती॥ एमेरेमातपितापुनिबंधवसोए  
मेरेपूतसोएमेरेनाती॥ एमेरीकामनिकैलकरेनित॥  
एमेरेसेवकहेंदिनराती॥ सुंदरवेसेंहिछांडगयोसब  
तेलजस्योसबूजीजबबाती॥२॥ भूलोकहेंनरमेरीई  
मेरीतेंदिनचारविश्रामलीयोसठतेरेकहेकछूटैगई  
तेरी॥ जेसेंहीबापदादागएछांडिस्का॥ तेसेंहीतूंतजि  
हेंपलफेरी॥ मारिहेंकालचपेटअचानकहोईगरीक  
मेराषकीढेरी॥ सुंदरलेनचलेकछूएंसंगतुभूलीक  
हेनरमेरीईमेरी॥३॥ केयहदेहजरायकेंछारकीया  
किकीयाकिकीयाकिकीयाहें॥ केयहदेहजमीमही  
षाददीयाकेदीयाकेदीयाहें॥ केयहदेहरहेदिनचार  
जीयाकेजीयाकेजीयाकेजीयाहें॥ सुंदरकालअचान  
कआईलीयाकेलीयाकेलीयाकेलीयाहें॥४॥ दे  
हसनेहनछांडतहेंनरजानतहेंथिरहेयहदेहा॥ छी  
जतजायघटेदिनहीदिनदीसतहेघटकोनितछेहा॥

। . ८५

हा॥ सुंदरजानं ! हे। न.

नेहा ॥५॥ तूंकछूओरविचारतहेनरतेरोविचारध  
 रयोईरहेगो ॥ कोटिउपायकरेधनकेहितभागलिष्यो  
 तितनोईलहेगो ॥ भोरकेसांजघरीपलमांजस ॥ का  
 लअचानकआईगहेगो ॥ रासभज्यौनकीयोनहीस  
 कितसंदरयोंपलताईरहेगो ॥६॥ भूलिगयोहरिनामकी  
 तूसठ ॥ देषधोंकोनसंजोगबन्योहे ॥ कालअचानक  
 आएगहेकंठपेधोंजूठोहितनोतन्योहे ॥ छारकरें  
 सबधांमकोलूटिअनादिकोअसेंहीजीवहन्योहे ॥  
 कोऊनहोतसहाईकुटंबअनादिकोसंदरऐसोसुन्यो  
 हे ॥७॥ बीतगएपछलेसबहीदिनआवतहेंअगलेदि  
 ननेरे ॥ कालमहाबलवंतबडोरिपुसांधरह्योसिरऊप  
 रतेरे ॥ एकघरीमहीमारिगिरावत ॥ लागतताहीक  
 छूनहीबेरे ॥ संदरसंतपुकारकहेंसबहंपुनितोहिक  
 होंअबटेरे ॥८॥ सोयरह्योकहागाफलकैकरितोसि  
 रऊपरकालदहारे ॥ धामसधूमसलागिरह्योसठ ॥  
 आईअचानकतोहिपछारे ॥ ज्योंबनमेंमृगकूदतफां  
 दतचित्रगलेनषसोंउरफारे ॥ संदरकालडरेजिनके  
 डर ॥ तांप्रभुकोंकहीक्योंनसंभारे ॥९॥ चैतनक्योंन

अचेतनअंगतकालसदासिरउपरंगजे॥रोकिरहे  
गढकेसबद्वारनितूंतवकोनगलिद्वैभाजे॥आईअचा  
नककेसगहेजबपाकरिकेंपुनितोहिजुलाजे॥सुंदर  
कोनसहायकरेंजवसुंडहिसुंडभराभरवजे॥१०॥तूंअ  
तिगाफलहोईरह्योसठकुंजरज्यौंकछूसंकनआनें॥मा  
यनहीतनमेअपनेंबलमतभयोविषयासुःषठानें॥  
षोसतषातसवेदिनबीततनीतअनीतकछूनहींजानें॥  
सुंदरकेहरिकारुमहारिपुदंतउपारिकुंभस्थलभांनें॥  
११॥मातपिताजुवतीस्तवंधवआईमिल्योइनसेंस  
नबंबंधा॥स्वारथकेअपनेंअपनेंसबसोयहनांहिं  
नजानतअंधा॥कर्मविकर्मकरेतिनकेहितभारधरे  
नितआपनेंकंधा॥अंतविछोहभयोसबसेंपुनया  
हीतेंसुंदरहेजगअंधा॥१२॥ ॥छंदमनोहर॥  
॥करतकरतधंधकछूवेजानेअंधा॥आवतनिकटदि  
नअगलेचपाकदे॥जेसेंबाजतीतरकुंदाबतहेंअचा  
नकजेसेंबकमछरीकोंलीलतलपाकदे॥जेसेंससिका  
कीघातमंकरिकरतआय॥जेसेंसापसुसककोंग्रसत  
गपाकदे॥चेतरेअचेतनरसुंदरसंभाररामएसेंतोही



कालआयलेईगोटपाकदे॥१३॥मेरोदेहमेरोगेहमेरो  
 परिवारसबमेरोधनमालमेंतोबहुविधभारोहू॥मेरेस  
 बसेवकहूकसकोऊमेदेनाहीमेरीजुवतीकेमेंतोअधि  
 कपियारोहू॥मेरोवंसऊचोमेरोबापदादाअसेभयेक  
 रतबडाईमेंतोजगतउज्यारोहू॥सुंदरकहतमेरोमेरो  
 करिजानेंसठअसेनहींजानेंमेतो कालहिकोचारोहू  
 ॥१४॥जबतेजनमधस्योतबहीतेभूलपरयोबालापन  
 मांहीभूलोसमस्योनरुषमें॥जोवनभयोहेंजबकांमव  
 सभयोतबजुवतीसोएकमेकभूलिरह्योसरुषमें॥पुत्र  
 हप्रपोत्रभएभूल्योतबमोहबांधचिंताकरिकरिभूल्यो  
 ॥जानेंनहींदुःषमेंसुंदरकहतसठतीनोंपनमांहीभू  
 लो॥भूलोभूलोजाइपरयो कालहीकेमुषमें॥१५॥ऊ  
 ठतबेठतकालजागतसोवतकालचलतफिरतकाल  
 कालउरुधरयोहें॥कहतसनतकालपातहूपीवतका  
 लकालहीकेगालमांहीहरहरहस्योहें॥तातमातबंधु  
 कालसतदारागृहकालसकलकुटुंबकालकालजाल  
 फस्योहें॥सुंदरकहतएकशामबिनसबकालकालही  
 कोकतकीयोअंतकालप्रस्योहें॥१६॥जबतेजनम

लेत तब ही ते आधु घटे ॥ माई सो कहत मेरो बडो होत  
जात हैं ॥ आज ओर काल ओर दिन दिन होत ओर ॥ दो  
खो दो खो फिरत घेतत असुषात हैं ॥ बाला पन बी ल्यो  
जब जो बन लग्यो हैं आई ॥ जो वन हू बी ते बूढो डोकरो  
दिषात हैं ॥ सुंदर कहत असें देषत ही बूझि गयो ॥ तेल  
घट गाए जे सें दीपक बूझात हैं ॥ १७ ॥ सब को ऊँ असें कहें  
काल हम काटत हैं ॥ काल तो अषंडना स सब को करतु  
हैं ॥ जाके भय ब्रह्मा पुन होत हैं कंपाय मान जाके भय अ  
सुर सुर इंद्र ऊडरतु हैं ॥ जाके भय शिव अरु शोषना गती  
नो लोक के ईक कल्प बी ते लोम स परतु हैं ॥ सुंदर कहत न  
रगर बगुमान करें ॥ तू तो सठ पल पल कनि में मरत हो  
॥ १८ ॥ काल सो न बल वंत को ऊँ ही दीषायत ॥ सब को  
करत अंत काल महा जोर हैं ॥ काल ही को डर सुनि भग्यो  
मूसा पे कंबर जहां जहां जाई तहां तहां वा को घोर हैं काल  
भयांन कभय भीत सब कीये लोक स्वर्ग मृत्यु पताल में  
काल ही को सोर हैं ॥ काल ही को काल एक सुंदर अखंड  
ब्रह्म वासो काल डरे जोई च ल्यो वही ओर हैं ॥ १९ ॥ वरषा  
भाए ते जे सें बोलत भंभीरी स्वर षंडन परत कहूँ कहूँ

जानीयें॥ जेसें पुंगी बाजत अषंडस्वर होत पुनि ताहू  
 में न अंतर अने करागगां नियों॥ जेसें कोई गुडी को चढा  
 वत गगन मांही ताहू की की सुधुनी सुनी वेसें ही बषांनी  
 यें॥ सुंदर कहत तेसें काल को प्रचंड वेग रात दिन चल्यो  
 जाई अचरज मानीयें॥ २०॥ माया जोर जोर नर राष तज  
 तन करि कहत हें एक दिन मेरे कांम आइ हें॥ तो ही तो म  
 रत कछु वार नही लागे सठ देष तही देष तब लू ला सो  
 बिलाई हें॥ धन तो धर्यो हीर हे चलत न कोडी गहेरी ते  
 हाथ निसें जे सो आयो ते सो जाई हें॥ करी ले सकत य  
 ह बरीयां न आवें फिरि सुंदर कहत नर पुं निपछताई हें  
 ॥ २१॥ बावरो सुभयो फिरें बावरी ही बात करें बावरो =  
 ज्यो देत वायू लागत बुरा नो हे॥ माया को उपाय जानें मा  
 या की चातुरी ठानें॥ माया मे मगन अति माया लपटा  
 नो हे॥ जो वन के मदमा तो गिनत न कोऊ ना तो काम व  
 स कामनी के हाथ हि बिकां नो हे॥ अतहि भयो बेहाल  
 सृजत न माथे काल सुंदर कहत असो ओर को दिवां  
 नो हे॥ २२॥ जूठो धन जूठो धांम जूठो सष जूठो कां  
 म जूठो देह जूठो नाम धरी के भुलायो हे॥ जूठो तात

जूठीमातजूतेस्तदारात्रांतजूठोहितमांनमांनजू  
 ठोमनलायेहे॥जूठोलेनजूठोदेनजूठोमुःषबोलेबे  
 नजूठेजूठेकरेफेनजूठीहीकोंधायेहे॥जूठहीमेंअते  
 मयोजूठहिमेंपचगयो॥सुंदरकहतसाचकबहूनआ  
 योहे॥२३॥ दीर्घाक्षर॥जूठेहाथीजूठेघोराजूठाआ  
 गेजूठादोराजूठाबांध्याजूठाछोराजूठाराजारांनीहे॥  
 जूठीकायाजूठीमायाजूठाजूठेधंधेलायाजूठामूआ  
 जूठेजीयाजूठीयाकीबांनीहे॥जूठासेवेजूठानगेजू  
 ठाजूजेजूठाभागेजूठापीछेजूठाआगेजूठेजूठीमांनी  
 हे॥जूठालीयाजूठादीयाजूठाषायाजूठापीयाजूठा  
 सोदाजूठाकीयाअसाजूठाप्रांनीहे॥२४॥जूठयेवंध्यो  
 हेजालताहीतिंग्रसतकालकालविकरालव्यालसब  
 हीकोंषातहे॥नदीकोप्रवाहचल्यौजातहेसमुद्रमांही  
 तेसेंजगकालहीकेमुःषमेंसमातहे॥दिहसोममत्व  
 तातेंकालकोमैमांनतहेज्ञानउपजेतेवहीकालहूवि  
 लातहे॥सुंदरकहतपरिब्रह्महेसदाअखंडआदीम  
 ध्यअंतएकसोईवहरातहे॥२५॥ ॥छंदइंद्रवज्र  
 ॥ ॥कालउपावतकालषपावतकालमिलावतहेग

हीमाढी॥कालहलावतकालचलावतकालसिषा  
 वतहेसबआढी॥कालबुलावतकालभुलावतका  
 लडुबावतहेवनघाढी॥सुंदरकालमिटेजबहीपुंनि  
 ब्रह्मविचारपढेजबपाढी॥२६॥ ॥इतिश्रीका  
 लचिंतामणिकोअंगसमाप्तः॥अंग३॥॥॥  
 अथदेहआत्माबिछोहकौअंगप्रारंभः॥॥कुंद  
 इंद्रवज्र॥॥बोलतहोसुकहांगयोपंषीवेश्रवनांर  
 सनांसुःषवेसेहीवेसेहीनासिकावेसेंहिअंषीवेकर  
 वेपगवेसबद्वारसवेनषसीसहीरोमअसंषी॥वेसे  
 हीदेहपरिपुंनीदीसतएकविनासबलागतषंषी॥सुं  
 दरकोउनजांनिसकेयहबोलतहोसुकहांगयोपंखी  
 ॥१॥षेलगयोइकषेलसुध्याली॥बोलतचालतपीव  
 तषावतसीचतहेद्रुमकोजेसेंमाली॥लेतहूदेतहूदेष  
 तरीफ्ततोरनतांनवजावतताली॥जामहीकर्मविक  
 र्मकीयेसबहेयहदेहपरीअबहाली॥सुंदरसोकिनहू  
 नहीदीसतषेलगयोइकषेलसोध्याली॥२॥मातपि  
 ताजुवतिसुतबंधवलागतहेसबकोअतिप्यारो॥ले  
 ककुटंबधरोहितरावतहोईनहीहमतेकहूंन्यारो॥दे

हसनेहतहांलगुजानहूबोलतहेसुषसब्दऊचारो॥सुं  
 दरचैतनशक्तिगईजबवेगिकहेंघरवारनिकारो॥३॥  
 ॥रूपभलोतबहीलगदीसतजोलगबोलतचारुत  
 आगे॥पीवतषातसुनेअरुदेषतसोईरहेउठिकेपुं  
 निजागे॥मातापिताभईयामिलिबैठत॥प्यारकेंजु  
 वतिगरलागे॥सुंदरचैतनशक्तिगईजबदेषतताही  
 सबेडरभागे॥४॥ ॥छंदमनोहर॥ ॥कोनभांत  
 करतारकियोहेंशरीरयह॥पावककेमांहीदेषोपानी  
 कोजमावनो॥नासिकाश्रवननेनवदनरसनबेनहाथ  
 पावअंगनषशिषकोबनावनों॥अजबअनूपरूपच  
 मकदमकओपसुंदरसोभतअतिअधिकसहावनों  
 ॥जाहिछिनचैतनशक्तिजबलीनहोई॥ताहीछिनल  
 गतहेसबकोअभावनों॥५॥मृतकाकोपिंडदेहताही  
 मेजुगतिभई॥नासिकानयनसुषश्रवनबनायेहें॥सी  
 सपांवहाथअरुअंगुरीविराजमानअंगुरीकेआगेपु  
 निनषहूल्गायेहें॥पेटपीठछातीकंठचिबुकअधरगा  
 लदसनरसनवहूबचनसनायेहें॥सुंदरकहतजब  
 चैतनासगतिगईवहेदेहजारीबारीछारकरीआए

हैं॥६॥देहतोप्रगतयहज्योंकीत्यौंहीजानीयत॥ने  
 नकेऊरोषेमांहीजाघतनदेषीये॥नाककेऊरोषेमांही  
 नेकनसुवासलेतकांनकेऊरोषेमांही॥सनतनलेषी  
 यें॥मूःषकेऊरोषेमेंनबचनउचारहोत॥जीभहूकों  
 षट्सस्वादनविसेषीये॥सुंदरकहतकोउकौनवि  
 धिजानेंताही॥पीरोकारोकाहूकारजानोहूनपेरीये॥  
 जमाततोपुकारेछातीकूटिकूटिरोवतहें॥बापहूकह  
 तमेरोनंदनकहांगयो॥भईयाहूकहतमेरिबांहआज  
 दूरभई॥बहनकहतमेरोवीरदुःषदेगयो॥कामनीक  
 हतमेरेसीससिरताजकहां॥उनतकालहाथहिमेंसो  
 धोरालख्योसुंदरकहतकोउताहीनहिजानीसकेंबो  
 लतहुतोसोयहछिन्नमेंकहांगयो॥८॥रजअरुवीर  
 जकोप्रथमसंजोगभयों॥चेतनासंगतितबकोनभां  
 तिआईहें॥कोऊएककहेंबीजमध्यहिकीयोप्रवेश  
 किंनहूकपंचमासपीछेकेसुनाईहें॥देहकौविजोगज  
 बदेशतहीहोईगयो॥तबकहोकोनकहांजायिकेसमा  
 ईहें॥पंडितरिषिस्वरतपेस्वरमुनीस्वरकुं॥सुंदरकह  
 तयहकिंनहूनपायिहें॥९॥तबकोंहींक्रियासबहोत

हैं विवध भांति जब लग घट मांही चै तन्य प्रकास हे ॥ दे  
ह के असक्त भये क्रीया सब थकी जाय ॥ जब लग स्वासा  
चले तब लग आस हे ॥ स्वास हूथ क्यो हे जब रोवन लगे  
हैं तब ॥ सब को ऊकहे अब भयो घटनास हे ॥ काहू न ही दे  
ष्यो किहि बोर कोन कहांगयो ॥ सुंदर कहत यही बिडोई त  
मास हे ॥ १० ॥ देह तो स्व रूप तो लोंजो लोंहे अस रूप मांही ॥  
सब को ऊ आदर करत सनमान हे ॥ टेठी पांगवां धिबार  
बार ही मरोडे मूछ बाहू ऊस कारे अति धरत गुमान हे ॥ दे  
स देस ही केलोक आय के हजूर होई ॥ बैठ करित षत कं  
हावे सुलतान हे ॥ सुंदर कहत जब चै तनां सगति गई ऊ  
हे देह ताकी कोऊ मानतान आन हे ॥ ११ ॥ ॥ इति देह आ  
त्मा बिछोह कौ अंग समाप्तः ॥ अंग ४ ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥  
॥ अथ त्रहं को अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद इंदवा ॥ ॥ नैन  
न की पल ही पल में क्षण आध घरी घटिका जु गई हैं ॥ जां  
मग यौ जुग जां मग यौ पुंन साऊ गई तब रात भई हैं ॥ आ  
ज गई अरु काल गई पर सोंतर सों कलू ओर ठई हैं ॥ सुं  
दर एसें ही आय गई त्रसना दिन ही दिन होत नई हैं ॥ १॥  
कन ही कन कों बिल्लात फिरें सठ जाचत हैं जन ही जन



को॥ तनही तनकों अतिसोचकरे नरषे तरहे अनही  
 अनकों॥ मनही मनकी त्रसनां नमिटी॥ पुंनिधांवत  
 हें धनही धनकों छिनहि छिन सुंदर आयु घटी॥ कबहु  
 न गयो बनही बनकों॥ २॥ तेरी तो भूषन क्यों ही भगे  
 गी जो दस बीस पचास भएसत होई हजार तो लाख म  
 गेगी॥ कोटि अरब षरब असंघ प्रथि पति हो न की चाह  
 जगेगी॥ स्वर्ग पताल को राज करो त्रसना अधिकी अति  
 आगल गेगी॥ सुंदर एक संतोष विना सठ तेरी तो भूष  
 क दिन भगेगी॥ ३॥ लाष करो ड अरब षरब निनी लपट  
 मत हां लग पाटी॥ जोर हि जोर भंडार भरे सब॥ ओर र  
 ही सजमी तर डाटी॥ तो हून तो ही संतोष भयो सठ सुंद  
 र ते त्रसनां नहि काटी॥ सूजत नां हिंन काल हितो सिरमा  
 रिकें थाप मिलाइ तमाटी॥ ४॥ भूषली एद सहू दिसि  
 दोर तताही तें तूंक बहून अघै हैं॥ भूष भंडार भरे नहि के  
 सें हू जो धन मेर कुमेर लों पै हैं॥ तूं अब आगे ही हाथ प  
 सारत याही ते हाथ कछून ही ऐ हैं॥ सुंदर क्यों न ही तो  
 ष करे नर पाई कें पाई कि तोई कषे हैं॥ ५॥ भूषन चाव  
 तरं क हिराज ही भूषन चाई के विसु बिगोई॥ भूषन वा

ईकेविसुबिगोई॥भूषनचावतइंद्रकराकरऔर  
 अनेकजहांलगजोई॥भूषनचावतअर्धहीउर्धही  
 तीनहूलोकगिनेंकहाकोई॥सुंदरजाईतहांदुःषही  
 दुःषज्ञानविनानकहूंसुःषहोई॥६॥हेत्रसनांहज  
 हूंनहीधापी॥पेटपसारदीयोजितहीतितनैयहभू  
 षकितीएकथापी॥बोरनछोरकलूनहिआवतमें  
 बहुभांतभलीविधमापी॥दिषतदेहभयेसबजीरन  
 ॥तूनिननौतनआहीअद्यापी॥सुंदरतोहीसदासम  
 जावतहेत्रसनांहजहूंनहीधापी॥७॥हेत्रसनांहज  
 हूनअघांनी॥तीनहूलोकआहारकीयौहेंसुसांतस  
 मुंद्रपीयोसबपांनी॥औरजहांतहांताकतडोलतका  
 ठतआंषडरावतप्रांनी॥दांतदिषावतजीमहलावत  
 याहीतेमेंयहडाकनीजांनी॥सुंदरषातभयेकितनेंदि  
 नहेत्रसनांहजहूनअबांनी॥८॥हेत्रसनांकहूछेहनते  
 रोषावपतालपरेगएनीकससीसगयोअसमानअघे  
 रो॥हाथदसोदिसिकोंपसरेपुंनिपेटभरेनसमुद्रसुमे  
 रो॥तीनहूलोकलीएमुषभीतरआंषिहूकानबंधेचहूं  
 फेरो॥सुंदरदेहधस्यौअतिदीरघहेत्रसनांकहूछेहन

तेरो ॥९॥ हे त्रसनां अब तो कर तोषा ॥ वाद व्रथा भटके  
 नि सिवा सरदूर कीयो कब हून ही धोषा ॥ तूं हतीयार नि  
 पाप नि कोठ नि साच कहुं मत मान हूरोषा ॥ तोई मिलेंत  
 बतें होई बंधन तूं मरि हेत बही होई मोषा ॥ सुंदर और  
 कहा कही ये तुही हे त्रसनां अब तो कर तोषा ॥१०॥ हे त्र  
 सनां अब तो मति डोले क्यौं जग मांही फिरे जष मारत स्वा  
 र्थ को न परिज ही जोले ॥ ज्यौ हरि हार गऊ न हीं मान तदू  
 ध दोहो कछू सो पुन ठोले ॥ तूं अति चंचल हाथ न आ  
 वत नीक सजाई न ही मुःष बोले ॥ सुंदर तोहि कही बेर  
 केतिक हे त्रसनां अब तूं मत डोले ॥११॥ हे त्रसनां क  
 ही के तो ही था क्यौं ते कोई कान धरी न ही एक हू बोलत बो  
 लत पेट ही पाक्यो ॥ हूं कोई बात बनाई कहां जब ते तब  
 पीसत ही सब फाक्यो ॥ केते कद्यो सभ ए पर बोधत ते  
 अब आगे ही को रथ हाक्यो ॥ सुंदर सीष गई सब ही च  
 ली हे त्रसनां कही के तो ही था क्यो ॥१२॥ हे त्रसना तो ही  
 ने कुन लाजा तू ही अमाय प्रदेस पठावत बूडत जाय स  
 मुद्र हिजाजा ॥ तूं ही अमाय पहार चढावत वाद व्रथा म  
 रिजाई अकाजा ॥ ते सब लोक अमाय भली विध भांढ

कीयेसबरकहूंराजा॥ सुंदरतोहीदुषाईकहोंअब  
 हेत्रसनांतोहीनेकुनलाजा॥१३॥ ॥इतित्रछाको  
 अंगसमाप्तः॥ अंग५॥ ॥अथधीर्जउराहने  
 कोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंद्रवजय॥ ॥पावदी  
 येचलनेफिरनेंकहुंहाथदीयेहरिकृत्यकरायो॥कां  
 नदीयेसुनियेहरिकेजस॥नेनदीयोतिनमार्गदिषा  
 यो॥नाकदीयेमुषसोभतताकरिजीभदईहरिको  
 गुनगायो॥सुंदरसाजदियेपमेस्वरपेटदीयोपर  
 पापलगायो॥१॥कूपभरेअरुवावभरेपुनतालभरे  
 वरषारितुतीनो॥कोढीभरेघटमाठभरेघरहाठभरेस  
 बहीभरिलीनो॥षंदकषासबषारभरेपरिपेटभरे  
 नवडोदरदीनो॥सुंदररीतोईरीतोरहेयहकौनषडा  
 परमेस्वरकीनो॥२॥ ॥कवत॥किधोपेटचूलोकि  
 धोभाठिकीधोभारआहीजोईकछूजोकीयेसुसवै  
 जरिजातुहे॥किधोपेटथलकिधोबाविकिधोसाग  
 रहेजितोजलपरेतितोसकलसमातुहे॥किधोपेटदे  
 तकिधोभूतप्रेतराषसहे॥षाऊंषाऊंकरेकछूनेकनअ  
 घातुहे॥सुंदरकहतप्रभुकोनपापलायोपेटजबही

जनमभयोतवहीकोषातुहें॥३॥विग्रहतोविग्रहक  
 रतअतिवारवारतनपुनितनकनकबहूंअघायोहे॥  
 घटनभरतक्योहीघट्योहीरहतनितसरीरसिराईमे  
 तोकबूवनषायोहे॥देहदेहकहतहीकहतजनमवी  
 ल्योपिंडपिंडकाजनिसदिनललचायोहे॥पुदगलग  
 लतगलतनअपतहोई॥सुंदरकहतवपुकोनपापला  
 योहे॥४॥एकपेटकाजएकएककोआधीनहें॥पाजी  
 पेटकाजकोटवालकोआधीनहोई॥कोटवालसोतो  
 सिकदारआगेदीनहें॥सिकदारदीवानकेपीछेलग्यो  
 डोलेपुन॥दीवानहूजायपातसाहआगेदीनहें॥पात  
 साहकहेयाबुदामुजेओरदेईपेटहीपसारेंनहीपेटव  
 सकीनहें॥सुंदरकहतप्रभुभ्योहीनहीभरेंपेट॥अक  
 पेटकाजएकएककोआधीनहें॥५॥तंतोप्रभुपेटदीयो  
 जगतनचायोजिनपेटहीकेलीयेघरघरद्वारफिस्योहे  
 ॥पेटहीकेलीयेहाथजोरीआगेठाढोहोईजाईजोईक  
 द्योसोईसोईऊनकर्योहे॥पेटहीकेलीयेपुनमेंघसीत  
 घामसहेपेटहीकेलीयेजाईरनमांहीमर्योहे॥सुंदरक  
 हतईनपेटसबभांडकीये॥ओरगलेछूटेपरिपेटगेल

पस्योहे॥६॥पेटसोनबलीजाकेआगेसबहारचलेरा  
 वअरुंरंकएकपेटजीतीलीयेहें॥कोऊवाघमारतविडा  
 रतहेंकुंजरकोंअसेसूरवीरपेटकाजप्रानीदीयेहें॥जं  
 त्रमंत्रसाधतआराधतमसानजाईपेटआगेडरतनड  
 रअसेहीयेहें॥देवताअसरभूतप्रेततीनोंलोकपुंनिसुं  
 दरकहतप्रभुपेटजेरकीयेहें॥७॥प्रातहीऊठतजब  
 पेटहीकीचिंतातबसबकोऊजातुआपुआपकेअहार  
 को॥कोउअनधातपुंनिअमिषभषतकोऊकोऊधास  
 चरतचरतकोऊदारकों॥कोऊमोतीफलकोऊवासरस  
 पयपांनकोऊपौंनपीवतपरतपेटभारकों॥सुंदरकह  
 तप्रभुपेटहीअमाएसबपेटतुमेंदीयोहेजगतहोंनघा  
 रकों॥८॥ ॥छंदइंद्रवज्र॥ ॥पेटसोओरनही=  
 कोईपापी॥पेटकेकारनजीवहतेबहुपेटहीमांस  
 षषेरुसरापी॥पेटहीलेकरचोरिकरावत॥पेटही  
 कोंगठरीगहीकापी॥पेटहीपासगरेमहीडारनापेट  
 हूडारतकूपरूवापी॥सुंदरकाहेकोंपेटदीयोप्रभु॥पे  
 टसोओरनहीकोईपापी॥९॥ओरनकोंप्रभुपेटदिये  
 तुम॥तेरेतोपेटकहूंनहीदीसे॥एभटकाईदीयेदस

हूदीस ॥ कोऊकरांधत कोऊकर्पासे ॥ पेटहीकारनना  
 चतहेंसबज्योंधरहीधरनाचतकीसे ॥ सुंदरआपन  
 षावहूपीवहूकोनकरीइनऊपररीसे ॥ १०॥ ॥ छंदमन  
 हर ॥ ॥ पेटनहूतोतोप्रभुबैठेहमरहते ॥ काहेकों  
 काहूकेआगेजायकेआधीनहोई ॥ दीनदिनबचन  
 उचारमुःषकहते ॥ जिनकोंतोमदअरुगर्वगुमान  
 अतितिनकेकठोरबेनकबहूंसहते ॥ तुंमारेइभज  
 नसोंअधिकलैलीनअतिसकलकोंत्यागिकेएकांत  
 जाईगहते ॥ सुंदरकहतयहीतुमहीलगायोपाप ॥  
 पेटनहूतोतोप्रभुबैठेहमरहते ॥ ११॥ पेटहीकेवस  
 प्रभुसकलजिहानहे ॥ पेटहीकेवसरंकपेटहीकेवस  
 रावपेटहीकेवसअोरषानसकलतानहें ॥ पेटहीकेवस  
 जोगीजंगमसन्यासीशेष ॥ पेटहीकेवसवनवासीषा  
 तपानहें ॥ पेटहीकेवससिधसाधकसुजानहें ॥ सुं  
 दरकहतनहीकाहूकोगुमानरह ॥ पेटहीकेवसप्र  
 भुसकलजिहानहें ॥ १२॥ ॥ इतिधीर्जउराहने  
 कोअंगसमाप्तः ॥ ॥ अंग६॥ ॥ छुं ॥ ॥ छुं ॥  
 अथविस्वासकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंद्रवज्र ॥

॥ होई निचिंत करे मत चिंत ही ॥ चांच दई सोई चिंत करे ॥  
 गोपाव पसार परयो किंन सोवत ॥ पेट दीये सोई पेट  
 मरे गो ॥ जीव जिते जल के थल के पुनि पाहन में पहंचा  
 यधरे गो ॥ भूष ही भूष पुकारत हे नर सुंदर तूंक हा भू  
 ष मरे गो ॥ १ ॥ धीरज धारि विचार निरंतर तो हीरच्यो  
 सो ते तें आपु ही अहे ॥ जेतक भूष लगी घट प्रांन हि ॥ तिति  
 कतूं अनयास ही पै हे ॥ जो मन मे न सनो करि ध्यावत तो  
 तिहं लोक न पात अघै हे ॥ सुंदर तूं मत सोच करे कछू ॥  
 चंच दई जिंन चूंन ही दई हे ॥ २ ॥ नेकुन धीरज धारत हे  
 नर आपु होई दसो दिस ध्यावे ॥ ज्यो पक्षे च तो डाव  
 त बंधन ज्यो लगिनी रनीर अहार न आवे ॥ जानत नाही  
 महामती सुरष जाघर द्वार धनी पहंचावे ॥ सुंदर आप  
 कीयो घट भांजन सो भरि हे मत सोच उपावे ॥ ३ ॥ भांज  
 न आप घडे जितने भरि हे भरि हे भरि हे भरि हे जु ॥ गाव  
 त हे जिन के गुन कोठ रि हे ठ रि हे ठ रि हे ठ रि हे जु ॥ आदि  
 हू अंत हू मध्य सदा हरि हे ह रि हे ह रि हे ह रि हे जु ॥ सुंदर  
 दास सहाय राही करि हे करि हे करि हे करि हे जु ॥ ४ ॥ का  
 हे कोंदोर त हे दस हू दिस तूनर देषि कीयो हरिजू को ॥ बे



ठिरहेदुरिकेमुषसूँदिउधारतदांतषवाईहेटूको॥ग  
 र्भथकेप्रतिपालकरिजिनहोईरह्यौतबहीजबहीजड  
 मूको॥सुंदरक्योंविललातफिरेअबराषरिदेविसवास  
 प्रभूको॥५॥जादिनतेअभवासतज्यौनरआईआहार  
 लीयोतबहीको॥षातहीषातभएइतेनंदिनजानतना  
 हीनभूलुकहीको॥दोरतध्यावतपेटदिषावततूंसठ  
 कीटसदाअनहीको॥सुंदरक्योंविसवासनराषतसो  
 प्रभुविस्वभरेकबहीको॥६॥षेचरभूचरजेजलकेच  
 रदेतअहारचराचरपोषें॥वेहरिजुसबकोप्रतिपा  
 लतज्योंजिहिभांति तिसीविधतोषें॥तूंअबक्योंवि  
 सवासनराषतभूलतहेकितधोषेहिधोषे॥तोहितहां  
 पहुंचायरहेप्रभुसुंदरबेटिरहेंकिंनओषें॥७॥छं  
 दमनहर॥॥काहेकोंबधूराभयोफिरतअज्ञानीनर  
 तेरोतोरिजकेतेरेघरबेठेआयहें॥भावेतुस्फमेरजाई  
 भावेंजाईमारुदेस॥जितनोंकभागलिष्योतितनोंक  
 पाईहें॥कूपमांऊभरिभावेंसागरकेतीरभरिजितनोंक  
 भाडोनीरतितनोंसमाईहें॥ताहीतेंसंतोषकरिसुंदर  
 विस्वासधरीजितनोरच्यौहेघटसोईअमराईहें॥८॥का

हीकोंफिरतनरदीनभयोघरघरदेधीयततेरोतोअ  
हारइकसेरहे॥जाकोदेहसागरमेंसुमोसतजोजन  
कोताहूकोंतोदेतप्रभुयामेनहीफेरहे॥भूष्योकोऊर  
हतनजांनीयेजगतमांहीकीरीअरुकुंजरसबनिही  
कोदेरहे॥सुंदरकहतविसवासक्यैंनरांवेसठवार  
वारसमुजायकह्योकेतीवेरहे॥९॥तिरेतोअधीरज  
तूंआगलीहिचिंतकरें॥आजतोभरखौहेपेटकालके  
सीहोईहें॥भूषोईपुकारेंअरुदिनउठिषानेजाई॥अ  
तिहीअज्ञांनीजाकीमतिगईषोईहें॥ताकोंनहीजाने  
सठजाकोनामविस्वभरजहांतहांप्रगटंसबनिदेत  
सोईहें॥सुंदरकहततोहीवाकोतोभरोसोनहीएक  
विसवासविनयाहीभांतिरोईहें॥१०॥दिषधोसकल  
विस्वभरतभरनहार॥चूंचकेसमानचूनसबहीकोंदे  
तहें॥कीटपक्षपंथीअजगरमछकछपुनउनकेन  
सोदाकोऊनतोकलूषेतहें॥पेटहीकेकाजरातदिवस  
भ्रमतसठमेतोजान्योनीकेकरीतुंतोकोउपेतहें॥मा  
नुषसरीरपायकरतहेंहायहायसुंदरकहतनरतेरे  
सिररेतहें॥११॥तूंतोभयोबावरोउतावरोफिरतअ

तिप्रभुकोविस्वासगहीकाहेनरहतुहें॥तेरेतोरिजक  
 हैंसोआईहेंसहजमांही॥योंहीचिंताकरिकरिदेह  
 कोदहतुहें॥जिनयहनषसिषसजिकेसंवास्थोहेतो  
 हीअपनेकीयेकीवहलाजकोंवहतुहें॥काहेकोअ  
 ज्ञानीकलूसोचमनमांहीकरेंभूषोतूंकदेनरहेंसुंदरक  
 हतुहें॥१२॥जगतमेंआईकेंविसाखोहेजगतपतिज  
 गतकीयोहेसोईजगतभरतुहें॥तेरेनिसदिनचिंता  
 ओरहीपरिहेआईउद्यमअनेकभांतीभांतीकेकरतु  
 हैं॥इतउतजायकेंकमाईकरिल्याऊंकछूनेकुनअज्ञां  
 नीनरधीरजधरतुहें॥सुंदरकहतएकप्रभुकेविस्वा  
 सबिनंवादहीकोंव्रथासठपचिकेंमरतुहें॥१३॥ ॥इ  
 तिविस्वासकोअंगसमाप्तः॥अंग७॥ ॥धृ॥ ॥धृ॥  
 ॥अथदेहमलीनताग्रवप्रहारकोअंगप्रारंभः॥  
 देहतोमलीनअतिबहुतविकारभरिताहूमांहीजरा  
 व्याधिसबदुःषरासीहैं॥कबहुकपेटपीरकबहुंकसि  
 रवायकबहुकआंषकांनमुःषमेंविथासीहैं॥ओर  
 हूअनेकरोगनषशिषपूररहेंकबहुकस्वासचलेंक  
 बहूंकषासीहैं॥असोयाशरीरताहीआपनोंकेमान

तहें ॥ सुंदर कहत या में कोन सुख वासी हैं ॥ १ ॥ जाश  
रीर मांही तूं अनेक सुख मान रह्यौ ॥ ताही तूं विचार या  
में कोन यात मली हैं ॥ भेद मंजा मांस रगरग में रगत म  
स्यो पेट हू पितारी सी में ठोर ठोर मली हैं ॥ हाड निसों म  
स्यो मुःष हाड निकेने न नाक हाथ पाव सो उस बहाडनी  
की नली हैं ॥ सुंदर कहत या ही देखी जिन मूले कोई भीत  
र भिं गार भरी ऊपर तो कली हैं ॥ २ ॥ ॥ छंद इंदु वजय  
॥ ॥ हाड को पिंजर चाम मढ्यौ सब मांही भर्यौ मल मु  
त्र विकारा ॥ थूकर लाल परें मुःष तें पुं नी व्याधी वहें स  
ब ओर हू द्वारा ॥ मांस की जीभ सों पाय सबे कछू ताही  
तें ता को हें कोन विचारा ॥ असे सरीर में पै सिके सुंदर  
के से के की जीयें सौ च अचारा ॥ ३ ॥ काहे को तूं नर चाल  
त ढेढो थूकर लाल मस्यो मुष दी सत आषि मेगी डरना  
क में सेढो ॥ ओर उ द्वार मली न रहें अति हाड के मांस के  
भीतर बेढो ॥ असे सरीर में वास कियो तब ऐक से दी  
सत ब्राह्मन ढेढो ॥ सुंदर गर्व कहाइ तने पर काहे को तूं  
नर चाल त ढेढो ॥ ४ ॥ आपुनी आदी विचार तनां ही  
जादि नगर्भी संजोग भयो जब ता दिन बूंद छियाहूनी

ताही॥ द्वादसमासअधोमुःषऊलतबूडरह्योपुनिवा  
 रसभांही॥ तारजबीरजकीयहदेहतुंतोअबचालतदे  
 षतछांही॥ सुंदरगर्वगुमानकहासठआपुनीआदी  
 विचारतनांही॥ ५॥ ॥ इतिदेहमलीनताग्रवप्रहार  
 कोअंगसमाप्तः॥ अंग८॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥  
 अथनारीनिंद्याकोअंगप्रारंभः॥ ॥ छंदमनहर॥  
 कामनिकोतनमानोकहीयेसघनवनऊहांकोऊजाये=  
 सोतोभूलेहिपरतुहें॥ कुंजरहंगातिकटिकेहरिकोभय  
 जामेबेनीकालीनागनीऊफनिकोंधरतुहें॥ कुचहेंपहा  
 रजहांकामचोररहेंतहांसाधिकेकटाक्षबांनप्रानकोह  
 रतुहें॥ सुंदरकहतएकओरडरजांमेअतिराक्षसीव  
 दनषांउषांउहीकरतुहें॥ १॥ विषहीकीमोंमीमांहीविष  
 केअंकुरभएनारीविषवेलिबढीनषसिषदेषीये॥ वि  
 षहीकेजरभूलविषहीकेडारपातविषहीकेफूलफल  
 लागेजबिसेषीये॥ विषकेतंतुपसारउरऊईआंटी  
 मारसबनरब्रषपरलपटहीलेषीये॥ सुंदरकहत=  
 कोऊसंततरुवचिगयौतिनकेतोकहूंलतालागीनही  
 पेषीये॥ २॥ उदरमेंनरकनरकअधद्वारनिमेंकुचनि

मेंनरकनरकभरिछातीहैं॥कंठमेंनरकगालचिंबुक  
 नरकबिंबसुःषमेंनरकजीभलालहूचुचातीहैं॥नाक  
 मेंनरकआंषकांनमेंनरकवहेंहाथपावनवशिषनर  
 कदिषातीहैं॥सुंदरकहतनारीनरककोकुंडयहनर  
 कमेंजाईपरेसोतोनरकपातीहैं॥३॥कामनिकेअंग  
 अतिमलिनमहांअसुद्धरोमरोममलिनमलीनसब  
 द्वारहैं॥हाडमांसमंजामेदचामसोलंपेटराषें॥ठोरठो  
 ररक्तकेभरेईभंडारहैं॥सुत्रऊपुरीषआंतएकमेक  
 मिलीरही॥ओरहीउदरमांहीविवधविकारहैं॥सुंद  
 रकहतनारीनषसिषनिंदारूपताहीजेसराहेंसोतोव  
 डोईगेवारहैं॥४॥ ॥छंदकुंडलीया॥ ॥रसिकप्रि  
 यारसमंजरीओरसिंगारहीजान॥चतुराईकरिबहू  
 तविधिविषेबनाईआन॥विषेबनाईआन॥लगत  
 विषयनिकोंप्यारीजागेमदनप्रचंडसराहें॥नषसिष  
 नारीज्यौंरोगीमिष्टानषाईरोगहीविस्तारें॥सुंदरये  
 गतिहोईजोरसिकप्रीयाधारे॥५॥रसिकप्रियाकैस  
 नतहीउपजेंबहूतविकार॥तोयामांहीचिंतधरेवहें  
 होतनरधार॥वहेहोतनरधार॥वारतोकबूवनलागे

सनतविषयकीबात॥ लहरविषहीकीजागेंज्योंको  
 उऊंध्योहतो॥ लेईपुनिसेजबिछाई॥ सुंदरएसीजानसु  
 नतरसिकप्रयाभाई॥ ६॥ ॥ इतिनारीनिंदाकोअं  
 गसमाप्तः॥ अंग ९॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥  
 ॥ अथदुष्टजनकोअंगप्रारंभः॥ ॥ छंदमनहर॥  
 अपनेनदोषदेषंपरकेअगुनपेषेतुष्टकोस्वभावउठि  
 निंदाईकरतुहे॥ जेसेंकोईमहलसंवारीराख्येनीकैक  
 रीकिरीततहांजाईछिद्रतुंढतफिरतुहे॥ भोरहीतेंसां  
 जलगसांजहीतेंभोरलगसुंदरकहतदिनअसेंहीभर  
 तुहे॥ पावकेतरेकीनहींसूजेआगभूरषकोंओरसों  
 कहततेरेसिरपेंबरतुहे॥ १॥ ॥ छंदइंद्रवज्र॥ ॥ घा  
 तअनेकरहेंऊरअंतरदुष्टकहेसुषसोंअतिमीठी॥  
 लोटतपोटतव्याघ्रहीज्योंनितताकतहेपुनताहीकी  
 पीठी॥ उपरतेंछिरकेजलआनसहेठलगावतजा  
 रिअगीठी॥ यामहीकूरकलूमतिजानहूसुंदरआप  
 निआंघिनीदीठी॥ २॥ दुष्टकरेनहींकोंनबुराईआप  
 नेंकाजसंवारेनकेहितओरकोंकाजबिगारतआई  
 ॥ आपनोंकारजहोऊनहोऊबुरोकरओरकोडारत

भाई । आपहूषोवत और हूषोवत षोयदुनो घर देत  
 बहाई ॥ सुंदर देषत ही बनी आवत दुष्ट करे न ही कोन  
 पु ॥ ३ ॥ ज्यों नर पोषत हें निज देह ही अनविनासक  
 र तहि वारा ॥ ज्यों अही और मनुष्य ही काटत वाही कछू  
 न ही होत अहारा ॥ ज्यों पुनि पावक जारि सबे कछू आ  
 पाहना समये ॥ रधारा ॥ त्यों यह सुंदर दुष्ट स्वभाव हू  
 ज तजो ॥ कन । निप्रकारा ॥ ४ ॥ दुर्जन संग भलो जिन  
 नों सर्प डसे सुं न ही कछू ताल कवी छू डर जोग जमार  
 त तो न ही हाने ॥ आग जरो जल बूडि मरो गिरी जाई गि  
 रो कछू मै मत आने ॥ सुंदर और भले सब ही यह दुर्ज  
 न संग भले जिन जनों ॥ ५ ॥ ॥ इति दुष्ट जन कौ अंग  
 समाप्तः ॥ अंग १० ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥  
 अथ मन को अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद मन हर ॥  
 टकि हटकि मन राषत ज्यों छिन छिन सटकि सटकी च  
 हूं बोर अब जात हें ॥ लटकि लटकि ललचाय लोलवा  
 रवार गटकि गटकि करि विष फल पात हें ॥ फटकि फ  
 टकि तार तोरत कर महीन ॥ ॥ क ॥ ॥ छु ॥  
 न अघात हें ॥ पटकि पटकि सिर सुंदर जु मां नीहारी



फिटकिफिटकिजाईसधौकोनवातहें॥१॥मनकीप्रती  
 तकोउकरेसोदिवानोहेपलहीमेंमरिजायपलहीमेंजी  
 वतुहे॥पलहीमेपरहाथदेषतबिकांनोहेपलहीमेंफि  
 रेनवषंडहुंब्रह्मंडसबदेव्योअनदेव्योसोतोयातेनही  
 छानोहे॥जातोनहींजांनीयतआवतोनदीसेकछूऐ  
 सीसीबलाईअवतामोंपस्यौपांनोहे॥सुंदरकहतया  
 कीगतीहूनलषीपरेमनकीप्रतीतकोउकरेसुदिवानो  
 हो॥२॥मनकोस्वभावकछूकह्योनपरतुहेधेरीयेंतोये  
 रयोहूनआवतहेंमेरोपूतजोईपरबोधीएसकाननधर  
 तुहे॥नीतीनअनीतीदेषेंसुभनअसुभपेपेपलहीमें  
 होतीअनहोतीहूकरतुहे॥गुरूकीनसाधुकीनलो  
 कवेदहूकीसंककाहूकीनमनेंतोकाहूतेंडरतुहे॥सुं  
 दरकहतताहीधीजीयेंसुकोनभांतीमनकोस्वभाव  
 कछूककह्योनपरतुहे॥३॥मनसोनकोऊहमदेव्योअ  
 पराधीहेकामजबजागेतबगिनतनकोउसंकजानेस  
 बजोईकरिदेषतनमाधीहे॥क्रोधजबजागेतबनेकन  
 संभारसकेएसीविधीमूलकीअविद्याजिनसाधीहे  
 ॥लोभजबजागेतबनपतिनक्योंहीहोईसुंदरकहत



नस्वच्छंदहे॥ तापसऋषीस्वरसकलपनिगयो॥ का  
 हूकेन आवे हाथ असे सोया पे बंद हे॥ सुंदर कहत अब  
 कौन विधि धिजेता ही मन सोन को ज्या जगत न च त हे  
 रंक कौन चावे अमिळाष धन पाय बे की निस दिन सोच  
 करि असे ही पचत हे॥ राजा ही न चावे सब भोमी ही को  
 राज लेवे ओर उन चावे जोई देह सो र च त हे देवता असु  
 र सिद्ध पन्नग सकल लोक कीट प्रसू पंछी कहू के से के व  
 च त हे॥ सुंदर कहत काहू संत की कही न जाई मन के न  
 चाएस बजगत न च त हे॥ ८॥ ॥ छंद डूँड व जय॥  
 केतक द्यौस भएस मुजावत ने कन मानत हे मन मोंदु॥  
 भूल रह्यो विषयासः प्रमेक लू ओर न जानत हे सठ दो  
 दु॥ आंषिन कानन नाक विना सिर हाथ न पावन ही सु  
 ष पोंदु॥ सुंदर ताही गहे कोऊ क्यों करि न कर जाई बडो  
 मन लोडू॥ ९॥ दोरत हे दस हूंदिस को सठ वायु लुग्यौ त  
 बते भयो बंडा॥ लाजन कान कछून ही राषत सील स्व  
 भाव की फोरत भंडा॥ सुंदर सीष कहा कहि दिजीये  
 ॥ भेदे न ही बांन छेदे न ही गंडा॥ लाल चलागर ह्यो म  
 न वीषर बारे ही वाट अठारहि पंडा॥ १०॥ स्वान कहू के

शृंगालकहूं कि विडालकहूं मन की मति ते सी ॥ ठिठक  
 हूं कि धोंडूं मकहों कि धोंभांडकहूं के भंडाई दे जे सी ॥ चो  
 रकहूं वटपारकहूं ठगजारकहूं उपमाकहूं के सी ॥ सुंद  
 र और कहा कहियें अब या मन की गत दीसत ए सी ॥ ११  
 ॥ कैवेरतुं मन रंक भयो सठ मांगत भीषद सो दिस डू ल्यो  
 के वेरतुं अंधखो सिर काम निसंग हिडोर न डू ल्यो  
 ॥ कैवेरतुं मन छीत भयो अति कैवेरतुं स्फषपाई के फू ल्यो  
 ॥ सुंदर कैवेर तोहि कह्यो मन को न गली केही मरग भू ल्यो  
 ॥ १२ ॥ इंद्र निके सःष चाहत हें मन लाल चला गिअ में स  
 ० यों ही ॥ दिषी मरी बिभस्यो जल पूरन धावत हें मृग मू  
 ल्यों ही ॥ प्रेत पिसाच निसाचर डोलत भूष मरे न ही ॥  
 ५ तव्ये ॥ १३ ॥ तूं मन क्यौं न ही आप संधारे द्वै सब  
 को ॥ रताज ॥ १४ ॥ ज्यौ ॥ मे अंतर शान निचारे  
 ज्यौ कलू और विषे स्फष वंछत तो यह देह अमोल क  
 होरे ॥ १५ ॥ कुषय भजे भगवंत ही आपत रे पुनि और  
 हीतारे ॥ सुंदर तोहि कह्यो कितनी वेरतूं मन क्यौं न ही  
 आप संधारे ॥ १६ ॥ रिमन तूं भ्रम बो किन छांडे को न स्व

भावपरयोउठिदोरत॥अमृतछां डिचचोरतहाडे  
 ज्यौंभ्रमकीहथनिद्रगदेषत॥आतुरहोईपरेगज  
 षाडे, वादब्रथाभटकेनिसवासरएकहूसीषलगी  
 हीरांडे॥सुंदरतोहिसदा ॐ नमो भगवते  
 कीनछांडे॥१५॥जोमननारीनिबोनिहारततोमन  
 होतहेताहीकोरूपा॥जोमनकाहूसोंक्रोधकरेजब  
 क्रोधइहोयजाईतदरूपा॥जोमनमायाहीमाया  
 देनिततोमनबूडतमायाकेरूपा॥सुंदरजोमन  
 ह्यविचारततोमनहोतहेंब्रह्मस्वरूपा॥१६॥ ॥  
 दमनहर॥ ॥कबहूकहसउठेकबहूकरोईदेत  
 बहूबकतकहूंअंतहूनलहियें॥कबहूकषाईतो  
 अधातनहीकाहूकरिकबहूंककहेमेरेकछूनहीं  
 हीये॥कबहूआकासजाईकबहूपातालजाईर  
 दरकहतताहीकेसेंकरीगहीयें॥कबहूकआयत  
 गेकबहूउतरभागेंभूतकेसेचिन्नकरेअसोमन  
 हीयें॥१७॥कबहूतोपांषकोपरेवाकेदिषावेम  
 कबहूंकधूरकेचावरकरिलेतहें॥कबहूतोगोवि



कपनहे॥ पापमाने पुन्यमाने उत्तम मध्यम माने नीचमा  
 ने ऊंचमाने माने मेरोतनहे॥ स्वर्गमाने नर्कमाने बंधन  
 माने मोक्षमाने सुंदर सकल माने ताते नाम मनहे॥ २१  
 ॥ जोई जोई देखे कलूसोई सोई मन आही॥ जोई जोई  
 रूने सोई मन ही को भर्महे॥ जोई जोई सूपे जोई षाई  
 जो स्पर्स होई जोई जोई करे सोई मन ही को कर्महे॥ जो  
 ई जोई ग्रहे जोई त्यागे जो अनुरागे जहां जहां जाई सोई  
 मन ही को भ्रमहे॥ जोई जोई कहें सोई सकल सुंदर म  
 न जोई जोई कल्पे सोई मन ही को धर्महे॥ २२॥ एक ही  
 विठपविस्वज्यो को लोही देषीयत अति ही सघनता के  
 पत्र फल फूल हैं॥ आगले ऊरत पातन एन ए होत जा  
 त असे या ही तरु को अनादी काल मूल हैं॥ दस चार  
 लोक लोप सरित् हो जहां तहां अरध उरध पुनि सुक्ष्म  
 रूस्थूल हैं॥ कोउ तो कहत सत कोउ तो कहें असत्य सुं  
 दर कहत भर्म ही को मन मूल हैं॥ २३॥ तो सोन कपूत  
 कोउ कीत हून देषीयत तो सोन सपूत कोउ देषीयत  
 ओरहे॥ तूही आप भूले महानी चहते नीच होई तूही  
 आप जनि तो सकल सिर मोरहे॥ तूही आप भ्रमे त

बजगतभ्रमतदेषेतेरेस्थिरभयेसबठोरहीकोठोरहे  
 ॥ तूंहीजीवरूपतुंहीब्रह्महेआकासवतसुंदरकहत  
 मनतेरीसबदोरहे ॥ २४ ॥ मनहीकेभ्रमतेजगतयह  
 देखायतमनहीकोभ्रमगाएजगतविलातहे ॥ मनही  
 केभ्रमजेवरीमेंउपजतसापमनकेविचारेसापजे  
 वरीसमातहे ॥ मनहीकेभ्रमतेमरीचिकाकेजलक  
 हेमनहीकेभ्रमसीपरूपोसोदिघातहे ॥ सुंदरसकल  
 यहदीसेमनहीकोभ्रममनहीकोभ्रमगाएब्रह्महो  
 ईजातहे ॥ २५ ॥ मनहीजगतरूपहोईकरिविस्तारयो  
 मनहीअलषरूपजगतसोन्यारोहे ॥ मनहीसकल  
 घटव्यापकअखंडएकमनहीसकलयहजगतपि  
 यारोहें ॥ मनहीआकासवतहाथनपरतकलूमन  
 केनरूपरेषब्रधहीनवारोहें ॥ सुंदरकहतपरमार्थ  
 विचारेजबमनमिटीजाईएकब्रह्मनिजसारोहे ॥  
 २६ ॥ ॥ इतिमनकोअंगसमाप्तः ॥ अंग११ ॥ ॥ छु ॥  
 अथचाणककोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमनहरा ॥  
 ॥ जोईजोईछूटवेकोकरतउपायअग्यसोइसोइद्रु  
 करिवंधनपरतुहें ॥ जोगजज्ञपतपतीर्थव्रतादीओ



रुं पाया तले तजार्ई हीमाले गरतु हैं ॥ कांन हू फराई पुं  
नी के स हू लुचाई अंग विभूति लगाई सिरज वा ऊ धरतु  
हैं ॥ विना ज्ञान पाए न ही छूटत हृदय ग्रंथी सुंदर कहत-  
यों ही भ्रमी के मरतु हैं ॥ १ ॥ ॥ सर्वल गु अक्षर ॥ ॥

तप जप करत धरत व्रत जत सत मन बचक्रम भ्रम कष्ट स  
हत तन ॥ बल कलष सन असन फल पत्र जल कस तर  
सन रस तजत वसत वन ॥ जरत मरत नर गरत परत स  
र कहत लहत हय गज दल बल धन ॥ पचत पचत भव  
भय न दरत सट घट घट भगटर हत न लषत जन ॥ २ ॥  
जोग करे जाग करे वेद विधिल्याग करे जप करे तप करे  
यों ही आयुषूटी हैं ॥ जप करे नेम करे तीरथ ऊ व्रत करे  
पुहमी अटन करे व्रथा स्वासतु दिहें ॥ जीवे को जतन क  
रे मन में वासना धरे पची पची यों हिमरे काल सिरषूटी हैं  
॥ ओर ऊ अनेक विधिको टिक उपाय करे सुंदर कहत  
विन ज्ञान न ही छूटी हैं ॥ ३ ॥ बुधी करि हीन नर रजत स  
छाय रह्यो बन बन फिरत उदास होई घर ते ॥ कठन तप  
स्या धरी मेघ सीत धाम सहै कंद मूल धाई को ऊ कामना  
के डर ते ॥ अति ही अज्ञान ओर विविध उपाय करे नि

जस्तुपभूलिकेबंधतजार्ईपरते॥ सुंदरकहतउंबीवो  
रकेसेंदीषेसुःषहाथमाहीआरसीनफेरेमूढकरते॥  
४॥ मेघसहेसीतसहेसीसपरघांससहेंकठिनतपस्या  
करिकंदमूलयातहे॥ जोगकरेजागकरेतीर्थऊब्रतक  
रेपुंन्यनानाविधकरेमनमेंसहातहे॥ औरदेवीदेवता  
उपासनाअनेककरेआंबनिकीहोंसकेसेंआकडोडेजा  
तहे॥ सुंदरकहतएकरविकेप्रकासविजुंजंगनाकी=  
जोतीकहारजनिविलातहे॥ ५॥ देषोभाईआंधरेनें=  
ज्योंबजारतूथ्योहे॥ कोईफिरेनागेपायगुदरीबनाय  
करीदेहकीदिसादिषाईआईलोकधूत्योहे॥ कोईदुधा  
हारीकोईफलाहारीतोईकोईअधोमुःषग्लेळूळि  
धूंमधूत्योहे॥ कोईनहीषायलोंनकोईमुःषगहेमों  
नसुंदरकहतयोंहीब्रथाभूसकूत्योहेप्रभुसोंतोप्री  
तिनाहिंज्ञानसोंपरचेनाहीदेषोभाईआंधरानेंज्यों  
बाजारतूथ्योहे॥ ६॥ ॥ छंदइंद्रवजय॥ ॥ आसं  
नमारीसंवारीजटानषउज्वलअंगविभूतिचढाई॥  
याहमकोंकछूदेहिदयाकरिघेरीरहेबहूलोगलुगा  
ई॥ कोउकउत्तमभोजनल्यावतकोईकल्यावतपान

मिठाई ॥ सुंदरलेकरिजातभयोसबमूर्षलोकनिया  
 सिद्धपाई ॥ ७ ॥ ऊर्धपायअधोमुषद्वैकरीघूटतधुंम  
 हीदेहजूलावे ॥ मेघहूसीतहूघांससहेसिरतीनहू-  
 कालमहादुःषपावे ॥ हाथकछूनपरेकबहूकनमूर्ष  
 कूकसकूटिउडावे ॥ सुंदरवंछेसबसःपकोंधरबूड  
 तहंअरुजांऊगागावे ॥ ८ ॥ ग्रेहतज्यौअरुनेहतज्यौ  
 पुंनीषेहलगाईकैदेहसंवारी ॥ मेघसहेसिरसीतस  
 हेतनुधूपसमेजुपंचागनिवारी ॥ भूषसहेरहीसुं  
 षतरेपरसुंदरदाससहेदुःषभारी ॥ डारसनछांडि  
 केकासनउपरआसनमारथोपेंआसनमारी ॥ ९ ॥  
 जोकोऊकष्टकरेबहुभातिनीजातअज्ञाननहींमनके  
 रो ॥ ज्यौंतमपूरीरह्यौधरभीतरकेसेंहूंदूरनहोयअं  
 धेरो ॥ लाठिनिमारीयेठेलिनिकारीयेंओरउपायक  
 रेबहूतेरो ॥ सुंदरसूरप्रकासभयोतबतोकितहून  
 हीदिषायेंनेरो ॥ १० ॥ धारबह्यौषडधारीरह्यौजलधार  
 सह्यौगिरधारग्रह्यौहैं ॥ भारसंच्यौधनभारथमेंकर  
 भारलह्यौगिरभारपख्यौहैं ॥ भारतव्योषहीभारग  
 योजममारदर्इमनतो नमख्यौहैं ॥ सारतज्यौषुटसार

पखो कहि सुंदर कारज कोन सख्यो है ॥११॥ कोउ मया  
 पय पान करे नित कोउ कथा तहें अन्न अलोंना ॥ कोई  
 ककष्ट करे निसवां स्मर कोई कवेटी के साध तपोना ॥  
 कोई कवाद विवाद करे अति कोउ कधारी रहें सुःषमों  
 ना ॥ सुंदर एक अज्ञान गए बिनु सिध मये नही दीस  
 तकाना ॥१२॥ कोई कअंग विभूति लगावत कोउ कहो  
 तनि गट दिगंबर ॥ कोउ कसेत कषाय कवोढत कोऊ  
 ककाथरंगे बहु अंबर ॥ कोउ कवन कलसी सजटानष  
 कोउ कवोढत हैं जुवांघांवर ॥ सुंदर एक अज्ञान गए बि  
 नएसब दीसत आही अडंबर ॥१३॥ ॥ छंद मनहर ॥  
 आपही के घट मांही प्रगट पभे स्वर हेत ई छोडी मूलें  
 नर दूर दूर जात हैं ॥ कोई दोरें द्वारिकां कों कोई कासि जग  
 नाथ के ई दोरें मथुरा कों हरि द्वार नात हैं ॥ के ई दोरें बंद  
 री कों विषमहार चढें के ई तो केदार जात मन में सी हात  
 हैं ॥ सुंदर कहत गुरु देव दे ई दिव्य नेन दूर ही के दूर विन  
 निकट दिषात हैं ॥१४॥ ॥ छंद इंद्र वजय ॥ ॥ कोई  
 कजात प्रयाग बनारसी कोई गया जगं नाथ ही धावे ॥  
 कोई मथुरा बदरी हरि द्वार सक कोई गंगा कुरुषेत्र नाहा

वे॥ कोऊकपुष्करद्वैपंचतीर्थदोरेईदोरेजुझारिकाआ  
 वे॥ सुंदरवितगड्यौघरमांहीसुबाहिरदुंदुतक्योंक  
 रिपाविं॥ १५॥ छांडिभएनरभांडकेदोनांआगेकछून  
 हीहाथपस्थोपुंनपिछेबिगारिगयोनिजभोंना॥ ज्यों  
 कोईककामनीतमारिचलीसंगओरहीदेवीसलोंना॥  
 सोउगयोतजिकेंततकालकालकहेनबनेजुरहीमुःष  
 मोना॥ तेसेंहीसुंदरज्ञानविलासबछांडभएनरभांड  
 केदोंना॥ १६॥ ज्योंकोऊकोसकल्यौनहीमारगतेलक  
 लेघरमेंपसजोए॥ ज्योंबनीयागयौबीसकेतीसको  
 बीसहूमेंदसहूनहीहोई॥ ज्योंकोऊचौबेछवेकोच  
 ल्यौपुंनीहोईदुबेदुईगांठकेषोये॥ तेसेंहीसुंदरओ  
 रक्रीयासबरामबिनानिश्चैनररोए॥ १७॥ ज्योंकोउ  
 रामबिनानरसूरषओरनिकेगुनजीभभनेंगी॥ आ  
 नक्रियागढकेगडवापुंनीहोतहेभैरकछूनवएंगी॥  
 ज्योंहथफेरीदिषावतचावरअंततोधूरीकीधूरिछि  
 नेंगी॥ सुंदरभूलभईअतसेंकरिसूतेकीभेसपाडा  
 ईजनेगी॥ १८॥ होईउदासविचारबिनानरग्रेहतज्यों  
 वनजाईरह्योहैं॥ अंबरछांडिवधंबरलेकरिकेतप

कोतनकष्टसह्योहें॥आसनमारिसुआसनद्वैमुखमें  
नगहीमनतो नग्रह्योहें॥सुंदरकोंनकुबधिलगीकही  
याभवसागरमांहीबह्योहें॥१९॥भेषधस्योपरिभेदनं  
जानतभेदलहेबिनुषेदहीपैहें॥भूषहीमारतनिंदनि  
वारितअन्नतजेंफलपन्ननपैहें॥ओरउपायअनेकक  
रेंपुनीताहीतेहाथकछूनहीऐहें॥यानरदेहव्रथासठ  
षोवतसुंदररामविनापछतैहें॥२०॥आपनेंआपनेंथा  
नमुकामसरांहनकोंसबभांतिभलीहें॥यज्ञव्रतादी  
कतीर्थदानपुरानकथाजुअनेकचलीहें॥कोटिकओ  
रउपायजहांलगतैसुनीकेनरबुझिल्लीहें॥सुंदर  
ज्ञानविनानकहूंसुषभूलनकीबहुभांतिगलीहें॥२१  
॥कोउकचाहतपुत्रधनादिककोउकचाहतबांजना  
यो॥कोउकचाहतधातुरसादिककोउकचाहतपारं  
देषायो॥कोउकचाहतजंत्रनिमंत्रनिकोउकचाहतरो  
गगमायो॥सुंदररामविनासबहीभ्रमदेखहुया  
जगयोंडहकायो॥२२॥काहेकोंतूनरभेषवनावतका  
हेकुंतूंदसहृदिसडूले॥काहेकोंतूंतनकष्टकरेअति  
काहेकोंतूंमुषतेंकहीफूले॥काहेकोंओरउपायक

रे अब आनक्रीया कर के मत भूले ॥ सुंदर एक भजे भ  
 गवत ही तो सुषसागर में नित झूले ॥ २३ ॥ ॥ इति चा  
 णक को अंग समाप्तः ॥ अंग १२ ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥  
 अथ विप्रीत ज्ञान को अंग प्रारंभः ॥ ॥ सुंदर मन हर ॥  
 एक ब्रह्म मुष सो बनाय करि कहत हैं ॥ अंतःकरण तो  
 विकारन सो भरयो है ॥ जे से ठग गोबर को कूपो भरि रा  
 षत हैं सेर पंचग्रत ले के ऊपर ज्यौ कस्यो है ॥ जे से कोई  
 भाड़े माही प्याज को छिपाय रावे चीथरा कपूर को ले मु  
 ष बांधि धर्यो है ॥ सुंदर कहत ऐसे ज्ञानी हैं जगत मां  
 ही तीन को तो दोषी करि मेरो मन डर्यो है ॥ १ ॥ देह सो म  
 मत्व पुनी ग्रेह सो ममत्व सुत दारा सो ममत्व मन मा  
 यामे रहतु हैं ॥ थिर तान लहे जे से कंदुक चोगान मां  
 ही कर्म निकैव समाख्यौ धका को वहतु है ॥ अंतःकर  
 न सदा जगत सो रचि रह्यो मुःष से बनाय बात ब्रह्म की  
 कहतु है ॥ सुंदर अधिक मोहीया ही ते अचंभो आही  
 भुमी परि पखो को उचंद को गहतु है ॥ २ ॥ मुःष सौ क  
 हत ज्ञान भ्रमे मन इंद्रि प्राण मार्ग के जल में प्रति बि  
 बल हीया गांठि में न पैसा को उभयो रहें सा उकार वा

तनिमेंसहररूपैयागनिलहीयें॥सपनेमेंपंचामृत  
जीमकेंत्रपतिभयोजागेतेमरतभूषणार्द्धबेकोंचही  
यें॥सुंदरसभटजेसेंकायरभारतगालराजाभोजस  
मकहांगांगेतेलीकहीये॥३॥संसारकेसुखनिसोंआ  
सक्तअनेकअनेकविधिइंद्रिहूलोपसनकबहूनग  
योहे॥कहतहेंअसेंमेतोएकब्रह्मजानतहोताहीते-  
छोडीकेंसुभकर्मनकोंरह्योहे॥ब्रह्मकीनप्राप्तिपुनिक  
र्मसबछूटगयेंदोउनतेभ्रष्टहोईअधबिचबह्योहे॥  
सुंदरकहतताहीत्यागीयेंस्वपचजेसेंयाहिभांतिग्रंथ  
मेवशिष्टजीहूकह्योहे॥४॥ज्ञानीकीसीबातकहेमन  
तोमलिनरहेवासनाअनेकभरीनेकुननिवारिहें॥जैसें  
कोंऊआभूषणअधिकवनायराख्योकलईऊपरकर-  
भांतरभंगारिहें॥ज्योंहीमनआवेत्योंहीषेरुतनिसं  
कहोईज्ञानसुनिसीषलीयोग्रंथनिविचारीहें॥सुंदर  
कहतवाकेअटकनकोआहीजोईवासोंमिलेंजाईता  
हीकोंबिगारीहें॥५॥हंसस्वेतवकस्वेतदेषीयेंसमान  
दोउहंसभोतीचुगेबकमछरीकोंपातहें॥पिकअरु  
काकदोउकेसेंकरिजांनेजाईपिकअंबडारिकाकक



रकहिंजातहैं॥ सिंद्धोअरुफटिकपफांनसमदेषीय  
 तवहतोकठोरवहीजलमेंसमातहैं॥ सुंदरकहतज्ञा  
 नीबाहिरभीतरसुधताकीपटंतरऔरबातनिकीबा  
 तहैं॥६॥ ॥इतिविप्रीतज्ञानकोअंगसमाप्तः॥  
 अंग१३॥ ॥छु॥ ॥छु॥ ॥अथवचनविवे  
 ककोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहरा॥ ॥जाकेघर  
 ताजीतुरकिनकोतबेलोबांध्योताकेआगेफेरीफेरीट  
 टुवादिषाईये॥ जाकेषासामलमलसिरसाफकेढेर  
 परेताकेआगेआनीकरिचोसईषाईये॥ जाकेपंचामृ  
 तषातषातसबदिनबीतेसुंदरकहतताहीराबरीषवा  
 ईये॥ चतुरप्रवीनआगेसूरषउचारकरेंसूर्जकेआगेजे  
 सेऊगनांदिषाईये॥१॥ एकवाणीरूपवंतभूषनब  
 सनअंगअधिकविराजमानकहीयतअेसीहैं॥ एक  
 वाणीफाटेटूटेअंबरउढाएआनीताहूमांहीविपरी  
 तसुनीयतजैसीहैं॥ एकवाणीमृतकसीबहतसिंगा  
 रकीयेलोकनीकोनीकीलगेसंतनीकोंभेसीहैं॥ सुंद  
 रकहतवांणीत्रिविधजगतमांहीजानेकोईचतुरप्र  
 वीनजाकीजैसीहैं॥२॥ राजाकोकुंअरजोस्वरूप

के कुरूप होई ताकों तो सिलास करि गोद ले धिलाई  
 ए॥ और कोउ रेत को स्वरूप होई सो भनी कता हूँ तो देवि  
 करी निकट बुलाई ए॥ काहू को कुरूप कारो कूबरो द्वै अंग  
 गहीन वा की बोर देषी देषी माथोई हलाई ए॥ सुंदर कह  
 त वा के वा पही को प्यारो होई यों ही जानी वानी को विवेक  
 असें पाईयें॥ ३॥ बोलीये तो तब जव बोलवे की सुद्ध हो  
 ई न तो मुःष में न करि चुप होई रहियें॥ जो रीयें तो तब ज  
 व जोर बोउ जानी परें तु कछंद अरथ अनुपजामें लही  
 यें॥ गाईयें तो तब जव गाईवै को कंठ होई॥ अवन के स्त  
 न नही मन जाई गहीयें॥ तु कसंग छंद संग अरथ मि  
 लें न कछु सुंदर कहत एसी वां नी नही कही ए॥ ४॥ एक

जब बोलत हैं सब को उकांन दे सुनतर वरोन को॥ ताही तें  
 सुवचन विवेक करी बोलीय तयों ही आकबाक बकितो  
 रीयें न पोंन को॥ सुंदर समझ ऐ सें वचन उचार करो न ही  
 तो समझि करि बेठो ग्रहि मोन को॥ ६॥ प्रथम ही ये विचा  
 र ठीम सोन दी जें डार ताही तें सुवचन संभारि करि बो लि  
 यें॥ जाने न कुहे न हेत भाव ते सी कही देत कही यें सुन ब  
 जब मन मां ही तो लीयें॥ सब ही को लागे दुःख को उन ही पा  
 वें सुख बोलिके ब्रथा ही ता तें छाति न ही छोलीयें॥ सुंदर  
 समझ करि कही यें सरस बात तब ही तो वचन कपाट गही  
 धोलीयें॥ ७॥ वचन तो उहे जा में पाई यें विवेक हे और तो  
 वचन ए सें बोलत हैं पसु जे सें॥ तिन के तो बोल वे में ढंग  
 हून एक हे को उरा ति दिव सब कत ही रहत असें॥ जे सि  
 विधि कूप में बकत मानो भेक हें विविध प्रकार करि बोल  
 त जगत सब घट घट प्रति मुःष वचन अने क हें सुंदर क  
 हत ता तें वचन विचार ले हू वचन तो वहे जां मे पाई ये विवे  
 क हें॥ ८॥ वचन में वचन विवेक करि लीजियें जे सें हंस  
 नीर को तजत हे असार जां नी सार जां नी धीर को निरा  
 लोक रि पीजियें॥ जे सें त धि मथत मथत का

तओररहीपहीसबछालुछांडीदीजीयें॥जेसेमधुम  
क्षीकासवासकोभ्रमरलेततेसेंहीपकरिकरिभिन्न  
भिन्नकीजीयें॥सुंदरकहततातेंवचनअनेकभांतिवच  
नमेवचनविवेककरिलीजीयें॥९॥प्रथमहीगुरुदेव  
सुःषतेउचारकस्यौवेईतोवचनआयलगेनिजहीये  
हें॥तिनकोविवेककरिअंतःकरनमाहीअतिहीअमो  
लनगभिन्नभिन्नकीयेहें॥आप्रकोदरिद्रगयोपरउप  
कारहेतनंगहीनिगलिकेंउगलिनगकीयेहें॥सुंदरक  
हतयहवांणीयोंप्रगटभईओरकोईसूनकरिरंकजी  
वजीयेहें॥१०॥वचनतेंदूरमिलेंवचनविरोधहोईवच  
नतेंरागवढेवचनतेंदोषजु॥वचनतेंज्वालुउठेवचन  
सीतलहोईवचनतेंमुदीतवचनहीतेंरोषजु॥वचन  
तेंप्यारोलगेवचनतेंदूरभगेंवचनतेंसुरज्जईवचनतें  
पोषजु॥सुंदरकहतयहवचनकोभेदअसोवचनतें  
बंधहोतवचनतेंमोषजु॥११॥वचनतेंगुरुशिषबाप  
पूतप्यारोहोईवचनतेंबहूविधहोतउतपातहें॥वच  
नतेंनारीअरुपुरषसनेहअतिवचनतेंदोउआपआप  
मेरिसातहें॥वचनतेंसबआईराजाकेहजूरहोईवचन

तेंचाकरउछोडिकेपलातहें॥सुंदरसुवचनसुनत-  
 अतिसुषहोईकुवचनसुनतहीप्रीतिघटिजातहें॥१२  
 ॥वचनविवेककीयेंवचनमेंभेदहेएकतोवचनसुन  
 कर्महीमिंवहीजाय॥कर्तबहुतविधिस्वर्गकीउमेदहे  
 ॥एकहेवचनद्रढईस्वरउपासनाकेतिनमेंतोसकलही  
 वासनाकोछेदहे॥एकहीवचनतामेंएकहीअर्षंडब्रह्म  
 सुंदरकहतयोंबतावेअंतवेदहें॥वचनतोअनेकप्र  
 कारसबदेखीयतवचनविवेककीयेंवचनमेंभेदहें॥१३  
 ॥वचनतेंजोगकरेंवचनतेंजज्ञकरेंवचनतेंतपकरिदे  
 हकोंदहतुहें॥वचनतेंबंधनकरतहेंअनेकविधिवचन  
 तेंत्यागकरिवनमेंरहतुहें॥वचनतेंउरजेरुसुरजेवचन  
 हूतेंवचनतेभांतिभांतिसंकटसहतुहें॥वचनतेंजीव  
 भयोवचनतेंसीवहोईसुंदरवचनभेदवेदयोंकहतुहें  
 ॥१४॥ ॥इतिविवेकवचनकोअंगसमाप्तः॥अंग१४  
 ॥छु॥ ॥छु॥ ॥अथनिर्गुणउपासनाकोअंगप्रा०॥  
 ॥छंदइंद्रवजय॥ ॥ब्रह्माकुलालरचेयहभांजनकर्म  
 निकेवसमोहनभावे॥विष्णुहिसंकटआयसहेंग्रभ  
 काहूकोरक्षककाहूसंतावे॥संकरभूतपिसाचनिकेप

तिपानीकपाललीयेंविललावे॥याहीतेसुंदरत्रिगु  
नत्यागस्तनिर्मलएकनिरंजनध्यावें॥१॥कोटिकबा  
तबनायकहेंकहांहोतभयासबहीमनरंजन॥२॥  
स्त्रसमृतिरुवेदपुरानबषांनतहेंअतिलायकेअंजन  
पानीमेंबूडतपानीगहेंकतपारपहूंचतहेंमतिभंजन  
॥सुंदरताहांलगअंधेकीजेवरीजोलोनधाईएएकनि  
रंजन॥३॥भंजनसोजोभंनोमलभंजनसज्जनसोजोक  
हेंगतिगूँ॥गंजनसोजोइंद्रिगहेंगंजनरंजनसोजोबु  
जायेंअबूँ॥भांजनसोजोभस्वोरसमांहीविद्वजुनसो  
कितहूनअरूँ॥व्यंजनसोजुबढेरुचसंदरअंजनसो  
जुनिरंजनसूँ॥३॥जाप्रभुतेउतपतिभईयहसोप्रभु  
हेंउरइष्टहमारे॥जोप्रभुहेंसबकेसिरउपरताप्रभुको  
सिरहीहमधारे॥रूपनरेषअलेषअखंडितभिनरहें  
सबकारजसारे॥नामनिरंजनहेंतिनकेपुंनसंदरनाप्र  
भुकीबलेहारे॥४॥जोउपजेविनसेगुनधारतसोयह  
जानहूअंजनमाया॥आवनजायमरेनहीजीवतअचु  
तएकनिरंजनराया॥जोंतरतत्वरहेंरसएकहीआ  
वतजातफिरेयहछायासोपरब्रह्मसदासिरउपरसुं

दरताप्रभुसोमनलाया ॥५॥ जोउपज्यौकछुआई  
 जहांलगसोसबनासनिरंतरहोई ॥ रूपधर्योसुरहेन  
 हीनिश्चळतीनहीलोकगएोकहाकोई ॥ राजसतामस  
 सात्विकजेगुनदेषतकालग्रसेपुनवोई ॥ आपहिएक  
 रहेंजुनिरंजनसुंदरकेमनमानतसोई ॥६॥ देवनिके  
 सिरदेवविराजितईस्वरकेसिरईस्वरकहीयें ॥ लाल  
 निकेसिरलालनिरंतरषूबनिकेसिरषूबलहीयें ॥ पा  
 कनिकेसिरपाकसिरोमनिदेषविचारउहेद्रढगहीयें ॥  
 सुंदरएकसदासिरऊपरओरकछूहमकोनहीचहीयें  
 ॥७॥ सेसमहेसगनेसजहांलगविछुविरंचिहूकेसर=  
 स्वांमी ॥ आपकब्रह्मअर्षडअनावृतबाहेरभीतरअं  
 तरजामी ॥ वोरनछोरअनंतकहेंगुनयाहीतेसुंदरहेंघ  
 ननामी ॥ ओसोप्रभुजिनकेसिरऊपरक्योंपरिहेंतिनको  
 कहीषामी ॥८॥ ॥ इतिनिर्गुणउपासनाकोअंग  
 समाप्तः ॥ ॥ अंग १५ ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥  
 अथपतिव्रताकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ लंदइंद्रवजय ॥  
 आनकीवोरनिहारतहिजेसेंजातपतिव्रतएकवृति  
 कोहोतअनादरओसीहीभांतिचुपीछेफिरेपुनसरस

तिको॥नेकहीमेहरवोहोईजातषिसेंअधबिचजोंजो  
 गजतीको॥रामअदेतेंगएजनसुंदरंएकरतिबिनपाव  
 रतीको॥१॥जोहरीकोंतजिआनउपासतसोमतिमंदफ  
 जीतहीहोई॥ज्योंअपनेंभरतारहिछांडभईविभचार  
 निकामनिकोई॥सुंदरताहिनआदरमानफिरविमुषी  
 अपनीपतषोई॥बूडिमरेकिनकूपसंझारकहाजगजी  
 वतहेसठसोई॥२॥होईअन्यनभजेंभगवंतहीओरक  
 छूउरमेंनहीराषे॥देवीरुदेवजहांलगहेंडरकेतिनसोंक  
 हींदीननभाषे॥जोगहूजज्ञवृतादिक्रियातिनकोंतेन  
 हीस्वपनेंअभिलाषे॥सुंदरअमृतपानकीयोतबतोक  
 हीकोंनहलाहलचाषे॥३॥एकसहीसबकेउरअंतरता  
 प्रभुकोंकहीकाहीनगावे॥संकटमांहीसहायकरेंपुन  
 सोअपनेंपतिक्योंविसरावे॥चारपदार्थओरजहांल  
 गआठहूसिधनवेनिधपावे॥सुंदरछारपरोतिनकेमु  
 षजोहरीकोंतजिआनकोंध्यावे॥४॥पूरनकामसदा  
 सुःषधामनिरंजनरामसिरंजनहारो॥सेवकहोईर  
 त्योसबकोनितकीटंहिकुंजरदेतअहारो॥भजनदुः  
 पदरिद्वनिवारनचिंतकरेंपुनसांजसंवारो॥असेप्रभु



तजिआनउपासतसुंदरहेतिनकोमुःषकारो॥५॥

॥छंदमनहर॥पतिहीसोंप्रेमहोईपतीहीसोंनैमहोईप  
तीहीसोषेमहोईपतीहीसोंरतहे॥पतिहीहेंजज्ञजोगप

तिहीहेंरसभोगपतिहीसोंमिटेंसोंगपतिहीकोजतहे

॥पतीहीहेंज्ञानध्यानपतीहीहेंपुन्यदानपतिहीहेंतीर्थ

स्नानपतिहीकोमतहे॥पतिबिनुपत्यनाहींपतिबिनग

तिनाहींसुंदरसकलविधिएकपतिवृत्तहे॥६॥जलको

सनेहीमीनबिछूरततजेप्राणमनीबिनुअहीजैसेजीव

तनलहीयें॥स्वांतबिदुकेसनेहीप्रगटजगतमाहीए

कसीपदुसरोसुचातउकहिये॥रविकोसनेहीपुनीक

मलसरोवरमेंससीकोसनेहीऊचकोरजेसेंरहीयें॥

तेमेंहीसुंदरएकप्रभुसोंसनेहजोरओरकछूदेष्का

हूवोरनहींवहीयें॥७॥ ॥इतिपतिव्रताकोअंगस

माप्तः॥अंग१६॥ ॥छु॥ ॥छु॥ ॥छु॥

अथविरहउराहनेकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनह

र॥ ॥पीयकोअंदेसोभारीतोसोंकहोंसुनप्यारीया

रीतोरीगाएसोतोअजहूनआयेहें॥मेरेतोजीवनप्राण

निसदिनउहेंध्यानमुःषसोनकहोंआननेनऊरलाएहें

॥ जब ते गए बिछोह कलन परत मोही ता ते हूं पूछत  
तोही किन वर माये हें ॥ सुंदर विरहनी को सोच सषी वा  
रवारं ॥ हम को विसार अब को न के कहाये हें ॥ १ ॥ हम  
को तो रे न दिन संकमन माही रहे उनकी तो बात निमें ठि  
कहू न पाईये ॥ कब हू संदेस सनी अधिक उछाह होई क  
व हू करोई रोई आं सनी बहाईये ॥ और निकेर सब स  
होई रहे प्यारे लाल आवनिकी कही कही हम को सनाई  
ये ॥ सुंदर कहत ताही काटीये सु को न भांति जोई तरु आ  
पने सुहाय तेल गाईये ॥ २ ॥ मो सो कहें और सीही वा सुं  
कहे और सीही जा सो कहें ताही के प्रतीत के से होत हें ॥ का  
हू सो स मास करे का हू सो उदास फिरे का हू सो तोर सब  
स अकेल पोत हें ॥ दगा बाजी दुबधा तो मन की न दूर  
होई का हू के अंधे रोधर का हू के उद्योत हें ॥ सुंदर कहत  
जाके पीर सो करे पुकार जाके दुःख दूर गयो ता को भई वो  
त हें ॥ ३ ॥ हीये और जीये और लीये और दीये और की  
ये और को न सक अनुपपाटी पढे हें ॥ सुःख और बेन ओ  
र नेन और तन और मन और काया सब जंत्र मांही कढे  
हें ॥ हाथ और पाव और सीम हू अवन और नष सिध

रोमरोमकलईसोंमढेहें॥एसीतोकठोरतानसुनीनहि  
 देषीजगसुंदरकहतकोईवज्रहीकेघढेहें॥४॥ ॥  
 इतिविरहउराहनेकौअंगसमाप्तः॥ ॥अंग१७॥ छु  
 अथशब्दसारकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥  
 भूल्यौफिरेभर्मतैंकहतकलूओरओरकरतनतापदू  
 रिकरसंतापकौं॥दक्षभयोरहेपुनीदक्षप्रजापतिजे  
 सेंदेतपरदक्षणानदिक्षादेतआपकौं॥सुंदरकहतअ  
 सेंजामेनजुगतिकलूओरजापजपेनजपतनिजजा  
 पकौं॥बालभयोज्वानभयोवयवीतेवृधभयोवपु  
 रूपहोईकेंविसरीगयोआपकौं॥१॥ ॥छंदइंद्रवज  
 य॥ ॥पानवहेजुपीयूषपीवेनितदानवहेजुदलिद्र  
 कौंभानें॥कानउहेसनीयैजसकेसवमानउहेकरी  
 येसनमानें॥तानउहेसरतानरिजावतजानउहेजग  
 दीसहिजानें॥बांनउहेंमनबेधतसुंदरज्ञानउहेंउपजें  
 नअज्ञानें॥२॥सूरउहेंमनकौनबसराषतकूरउहेम  
 नमाहीलजेहें॥त्यागउहेअनुरागनहीकहूंभागवहेम  
 नमौहतजेहें॥तज्ञवहेंनिजतत्वहीजानतजज्ञऊहेज  
 गदीसजजेहें॥ ॥ ३ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

वंत भजे हैं ॥ ३ ॥ चाप उहें कसिए रिपु ऊपर दाप उहे  
 दलकार ही मारे ॥ चाप उहें हरि आप दई विरथाप उहें  
 थपि ओर न धारे ॥ जाप उहें जपीये अजपा नित व्याप  
 उहें निज व्याप विचारे ॥ बाप उहें सब को प्रभु सुंदर पा  
 प हरे अरु ताप निवारे ॥ ४ ॥ भौन उहे भयना ही निजाम  
 ही गोन उहे फिर होई न गोन ॥ बैन उहे विसरे विषयार  
 सरोन उहे प्रभु सौन हीरोन ॥ मोन उहे जु लीये हरी बोल  
 त लोन उहे सब ओर अलों ॥ सोन उहे गुरु संत मिले  
 जब सुंदर वांकर हें ही कोन ॥ ५ ॥ कार उहे अविका  
 र हें नित सार उहे जु असार ही नाषे ॥ प्रीति उहे जु प्रती  
 त धरे उर नीत उहे जु अनीत न भाषे ॥ तंत उहे लगि अं  
 त न टूटत संत उहे अपने सतराषे ॥ नाद उहे सुनि बा  
 द तजे सब स्वाद उहे रस सुंदर चाषे ॥ ६ ॥ स्वास उहे जु  
 उस्वास न छांडत नास उहे फिर होई न नासा ॥ पास उहे  
 सत पास लगे जम पास कटे प्रभु के नित पासा ॥ बास उ  
 हे ग्रह बास तजे बनावसन ही तिही ठोहर वासा ॥ दास  
 उहे जु उदासर हें हरि दास सदा कही सुंदर दासा ॥ ७ ॥  
 औन उहे श्रुति सार कने नित नेन उहे निज रूप निहारे ॥

नाकउहेहरिनाकहीराषतजीमउहेजगदीसउचारे  
 ॥ हाथउहेकरियेहरीकोकृतपावउहेप्रभुकेपंथधारे  
 ॥ सीसउहेकरीस्थामसमर्पनसुंदरयोसबकारजसा  
 रे ॥ ८ ॥ सोवतसोवतसोईगयोसठरोवतरोवतकैवे  
 ररोयो ॥ गोवतगोवतगोईधस्यौधनषोवतषोवतते  
 सबषोयो ॥ जोवतजोवतबीतगयेदिनबोवतबोवत  
 तेविषबोयो ॥ सुंदरसुंदररामभज्योनहीढोवतढो  
 वतबोऊहीढोयो ॥ ९ ॥ दिषतदेषतदेषतमारगबूऊत  
 बूऊतबूऊतआयो ॥ सूऊतसूऊतसूऊपरीसबगाव  
 तगावतगोविंदगायो ॥ सोधतसोधतसूद्धभयोपुनी  
 तावततावतकंचनतायो ॥ जागतजागतजागपस्योज  
 बसुंदरसुंदरसुंदरपायो ॥ १० ॥ ॥ इतिशब्दसा  
 रकोअंगसमाप्तः ॥ अंग १८ ॥ ॥ छु ॥ ॥ छु ॥  
 अथभक्तिज्ञानमिश्रितकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइ  
 व्रजय ॥ ॥ बैठतरामहिऊठतरामहिबोलतरामही  
 रामरह्योहें ॥ जीमतरामहीपीबतरामहीधामहीरा  
 महीरामगयोहें ॥ जागतरामहीसोवतरामहीजोवत  
 रामहीरामलह्योहें ॥ देतहूरामहीलेतहूरामहीछुंद

ररामहीरामरयोहें॥१॥ओत्रहूरामहीनेत्रहूरामही  
 वक्रहूरामहीरामहीगाजे॥सीसहूरामहीहाथहूराम  
 हीपावहूरामहीरामहीछाजे॥पेटहूरामहीपीठहूराम  
 महीरोमहूरामहीरामहीवाजे॥अंतररामनिरंतररा  
 महीसुंदररामहीरामविराजे॥२॥भोमीहूरामहिआ  
 हूरामहितेजहूरामहीवायूहिरामें॥व्योमहूरामही  
 चंदहूरामहीसूरहूरामहीसीतहीधामें॥आदींहूराम  
 हीअंतहूरामहीमध्यहिरामहिपुर्षनवामें॥आज  
 हूरामहिकालहूरामहीसुंदररामहीरामहीथामें॥३  
 ॥देषहूरामअदेषहूरामहीलेषहूरामअलेषहूरामें  
 ॥एकहूरामअनेकहूरामहीशेषहूरामअसेषहूता  
 में॥मोनहूरामअमोनहूरामहीगोनहूरामहीठांम  
 कुठामें॥बाहेररामहीभीतररामहीसुंदररामहिहें  
 जगजामें॥४॥दूरहूरामनिजीकहूरामहिदेसहूराम  
 प्रदेसहूरामें॥पूरबरामहीपछिमरामहीदछनरा  
 महीउत्तरधामें॥आगेहूरामहीपीछेहूरामहीव्या  
 पकरामहीहेबनग्रामें॥सुंदररामदसोदिसपूरनस्व  
 र्गहूरामपतालहूतामें॥५॥आपहूरामउपावतरा

महीभंजनरामसंवारनवामें॥द्रष्टृहूरामअद्रिष्टृ  
 रामहीद्रष्टृहूरामकरेंसबकामें॥वर्णहूरामअवर्ण  
 हूरामहीरक्तनपीतनस्वेतनस्यामैं॥सुन्यहूरामअसू  
 न्यहूरामहीसुंदररामहीनामअनामैं॥६॥ ॥इति  
 भक्तिज्ञानमिश्रितकोअंगसमाप्तः॥ अंग१९॥६॥  
 अथविप्रजेसब्दकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदसवैया॥  
 अवनंदेषेसुनेपुनिनेनहुजिभासूंधेनासिकाबोले॥  
 गुदाषाईइंद्रिजलपीवैबिनहिहाथसमेरहितोले॥उ  
 चेपावमुंडिनीचेकुतिनलोकमेविचरतडोले॥सुंदर  
 दासकहेसनज्ञानीमलीभांतियाअर्थहिषोले॥१॥  
 अंधातीनलोककूंदेषेबेरासूनेबहूतविधिनाद॥नक  
 दाबासकमलकीलेवेगुंगाकरेबहूतसेवाद॥तुंठापक  
 रिउठावेपरवतपंगुलकरेनिरतअहलद॥जोकोउमा  
 कोअर्थविचारेसुंदरसोईपावेस्वाद॥२॥कुंजरकौंकि  
 रीगलबेठीसिंघहिषायअघामोस्याल॥मछुरिअ  
 ग्निमांहिसूषपायोजलमेबोहौतहोतिबेहाल॥पंगुच  
 ठोपरवतकेउपरिमरतकहीदेविडरांनोकाल॥जा  
 कोअनुभवहोयसुजांनेसुंदरएसाउलटाध्याल॥३॥





सुंदर एक आचंभाहुवापानीमाहिजरेअगीठ ॥ ८ ॥  
 कपराधोबिकुगहिंधोवेमाठिबपरिघठेकुंभार ॥ सू  
 ईबिचारिदरजीहीसीवेसोनातावेपकरसोनार ॥ लक  
 रिबढईकुगहिछीलेषालसुबेठिधमेंलुहार ॥ सुंदरदा  
 सकहेसुनज्ञानीजेकोईयाकोकरेबिचार ॥ ९ ॥ १  
 हिवहूतसूषपायोताधरमांहिबसेअबकौन ॥ लागि  
 सबैमीठाईषारीमीठेलागोएकबहेलुन ॥ परवतउडे

हीउलटीस्यामरंगलाग्यो नमरउलटिकरीहूवेस्वे  
 त॥ससियरउलटिराहुकोंग्रासोसरजउलटकरीग्रा  
 सोकेत॥सुंदरसूगराकोंतजिभाग्योनुगरासेतिवांध्यो  
 हेत॥१३॥अगनीमथनकरिलकरिकाठीसोवहलक  
 रिप्रानआधार॥पानीमथिकरिधिवनीकासोसोघृत  
 पायोवारभवार॥दुधदर्हीकीइछाभागीजाकूंमथतस  
 कलसंसार॥सुंदरअबतोभयेसूयोरेचितारहिनए  
 कलगार॥१४॥पत्रमांहीजोलीगहिराषेजोगिमीक्षाभा  
 गनेजाई॥जागेजगतसोवहीगोरषएसासब्दसनावे  
 आई॥भीष्याफरेबहुतकरिताकोंसोवहिभीष्याचेले  
 ई॥सुंदरजोगिजूगजूगजीविताअवधुंतकीदूरबला  
 ई॥१५॥परधनहरेकरेपरनिंदापरधीकोंरोषधरमां  
 ह॥मांसषायमदिरापुनीपीवेताहिमुक्तिकोसंसेना  
 ह ॥१६॥हैकर्म त्यागेत ॥१७॥  
 ई॥एसीकरेसोसंतकहावेसुंदरऔरउपजिमरिजां  
 ह॥१८॥निरदर्हीहोईतरेपसूधातिकदयावंतबुडेभ  
 ॥१९॥लोभीलंगेसबनकूप्यारोनरलोभीकोंवाहर  
 नाहां॥मिथ्यावादिमिलेब्रह्मकूंसंलोकहेतेजमपुर

जाही॥सुंदरधूपमांहिसीतलताजरतरहेसोवेवे  
 छाई॥१७॥बठईचरषाभलोसंवास्योफिरनेलाग्यो  
 निकिभात॥बहुसासुकोंकहिसमझावेतुमेरेद्विगवे  
 ठिकात॥ताकोतारनटूटेकबहुपुनिघटेनहिदिनरा  
 त॥सुंदरविधिसंबनेजूलाहाषासानिपजेउचिजा  
 त॥१८॥घरघरफीरेकुंवारीकन्याजनेजनेसूकरती  
 संग॥वेस्यासोतोभईपतिव्रताएकपुरुषकेलागिअं  
 ग॥कलजूगमाहीसतजुगथाव्योपापिउदेप्रमको  
 भंग॥सुंदरकहतअरथसोपावेजोनीकेकरितजे  
 अनंग॥१९॥विप्ररसोईकरनेलाग्योचोकाभीतर  
 बेठोआई॥लकरीमांहेचुलादियोरोटीउपरतवा  
 चढाई॥षिचरिमांहिहंडियारांधीसालनआकधं  
 तुराषाई॥सुंदरजि  
 नकीगोअघाई॥२०॥बैलउलट  
 स्तूमांहीभरिगुनअपार॥भांतिभांतिकोसौदाकी  
 योआईदिसांतरयासंसार॥नायकनीपुन  
 डोलेमोहिमील्योनीकोभरथार॥पुंजीजायसाह  
 कौंसौपीसुंदरसिरतेंडार्योभार॥२१॥बनिमाएक

बनजकूआयोपरेतावराभारिभेदी॥भलीवस्तुक  
 छूलीनीदिनीषेंचीगटरियाबांधीअैठी॥सौंदाकी  
 योचलिपुनीघरकूंलेषाकीयेबारितरबैठी॥सुंदरसा  
 हषुसीअतिहूवाबैरुगयोपुंजीमैपैठी॥२२॥पेहराइ  
 तघरमुसोसाहकोरक्षाकरनेलग्योचोर॥कोतवाल  
 काठेकरिबांध्योसूजेनहिसांऊअसूभोर॥राजागा  
 मछोडकेभाग्योहुवोसकलजगतमासोर॥परजासु  
 षिभईनगरिमेंसुंदरकोईजूलमनजोर॥२३॥राजा  
 फिरेबीपतकोमाख्योघरघरटुकडामगेसीषपावपि  
 यादोनीसदीनडोलेघोरत्वालिसकेनवीषआकअरं  
 डकिलकरिचूषेछांडेबहुतरसभरेईष॥सुंदरकोउ

६ ॥ तिरी ॥ तुंगीलबैठी सारिमांड ॥ सुंदर  
 कहै सीष सून मोरी अब तूं घर घर फिरवो छांड ॥ २६ ॥  
 पंथी माही पंथ चलि आयो सोवह पंथ लिख्यो नहि जा  
 ई ॥ वाहि पंथ चल्यो उ पंथी निरभे देस पहंच्यो आई ॥  
 तांहां दूकाल परे नहि कब हू सदा कर भक्षर द्यो वहरा  
 ई ॥ सुंदर दूषिन को उदिसे अक्षय मूष मेरे हे समाई ॥  
 २७ ॥ एक अहे रिबन मै आयो षेलन लाग्यो भलिसि  
 कार ॥ कर मेधनु क कमर मे तरक स सावज घेरिवारं  
 वार ॥ मास्यो सिंघ व्याघ्र पुनी मास्यो मारि बहूर मृगन  
 की डार ॥ ऐसे सकल मारि घर लायो सुंदर राजहि की  
 योजु हार ॥ २८ ॥ सक के बचन अमृत मई ऐसे को  
 किलाधार रहै मन मांही ॥ सारो सूनै भागवत कब हू  
 सार सतो उपजावे नाहीं ॥ हंस चुगे मुगता फल अर  
 थ ही सुंदर मान सरोवर नाहीं ॥ काक कविस्वर निषे  
 जे ते ते सब दोर करे कहि जाई ॥ २९ ॥ नष्ट होई द्विज  
 अष्ट किया करि कष्ट किये नहि पावै ठौर ॥ महिमा  
 सकल गईतिन केरी रहत सबन सिर मोर ॥ जितती  
 त फिरे नहि कलू आदरतिन कौ को उन घाले क्यौर



तीनोहे॥ सुंदर कहत एसो कोउ एकसर वीर सीस के  
 उतार के सज सजाई लीनोहें॥ २॥ घर माही सूर मा कहा  
 वत सकल हें पावरो पिर हें रिन माही रज पूत कोउ हय  
 गय गाजत जुरत जहां दल हें॥ बाजत झंझाउ सहनाई  
 सिंधू राग पुनी सुनत ही कायर की छूटी जात कल हें॥ ऊ  
 लकत बरछी तरवार वहे मार मार करत परत फल फल  
 हें॥ ऐसे जुद्ध मे अडिग सुंदर सभट सोई घर माही सू  
 र मा कहा वत सकल हें॥ ३॥ सूर मा के देषीयत सीस  
 बिनु धरहे असन बसन बहु भूषन सकल अंग संप  
 ति विविध भांति भस्थो सब धरहे॥ अवनन गारो सुनी  
 छिनक में छांड़ि जात ऐसे नही जानें कछु मेरे उहां मर  
 हे॥ मन मे उछाहरन माही टूक टूक होई निरभे नि सं  
 कवा के रच हन डरहे॥ सुंदर कहत कोऊ देह को ममत्व  
 नाहीं सूर मा को देषीयत सीस बिनु धरहे॥ ४॥ ऐसे सू  
 र वीर धीर मीर जाय मारि हे ऊ ऊ बे कोचाव जा के ता कि  
 ता कि करे धाव आगे धरि पाव फिर पीछे न संभार हे॥ हा  
 थ लीयें हर्था यार तीछन लगाये धार वार नही लागें सब  
 पिसुन प्रहार हे॥ वोट नही साधे कछु लोट पोट होई जाई

चोटनहीचूकेसिसरिपुकोउतारहे॥सुंदरकहतता  
हीनेकहूनसोचपोचसोईसूरवीरधीरमीरजायमारी  
हे॥५॥सोईसूरवीरधीरस्यांमकेहजूरहेअधिकअ  
जानबाहूमनमेंउछाहकीयेदीयेगजगाहमुःषवरष  
तनूरहे॥काढेजबकरवालबालसबठाढेहोईअति  
विकराल्पुनिदेषतकरूरहे॥नेकनउसासलेतफौज  
कुंफिट्ठाइदेतषेतनहीछांडेमरिकोरचकचूरहे॥सुंद  
रकहतताकीकीरविप्रसिद्धहोईसोईसूरवीरधीर=  
स्यांमकेहजूरहे॥६॥असोसूरवीरकोउकोटिनमेंए  
कहाज्ञानकोकवचअंगकाहुसोनिहोईभंगटोपसीस  
ऊलकतपरमविवेकहे॥तीनेताजीअसावारलीये  
समसेरसारआगेहीक्रोंपावधरेभागनेकीटेकहे॥  
छूटतबंदूकबांनमचेजहांघमसांनदेपीकेषिसुनंद  
लमारतअनेकहे॥सुंदरसकललोकमाहीताकेजे  
जेकारअसोसूरवीरकोउकोटिनमेंएकहे॥७॥सा  
धूकोसंग्रामहेअकसूरवीरतेंसूरवीररिपुकोनसुं  
नुदेषिचोटकरेमारेतबताकीताकीतरवारतीरसों  
॥साधूआठोंजांमबेठोमनहीसोंजुद्धकरेजाकेमुह



माथोनहीदेषीयेवंशरीरसों॥सूरवीरभूमीपरदूरही  
 तेदोरिलगेसाधूसुनीकोंपकरिराषेधरधीरसों॥सुंद  
 रकहततहांकाहूकोनपावटिकेसाधूकोसंग्रामहेंअ  
 धिकसूरवीरसों॥८॥साधूसोनसूरवीरकोउहमजां  
 न्योहेंपेंचकरडीकमानज्ञानकोलगायोबांनमाख्योम  
 हाबलमनजगजिनरान्योहें॥ताकेअगवाणीपंच  
 जोधाउकतलकीयोओररह्योपख्योसबअरिदलभा  
 न्योहें॥असोकोउसभटजगतमेंनदेषीयतजाकेआ  
 गेकालहूसोकंपिकेपरान्योहें॥सुंदरकहतताकीसो  
 भातिहूंलोकमांहीसाधूसौंनसूरवीरकोईहमजां  
 न्योहें॥९॥कांससोप्रबलमहाजीतेजिनतीनलोक  
 सोतोएकसाधूकेविचारआगेहाख्योहें॥क्रोधसोक  
 रालजाकेदेषतनधीरधरेसोउसाधूसमाकेहथ्यार  
 सोंबिहाख्योहें॥लोभसोसुभटसाधूतोषसोंगिरायदी  
 योमोहसोनृपतिसाधूज्ञानसंप्रहाख्योहें॥सुंदरक  
 हतएसोसाधूकोईसूरवीरताकीसबहीपिसुनदलमा  
 ख्योहें॥१०॥वेरीसबभारिकेनचितहोयसूतोहेंमारे  
 कामक्रोधसबलोभमोहपीसडारेइंद्रिद्रुकतलकरि

कीयोरजपूतोहे॥मास्यौमहामतमनमारेअहंकार  
 रमारेमदमछरउअसोरनरूतोहे॥मारीआसात्रछा  
 पुनिपापनिसापनिदेउसबकोप्रहारकरिनिजंपदप  
 हूंतोहे॥सुंदरकहतएसोसाधूकोईसूरवीरवेरीसबमा  
 रीकेनचिंतहोयसूतोहे॥११॥साधूसूरवीरवेईजगत  
 मेंआयेहेंकीयेजनमनहाथइंद्रिनकोंसबसाथपेरी  
 घेरीआपनेईनाथसोंलगायेहें॥ओरउअनेकवेरीमारे  
 सबजुद्धकरिकामक्रोधलोभमोहंषोदकेंबहायेहें॥की  
 योहेंसंग्रामजिनदीयोहेंभगाईदलअसेमहासुभटसु  
 ग्रंथनिमेंगाएहें॥सुंदरकहतओरसूरयोहिषपिगए  
 साधूसूरवीरवेईजगतमेंआएहैं॥१२॥असेकोंनसूर  
 वीरसाधूकेसमानहेंमहामतहाथीमनराख्योहेपकरि  
 जिनअतिहीप्रचंडजामेबहुतगुमानहें॥कामक्रोधलो  
 भमोहबांधेचाख्योपावपुंनिछूटनेनपावेनेकंप्रानपील  
 वानहें॥कबहूजौकरेजोरसावधानसांरुसारेसदाएक  
 हाथमेंअंकुसगुरुज्ञानहें॥सुंदरकहतओरकाहूकेन  
 वसहोईअसेकोंनसूरवीरसाधूकेसमानहें॥१३॥॥  
 इतिसुरातएकोअंगसमाप्तः॥अंग२१॥॥छु॥

अथसाधूकोअंगप्रारंभः॥ ॥ सुंदरद्रवजय॥

साधूकोसंगसदाअतिनीको॥ प्रीतिप्रचंडलगेपरब्रह्म  
 हींओरसबेकछूलागतफीको॥ सुद्धहृदेमनहोईसुनि  
 र्मलद्वैतप्रभावमिटेसबजीको॥ गोष्ठिरुज्ञानअनंतच  
 लेजिहांसुंदरजेसेप्रवाहनदीको॥ ताहीतेजानकरोनि  
 सबासरसाधुकोसंगसदाअतिनीको॥ १॥ हिंजगमां  
 हीबडोसतसंगाजोकोईजाईमिलेउनसो नरहोतपवि  
 त्रलगेहरिरंगा॥ दोषकलंकमबेमिटिजाईकैहोतउत्त  
 गा॥ ज्यौंजलओरमलीनमहाअतिगंगमित्योहोई  
 जातहेंगंगा॥ सुंदरसुद्धकरेंततकालजुहेजगमाही  
 बडोसतसंगा॥ २॥ साधूकेसंगतेसाधूहीहोईज्यौंल  
 टअंगकरेअपनेसमतासन्नभिन्नकहेनहीकोई॥  
 ज्यौंद्रुमओरअनिकनिभांतिनचंदनकीठिगचंदन  
 होई॥ ज्यौंजलछुद्रमिलेंजबगंगहीहोईपवित्रउहे  
 जलसोई॥ सुंदरजातस्वभावमिटेसबसाधूकेसं  
 गतेसाधूहीहोई॥ ३॥ संतनिकेजुप्रभावहेअसो  
 जोकोउआवतहेउनकेठिगवाहीसनावतशब्दसंदे  
 सो॥ ताहीकेतोसीहीओषदीलावतजाहीकोरोगही

जानतजेसो॥कर्मकलंकहिकाटतहेंसबसुद्धकरेपु  
नीकंचनतेसो॥सुंदरवस्तुविचारतहेनितसंतनिको  
जुप्रभावहेअसो॥४॥जोपरब्रह्ममिल्योकोउचाहं  
ततो नितसंतसमागमकीजे॥अंतरमेदिनिरंतरहोय  
केलेउनकोअपनोमनदीजे॥वेमुःषद्वारउचारकरेंकछू  
सोअनयाससुधारसपीजे॥सुंदरसूरप्रकासभयोज  
बओरअज्ञानसवेतमछीजे॥५॥जादिनतेसतसंग  
मिल्योतवतादिनतेभ्रमभाजगयोहें॥ओरउपायथ  
केसबहीतवसंतनिअद्वयज्ञानदयोहें॥पोतप्रवाल  
हीक्यौंकरिछूवतअेकअमोलकलाललयोहें॥कोन  
प्रकाररहेरजनितमसुंदरसूरप्रकासभयोहें॥६॥सं  
तसदासबकोहितवंछितजानतहेनरबूडतकाढेंदेउ  
पदेसमिटाईसबेभ्रमलेकरिज्ञानजहाजहीचढें॥जे  
विषयासुषनाहीनछांडतज्यौंकपिमूर्तीगहेंसठगाढें  
॥सुंदरवेदुःषकेंसुःषमानतहाटहिहाटविकावतआ  
ढें॥७॥सोअनयासतरेभवसागरजोसतसंगतमेंच  
लिआवे॥ज्यौंकणिहारनभेदकरेकछूआईचढेंति  
हीनावचढावे॥ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यहूसूद्रमलेछ

चंडालही पार लगावे ॥ सुंदरवार कछून ही लागत या  
 नर देह असे पद पावे ॥ ८ ॥ संतनिकी गति क्यौं को उजा  
 ने ज्यौं ही मषाई पीवे अरु वाढे ही ते से ही ये सब लोक ब  
 षाने ॥ ज्यौं जल में ससिके प्रति बिंब ही आपस माजल  
 जंतु प्रमाने ॥ ज्यौं षगळां ह धरा पर दी सत सुंदर पंखि उ  
 ढे असमाने ॥ त्यों सठ देह निके कत देषत संतनिकी गति  
 क्यौं को उजाने ॥ ९ ॥ जो कछू साधू करे सोई छाजे ज्यौं ष  
 परा कर ले घर डोलत मागत सी ष ही तो न ही लाजे ॥ जो  
 सुः ष से ज पठे बर भूषन लावत चंदन तो अति राजे ॥  
 जो को उ आय कहें सुः ष तें कछू जानत ता ही बयार ही बा  
 जे ॥ सुंदर संसय दूर भयो सब जो कछू साधू करे सोई  
 छाजे ॥ १० ॥ एस बजान हू साधू के लछन को उ कनिंदत  
 को उ क वंदत को उ क देत हें आई के भछन ॥ को उ क आ  
 य लगावत चंदन को उ क डारत धूरित तसन ॥ को उ क  
 हेय ह मूर ष दी सत को उ क हेय ह आं हि बिचछन ॥ सुंद  
 र का हू सौरागन द्वेषन एस बजान हू साधू के लछन ॥ ११  
 ॥ तात मिले पुनि मात मिले सुत भ्रात मिले जुवत



सिधिसीठगारीहे॥वासनानकोईवाकीअसीमति

सुंदरकहतताहीवंदनाहमारीरेहें॥१५॥अ

सोकोउसाधूसोतो रामजीकोंप्यारोहेकामहीनक्रोध  
जाकेलोभहीनमोहताकेमदहीनमल्लरनकोउनविका  
रोहे॥दुःखहीनसुःखमानेपापहीनपुंन्यजानेहरषन  
सोकआनेदेहहीतेन्यारोहें॥निंद्यानप्रसंसाकरेरागही  
नदोषधरेलेंनहीनदेनजाकेकलूनपसारोहे॥सुंदरक  
हतताकीअगमअगाधगतिअसोकोउसाधूसोतो रा  
मजीकोंप्यारोहे॥१६॥आठोजांमजमनेमआठोजांमर  
हेप्रेमआठोजांमजोग्यजज्ञकीयोबहूदानजू॥आठो  
जांमजपतपआठोजांमलीयोवृतआठोजांमतीर्थमे  
करतहेस्नानजू॥आठोजामपूजाविधिआठोजाम=  
आरतिहूआठोजामदंडव्रतसमर्नध्यानजु॥सुंदरक  
हतजिनकीयोसबआठोजांमसोईसाधूजाकेउरएक  
भगवानजु॥१७॥साधूहीकेसंगतेस्वरूपज्ञानहीत  
हेजेसेंआरसीकोमेलकाहतसीकलिगरमुषमेनफे  
रीकोऊवहेवाकोपोतहे॥जेसेबैदनेंनसेसलाकमेलि  
सुधकरेपटलगएतंतहांजोंकीत्योंहीजोतहे॥जेसें

वायुवाटरविषेरकेंउडाईदेतरवितोआकासमांहीस  
 दाईउद्योतहे॥सुंदरकहतअमछिनमेंविलाईजातसा  
 धूहिकेसंगतेस्वरूपज्ञानहोतहे॥१८॥संतजनआयेहे  
 सोपरउपकारकौमृतकंदादुरजीवसकलजीवायेजिन  
 वर्षतबांनीसुषमेंघकीसीधारकौ॥देतउपदेसकेउस्वा  
 र्थनलवलेसनिसदिनकर्तहेंब्रह्महिबिचारकौ॥और  
 उसंदेहसबमेटतनिमषमांहीसूर्जमिटआईदेतजेसेअं  
 धकारकौ॥सुंदरकहतहंसवासीसुःषसागरकेसंत  
 जनआएहेंसोपरउपकारकौ॥१९॥संतनिकेसमकहो  
 औरकहादीजीयेहीराहीनलालहीनपारसनचिंता  
 मनीऔरउअनेकनगकहोकहाकीजीये॥कामधेन  
 सुरतरुचंदननदीसमुद्रनौकाहूजिहाजबेठकबहूक  
 छीजीये॥पृथ्वीआपतेजवायूव्योमलौंसकलजडचंद  
 सूरसीतजलतपतगुनलीजीये॥सुंदरविचारहमसो  
 धेसबदेषेलोकसंतनिकेसमकहोऔरकहादीजीये  
 ॥२०॥संतनिकीमहीमातोश्रीसुःषसुनाईहेजिनतन  
 मनप्रानदीनोसबमेरेहेतऔरउममत्वबुधीआपनी  
 उठाईहे॥जागतउसोवतउगावतहेंमेरेगुनकरत



भजनध्यानदूसरीनकाईहे॥ तिनकेमेपीछेलग्योफि  
 रतहो॥ निसदिनसुंदरकहतमेरीउनतेबडाईहे॥ वहे  
 मेरेप्रीयमेंहो॥ उनकेआधीनसदासंतनिकीमहीमा  
 तोश्रीमुःषमुनाईहे॥ २१॥ साधूकीपरीषाकोउकेसे  
 करिजानहेंजगतज्योहारसबदेषतहेऊपरकोअंतः  
 नर्ककोतोनेकनपहीचानहें॥ छाजनकेभोजनकेहल  
 नचलनकलूआरकोऊक्रीयाकेतोमध्यदूबधानहे॥  
 आपनेईअवगूनआरोयेअज्ञानीजीवसुंदरकहत  
 तातेनिंदाहीकौठानहें॥ भावमेतोअंतरहेरातिअरु  
 दिनकेसोसाधूकीपरीषाकोउकेसेकरिजानहें॥ २२॥ सं  
 तनिकीनिंदाकरेसोतोमहानीचहेऊहीदगाबाजउही  
 कुष्टीजुकलंकभस्योऊहीमहापापीवाकेनषसिषकी  
 चहे॥ ऊहीगुरुद्रोहीगौब्राह्मणहननहारऊहीआत  
 माकोघातीहिंसीवाकेबीचहे॥ ऊहीअथकोसमुद्रऊ  
 हीअगकोपहारसुंदरकहतवाकीबुरीभांतमीचहे॥  
 ऊहीहेमकेछऊहीचंडालबुरेतेंबुरोसंतनिकीनिंदाक  
 रेसोतोमहानीचहे॥ २३॥ संतनकोनिंदैताकोसत्याना  
 सजाईहेपरिहेबिजुरीताकेऊपरसोअचानकधूरिउ

डिजायकहू ठोरनहीपाईहे॥पीछेकेउयुगमहानरक  
 मेपरेजाईउपरतेजमहूकीमारबहूषाईहे॥ताकेपीछे  
 भूतप्रेतथावरजंगमजोनीसहेगोसंकटतबपीछेपछ  
 ताईहे॥सुंदरकहतओरभुगतेअनंतदुःषसंतनिकौनि  
 देताकौसत्यानासजाईहे॥२४॥कूपमेंकोमीडकसोंकू  
 पकौंसरावतहेराजहंससौंकहतकेतोतेरोसरहे॥मस  
 काकहतमेरीसरभरकौनउडेमेरेआगेगरुडकीकेती  
 एकजरहे॥गुवरीलगोलीकौलुटाईकरिमोनेमोदम  
 धूपकौनिंदतसुगंधजाकौघरहे॥अपनीनजानेग  
 तिसंतनिकोनामधरेसुंदरकहतदेषोअसेमूढनरहे  
 ॥२५॥कौउसाधूभजनीकहूतोलयलीनअतिकबहू  
 प्रारब्धकर्मधकाआईदयौहे॥जेसेंकौउमारगमेच  
 लतेआषुडिपरेफेरीकरिउठेतबउहेपंथलयौहे॥जे  
 सेंचंद्रमाकीपुनिकलाछीनहोईगईसुंदरसकललो  
 कहूतीयाकौनयोहे॥देवहूकोदेवातनगयोतामेक  
 हाभयोपीतरकोमोलसोतोनाहींकछूगयोहे॥२६॥  
 संतनिकोगुनगहेसोतोबडभागीहेताहीकेभगति  
 भावउपजेहेअन्नायासजाकामतिसंतनिसौंसदाअ

नुरागी है ॥ अति सुःख पावेता के दुःख सब दूर होई और  
 ही का हू की जिन निंदा सुःख त्यागी है ॥ संसार की पास का  
 टी पाई है परम पद सत्त संग ही तेज के असीम तिजागी  
 है ॥ सुंदर कहत ना को तुरत कल्यांन होई संतनिको गु  
 न गहे सोई बड भागी हैं ॥ २७ ॥ संतनिकी सेवा करे सो  
 ई निस्तार है जोग जज्ञ जप तप तीर्थ वृता दीदान साधन  
 सकल नहिया कीसर भर है ॥ और देवी देवता उपास  
 ना अनेक भांति संकसब दूर करिति न ते न हर है ॥ सब  
 ही के सीस पर पाव दे मुगति होई सुंदर कहत सो तो ज  
 न में न मर है ॥ मन वच काय करि अंतर न राखे कछू संत  
 निकी सेवा करे सोई निस्तार है ॥ २८ ॥ संत जन नि सदि  
 न ले बोई करतु है प्रथम सुजस लेत सील हू संतोष लेत  
 क्षमा दया धर्म लेत पाप ते डरतु हैं ॥ इंद्रनी कौंधेरी लेत  
 मन ही कों फेरी लेत जोग की जुगतिले त ध्यान ईधरतु  
 है ॥ गुरु को बचन लेत हरी जी को नाम लेत आतमा कों  
 सो धिले त भौजल तरतु हैं ॥ सुंदर कहत जग संत कछू  
 लेत न ही संत जन नि सदिन ले बोई करतु है ॥ २९ ॥ संत  
 जन नि सदिन दे बोई करतु हैं साचो उपदेस देत भली भ

लीसीषदेतसमतासुबुधीदेतकुमतिहरतुहे॥मारग  
 दिषाईदेतभावहुभगतिदेतप्रेमकीप्रतीतिदेतअभरा  
 भरतुहे॥ज्ञानदेतध्यानदेतआतमाविचारदेतब्रह्मको  
 बताईदेतब्रह्ममेचरतुहें॥सुंदरकहतजगसंतकछूदेत  
 नाहींसंतजननिसदिनदेवोईकरतुहें॥३०॥ ॥इतिसा  
 धूकोअंगसमाप्तः॥अंग२२॥ ॥७॥ ॥७॥  
 अथज्ञानीकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदइंद्रवजय॥ ॥जा  
 केअदेमहीज्ञानप्रकासतताकोस्वभावरहेक्योंहीछानों  
 ॥नेनमेवेनमेसेनमेंजानीयेऊठतबेठतहीअलसानों  
 ॥ज्योंकछूभक्षकीयोउदगारतकेसेंहीराधीसकेनअ  
 घानों॥सुंदरदासप्रसिद्धदिषावतधानोकेषेतपरार  
 तेंजानों॥१॥ज्ञानप्रकासभयोजिनकेउरवेघटक्योंही  
 छिपेनरहेगेंभोडलमाहीदुरेनहीदीपकजद्यपिवेमुः  
 षभोनगहेंगे॥ज्योंघनसारहीगोव्यछिपावततोही  
 स्रगंधहीतग्यलहेंगे॥सुंदरओरकहाकोउजानतबू  
 ठेकीबातबटाउकहेंगे॥२॥बोलतचालतबेठतऊठ  
 तपीवतघातहूसूंघतस्वासे॥ऊपरतोव्यवहारकरेस  
 बभीतरस्वप्नसमानजुभासें॥लोकरितीरपतालकों

साधतमारतहेपुनफेरअकासे॥सुंदरदेहक्रियासब  
 देशतकोऊकपावतज्ञानीकोआसे॥३॥बैठेतोबैठेचले  
 तोचलेपुनीपीछेतोपीछेहीआगेतोआगे॥बोलेतोबो  
 लेनबोलेतोमोनिहीसोवेतोसोवेरुजागेतोजागे॥षाईतो  
 षाईनहीतोनिहीजुग्रहेतोग्रहेपुनित्यागेतोत्यागे॥सुंदर  
 ज्ञानिकीएसीदशाग्रहजानेनहीकछूरागविरागे॥४॥  
 देशतहेपेकछूनहीदेशतबोलतहेनहीबोलबषाने॥  
 सूंघतहेनहीसूंघतघ्रानसुनेंसबहेनसुनेंयहकाने॥  
 भक्षकरेअरुनाहीभषेकछूभेटतहेनहीभेटतप्राने॥ले  
 तहेदेतहेलेतनदेतहेसुंदरज्ञानिकीज्ञानिहीजाने॥५॥  
 काजअकाजभलेनबुरोकछूउत्तममध्यमद्रष्टनआवे  
 ॥कायकवायकमानसकर्मसुआपविषेनतिहूठहरा  
 वे॥हूंकरीहोनिकीयोनकरोअबयौंमनइंद्रनिकोवर  
 तावे॥दीसतहेव्यवहारविषेनितसुंदरज्ञानीकीकोउ  
 कषावे॥६॥देशतब्रह्मसनेपुनिब्रह्महीबोलतहेसोईब्र  
 ह्महीबानी॥मोमीहूनीरहीतेजहूवायूहूव्योमहूब्रह्म  
 जहांलगभानी॥आदीहूअंतहूमध्यहूब्रह्महीहेसबब्र  
 ह्मयहेमतिठानी॥सुंदरज्ञेअरुज्ञानहूब्रह्महेआपहूब्र

हमहीजानतज्ञानी॥७॥बेठतकेवलऊठतकेवलंबोल  
तकेवलबातकहीहैं॥जागतकेवलसोवतकेवलजो  
वतकेवलद्रष्टीलहीहैं॥भूतहूकेवलभव्यहूकेवलव  
र्ततकेवलब्रह्मसहीहे॥हेसबहीअर्धमुर्धसकेवल  
सुंदरकेवलज्ञानउहीहे॥८॥केवलज्ञानभयोजिनके  
उरतेअर्धउर्धसलोकनजाही॥व्यापकब्रह्मअखंड  
निरंतरवाविनओरकहूंकछूनाही॥ज्योंघटनासभये  
घटव्योंमसलीनभयोपुनहेनभमांहीत्योंपुनीमुक्तिज  
हांवपुछाडतसुंदरमोक्षसिलाकहूकाही॥९॥आदी  
हूतो नहिअंतरहेनहीमध्यवारीरभयोभ्रमकूपा॥भा  
सतसेकछूओरकोओरईज्योंरजुमेअहीसीपमेस्त्वा  
॥देवीमरीचिउठ्योविचविभ्रमजानतनाहीउहेरवि  
धूपा॥सुंदरज्ञानप्रकासभयोजवएकअखंडितब्रह्म  
अनूपा॥१०॥ ॥छंदमनहर॥ ॥जाहीकेविवेकज्ञा  
नताहीकेकुसलभयोजाहीवोरजाईवाकोंताहीवोर  
सुःषहें॥जेसेंकोईपायनीपेजारकोंचढाईलेंतताकों  
तो नकोउकाटेषोभरेकोदुःषहे॥भावेकोउनिंदाकरे  
भावेतोप्रसंसाकरेवेतोदेषेआरसीमेंआपनोईमुः

षहे॥ देहको व्योवारसवमिथ्याकरजानतहे सुंदर कह  
 त एक आतमा ही रूपहे॥११॥ अंतःकरन जाके तम गुन  
 छाई रह्यो जडता अज्ञान वाके आलस भैवासहे॥ रज  
 गुनको प्रभाव अंतःकरन जाके विविध कर्म वाके कामना  
 कोवासहे॥ सत्यगुन अंतःकरन जाके देषीयत क्रयाक  
 रिसुद्ध वाके भक्तिको निवासहे॥ त्रिगुण अतीत साक्षी  
 तुरिया स्वरूप जान सुंदर कहत वाके ज्ञानको प्रकास  
 हे॥१२॥ तमोगुन बुधी सो तोत वाके समान जे सेता के  
 मध्य सुरज की रच हू न जोतहे॥ रजोगुन बुधी जे से आ  
 रसी को उंधो वोरता के मध्य सूर्ज की कछूक उद्योतहे॥  
 सत्यगुन बुधी जे से आरसी की सूधी ओरता के मध्य प्र  
 तिबिंब सूर्ज को पोतहे॥ त्रिगुन अतीत जे से प्रतिबिंब  
 मिटी जात सुंदर कहत एक सूर्ज ही होतहे॥१३॥ सब से  
 उदासी होई काढि मन भिन्न करेता को नाम कहीयत प  
 र्म विरागहे॥ अंतःकरन हु की वासनानि वर्त्त होई ताको  
 मुनी कहत हैं उहे वडो त्यागहे॥ चित्त एक ईस्वर सने क  
 हन न्यारो होई उहे भक्त कहीयत उहे प्रेम मार्ग हे॥





नजतीहेनसूंमहेनसतीहेनराजाहेनरंकहेनतनहे  
 नमनहे॥सोवेहेनजागेहेनपीछेहेनआगेहेनग्रहे  
 हेनत्यागेहेनघरहेनवनहे॥स्थीरहेनडोलेहेनमोनि  
 हेनबोलेहेनबंधेहेनघोलेहेनस्वामीहेनजनहे॥वे  
 सोकोउहोवेजबवाकीगतीजानेंतवसुंदरकहतज्ञा  
 नीज्ञानसुधधनहे॥१८॥ ॥इतिज्ञानीकोअंगस  
 माप्तः॥ ॥अंग२२॥ ॥ध्रु॥ ॥अथसारव्यज्ञा  
 नकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहरा॥ ॥छितीजल  
 पावकपवननप्तमीलिकरीसब्दरुसपरसरूपरस  
 गंधजूश्रोत्रत्वक्चक्षुघ्राणरसनारसकोज्ञानवाक  
 पाणीपादगुदाउपस्थहिबंधजू॥मनबुधित्त  
 हंकारएचोवीसतत्त्वपचीसमोजीवतत्त्वकरतहेद्वं  
 धजु॥षटवीसमोहेब्रह्मसुंदरसुनिहकर्मव्यापक  
 अर्षडएकरसनिरसंधजु॥१॥श्रोत्रदिगत्वक्वा  
 यूलोचनप्रकासरविनासिकाअस्यनिजिह्वावरुन  
 बषांनीये॥वाकअग्निहस्तइंद्रचंद्रउपेन्द्रवलमेदु  
 प्रजापतिगुदामृत्यहूकोंटांनीये॥मनचंद्रबुधीवि  
 धित्तवासुदेवआहीअहंकाररुद्रकोप्रभावक

रिमानीये॥ जाकी सतापाई सब देवता प्रकासत हैं सुंदर  
 सो आतमा ही न्यारो करि जानीये ॥ २ ॥ ॥ छंद इंद्र वज्र  
 य ॥ ॥ औत्र सनेद्र गदेष तहे रसनार सघान सगंध पि  
 यारो ॥ कोमलता त्व कजान तहे पुन बोलत हे सुषराब्द  
 ऊंचारो ॥ पाणी ग्रहे पद गौन करे मल मुत्र तजे उभयो  
 अध द्वारो जाके प्रकासे प्रकासत हैं सब सुंदर सो ईर हे  
 घट न्यारो ॥ ३ ॥ बुधि भ्रमे मन चित भ्रमे अहंकार भ्र  
 मे कहा जानत नाही ॥ औत्र भ्रमे त्व कघान भ्रमे रस  
 नां द्रगदेषी दसो दिस जाही ॥ वाक्य भ्रमे कर पाद भ्र  
 मे गुद द्वार उपस्थ भ्रमे कहू काही ॥ तेरे भ्रमाए भ्रमे स  
 बही पुनी सुंदर तू क्यौं भ्रमे ऊन मांही ॥ ४ ॥ बुद्धि को बु  
 द्धि रूचित को चित अहं को अहं मन को मन को मन बो  
 ई ॥ नैन को नैन हे बेन को बेन हे कान को कान तु चालक  
 होई ॥ घ्रान को घ्रान हे जीभ को जीभ हे हाथ को हाथ  
 पगे पग दोई ॥ सीस को सीस हे प्रान को प्रान हे जीव को  
 जीव हे सुंदर सोई ॥ ५ ॥ ॥ छंद मन हर ॥ ॥ प्रहृष्ट ॥  
 के से के जगत य हर न्यो हे जगत गुरु मो सो कहो प्रथ  
 म ही को न तत्व की नो हे ॥ पुर्ष के प्रकृति के महत त्व अ

हंकार किधों उपजायत मरजसतीनोहे ॥ किधोव्यो  
 मवायु तेज आपकै अवनी कीन कीधों पंचविषय प  
 सार करीलीनोहे ॥ किधों दस इंद्रि किधों अंतःकर्ण की  
 न सुंदर कहत किधों सकल बहीनोहे ॥ ६ ॥ ॥ छंद मन  
 हर ॥ ॥ उत्तर ॥ ॥ ब्रह्म ते पुरुष अरु प्रकृति प्रगट भई  
 प्रकृति ते महत त्व पुन अहंकार हे ॥ अहंकार हूते तीन  
 गुन सत्वरजतमत म हूते महाभूत विषय पसार हैं ॥ र  
 ज हूते इंद्रि दस प्रथक प्रथक भई सत्त्व हूते मन आदी  
 देवता विचार हे ॥ असे अनुक्रम करी सीषकों कहत  
 गुरु सुंदर सकल यह मिथ्या भ्रम जार हे ॥ ७ ॥ ॥ प्रश्न  
 ॥ मेरो रूप भोमी हे के मेरो रूप अपहे के मेरो रूप तेज  
 हे के मेरो रूप पो न हे ॥ मेरो रूप व्योम हे के मेरो रूप इंद्रि  
 दस अंतःकर्ण हे के बेटी हे के गोन हे ॥  
 अहंकार महत त्व प्रकृति पुरुष किधों बोले हे के मोन हे  
 मेरो रूप स्थूल हे के संन्य आह ॥  
 रु मेरो रूप को न हे ॥ ८ ॥ ॥ उत्तर ॥ ॥ तूं तो कछू भोमी  
 नाहीं आप तेज वायू नाहीं व्योम पंचविषे नाहीं सो तो  
 भ्रम कूप हे ॥ तूं तो कछू इंद्रि अरु अंतःकरण नाहीं त

गुनतूतो नही न तो छांही धूपहे ॥ तू तो अहंकार नाही पु  
 नी महत्तत्त्व नाही प्रकृती पुरुष नाही तू तो स्व अन्नूपहे ॥  
 सुंदर विचार ऐसे सिष सों कहत गुरु नाही नाहीं कहत  
 रहे सो तेरो रूपहे ॥ ९ ॥ तेरो तो स्वरूपहे अन्नूप चिदानं  
 व्यन देह तो मलीन जड या विवेक की जीये ॥ तू तो नि  
 ह संग निराकार अविनासी अज देह तो विनास वंत ताही  
 नही धी जीये ॥ तू तो षठ उर मीर हित सदा एकर संदेह के  
 विकार सब देह सिर दी जीये ॥ सुंदर कहत यों विचार =  
 आपु भिन्न जानी परकी उपाधी कहा आप धेंचली जीये  
 ॥ १० ॥ देह ही नरकरूप दुःख को न चार पार देह ही स्वर्गरू  
 प जूठो सुख मान्यो हे ॥ देह ही कौं बंध मोक्ष देह ही अप्रो  
 क्ष प्रोक्ष देह ही के कीया कर्म सुभार सुभठान्यो हे ॥ देह  
 ही मे और देह पुसी कै विलाष करे ताही कोंस मजु विना  
 आत मा बंधान्यो हे ॥ दोउ देह ते अलिप्त दोउ कौ प्रकास  
 कहे सुंदर चैतन्य रूप न्यारो करि जांन्यो हे ॥ ११ ॥ देह हले  
 देह चले देह ही सों देह मिले देह षाई देह पीवे देह ही भर  
 त हे ॥ देह ही हिमारे गरे देह ही पावक जरे देह रन मांही  
 जूझे देह ई परत हे ॥ देह ई अनेक कर्म करत विविध भां

तीचमककीसतापाईलोहजोंफिरतहे॥आतमाचैत  
 न्यरूपव्यापकसाक्षीअनूपसुंदरकहतसोतोजन्मे  
 नमरतुहे॥१२॥देहयहकिनकोदेहपंचभूतनिकोपंच  
 भूतकोनतेहेतामसअहंकारते॥अहंकारकोनतेहे  
 जासोमहतत्वकहेमहतत्वकोनतेहेप्रकृतिसंसारते॥  
 प्रकृतीसोकोनतेहेगुरुहेजाकोनामपुर्वसोकोनतेहे  
 ब्रह्मनिराधारते॥ब्रह्मअबजान्योहमजान्योहेतोनि  
 श्चेकरनिश्चेहमकीयोहेतोचुपसुःषट्कारते॥१३॥ए  
 कघटमाहीतोसुगंधजलभरीराख्यौएकघटमाहीतोदु  
 र्गंधजलभर्यौहे॥एकघटमाहीपुनीगंगोदकराख्यौ  
 आनीएकघटमाहीतोआनीभदीराउकराख्यौहे॥एकघृ  
 तएकतेलएकमाहीलगुनीतसबहीमेंसविताकोप्रति  
 बिंबपख्यौहे॥तेसेहीसुंदरउंचनीचमध्यएकब्रह्मदे  
 हभेददेषीमिन्नमिन्ननामधख्यौहे॥१४॥भोमपरअ  
 पअपहूकेपरेपावकहेपावककेपरपुनीवायूहूबह  
 तहे॥वायूपरेव्योमव्योमहूकेपरइंद्रीदशइंद्रनिकेपर  
 अंतःकरनरहतुहे॥अंतःकरनपरतीनोगुनअहंका  
 रअहंकारपरमहतत्वकोलहतुहे॥महतत्वपरमूल

मायामायापरब्रह्मताहीतेंपरातपरसुंदरकहतुहे॥

१५॥ भूमतोविलीनगंधगंधतोविलीनअपअपहूवि  
लीनरसरसतेजषातहे॥ तेजरूपरूपवायूहीसपर्स-  
लीनसोसपर्सव्योमशब्दतमहीविलातहे॥ इंद्रीदसर  
जमनदेवताविलीनसत्त्वतीनगुनअहंममतत्वगलि  
जातुहे॥ महतत्वप्रकृतिरुप्रकृतिहूपुर्षलीनसुंदरपुर्ष  
जाईब्रह्ममेंसमातुहे॥ १६॥ आतमाअचलसुधएक  
रसहेसदादेहविवहारनिमेदेहहीसौजानीये॥ जेसें  
ससीमंडलअभंगनहीभंगहोईकलाआवेजाईघट  
बढसोवषानीये॥ जेसेद्रुमसुंथिरनदीकेतटदेधीय  
तनदीकेप्रवाहमांहीचलतेसोमानीये॥ तेसेंआतमा  
अनंतदेहकोंप्रकासकरेसुंदरकहतयोविचारीअम  
सांनीये॥ १७॥ आतमाचारीरदोऊएकमेकदेधीयत  
जबलगअंतःकर्नमेंअज्ञानहेजेसेंअंधीयारीरेनंध  
रमेंअंधेरोहोईआंधनिकोतेजज्यौंकोत्योहीविदमान  
हे॥ जद्यपिअंधेरेमांहीनेनकौंसूजेकलूतद्यपिअंधे  
रेसौंअलेपसोवषानीये॥ सुंदरकहततोलेंएकमेक  
जानीयतजोलेंनहींप्रगटप्रकासज्ञानमानहें॥ १८॥ दे

सुषपतिऋदेमें विलीन होई जात सब जाग्रत स्वपन की  
 तो सुधिन लहतु हे ॥ तीन हू अवस्था कोई साक्षी न बजने  
 आपतुरीया स्वरूप यह सुंदर कहतु हे ॥ २५ ॥ ॥ छंद  
 इंद्र वजय ॥ ॥ सोमी ते सूसक्षम अप को जान हू अप ते  
 सक्षम तेज को अंगा ॥ तेज ते सक्षम वायू वह नित वायू  
 ते सूसक्षम व्योम उतंगा ॥ व्योम ते सक्षम हे गुन तीन ति हूं  
 ते अहं मह तत्त्व प्रसंगा ॥ ता हू ते सूसक्षम मूल प्रकृति जु मू  
 ल ते सुंदर ब्रह्म अ संग ॥ २६ ॥ ब्रह्म निरंतर व्यापक अ  
 ग्नि अ रूप अ षंडित हे सब मां ही ॥ ईश्वर पाव करा सि  
 प्र चंड जु संग उपा धिली ये वर तां ई ॥ जीव अनंत म सा  
 ल चिराक सदीप पतंग अनेक दिषां ई ॥ सुंदर द्वैत उपा  
 ध मिटे जब ईश्वर जीव जु देक लूना ही ॥ २७ ॥ ज्यों नर पा  
 व कलोहत पावत पाव कलोह मिले सदिषां ही ॥ चोट अ  
 नेक परे धन की सिर लोह वधे कलू पाव कना ही ॥ पाव क  
 लीन मयो अपने धर सीतल लोह मयो तव तां ही ॥ त्यों  
 यह आतम देह निरंतर सुंदर भिन्न रहे मिली मां ही ॥ २८  
 ॥ आत्म चैतन्य सत्त्व निरंतर भिन्न रहे कहूं कि मन होई  
 ॥ हे जड चैतन्य अंतःकर्तु सद् अ सत्त्व लीये गुन दोई ॥

देह अस्फुटमलीनमहाजडहालनचालसकेपुनवोई॥  
 सुंदरतीनविभागकीयेविनभूलिपरेअमतेसबकोई  
 ॥२९॥ ॥लुंदइंद्रवजय॥ ॥ब्रह्मअरूपअरूपीपावक=  
 व्यापकजुगलनदीसतरंग॥देहदारतेप्रगटदेपीयतअं  
 तःकर्नअग्निहूयअंग॥तेजप्रकासकल्पनातौलगिज्यो  
 लगरहेऊपाधीप्रसंग॥जहांकेतहांलीनपुनहोईसुंदर  
 दोईसदाअभंग॥३०॥देहसरावतेलपुनिमारुतबाति  
 अंतःकर्नविचार॥प्रगटजोतियहचैतनदीसेजातेभये  
 सकलउजीयार॥व्यापकअग्निमथनकरिजोएदीपक  
 बहुतभातिविस्तार॥सुंदरअद्भुतरचनातेरीतूहीएक  
 अनेकप्रकार॥३१॥तिलमेतैलदुधमेघृतहेदारमाही  
 पावकपहीचान॥पुहपमांहीज्युंप्रगटवासनाईषमांही  
 रसकहतवषान॥पोसतिमांहीअफीमनिरंतरवनस्य  
 तिमेंसहतप्रमान॥सुंदरभिन्नमित्योपुनीदीसतदेहमा  
 हीयोंआतमजान॥३२॥जाग्रतसुषुषोपतितीनों  
 अंतःकर्नअवस्थापावे॥प्रानचलेजाग्रतअरुस्वमसु  
 षोपतिमेकछूवेनरहावे॥प्रानगएतेरहेनकोउसक  
 लदेषतांथाटबिलावे॥सुंदरआतमनित्यनिरंतरसो



तो कित हूं जायन आवे ॥ ३३ ॥ पंद्रह तत्व स्थूल कुंभ में  
 सूक्ष्म लिंग भस्त्रौ ज्यौं तोय ॥ यहं जीव उहां आभा दी  
 से ब्रह्म इंदु प्रति बिंब दोय ॥ घट फुटे जलगयो विलेकै  
 अंतः कर्न कहें ही कोय ॥ तब प्रति बिंब मिले ससी ही  
 मही सुंदर जीव ब्रह्म होय ॥ ३४ ॥ ॥ छंद मन हर ॥

॥ जैसे व्योम कुंभ के बाहेर अरु भीतर हुको उ नर कुंभ कूं  
 हजार को सलेगयो ॥ ज्यौं हि व्योम इहां लुही उहां पुनी हे  
 अषंड इहां न विछोहन तो उहां मिलाप कै भयो ॥ कूंभ तो  
 नयो पुराणो होई के विन सिजाई व्योम तो न हे पुरां नोन  
 तो कलू है नयो ॥ तैसे ही सुंदर देह आवेर है ना स होई आ  
 त्मा अवल अविनासी हे अनामयो ॥ ३५ ॥ देह के संजोग  
 हिते कटुक मधुर स्वाद देह के संजोग कहै षाटो षारौ लौ  
 न कौं ॥ देह के संजोग कहै मूषते अनेक बात देह के संजोग  
 हि पकरि है मौं न कौं ॥ सुंदर देह के संजोग दुःख माने सुख  
 माने देह के संजोग गयो दुःख सुख कौं न कौं ॥ ३६ ॥ आपु  
 की प्रसंसा सुनि आप हि षु साल होई आपु हि की नीद्या सु  
 नि आप सु रजाई है ।

वत हैं ॥ आपु हि को दुःख मानी आपु दुःख पाई हे ॥ आपु

हि कीरसाकरे आपुहि कीघातकरे आपुहि हत्यारोहो  
 ईगंगा जोई न होइ है ॥ सुंदर कहत ऐसे देहहि को आपु  
 मानी नीजरूप भूलिके करत हाई हाई है ॥ ३७ ॥ ॥  
 इति सांख्यज्ञानको अंग समाप्तः ॥ ॥ अंग २३ ॥ ॥  
 अथ अपने भाव को अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद इंदव जया ॥  
 ॥ एक ही आपनो भाव जहां तहां बुद्धिके जोगतें विभ्रम  
 भासे ॥ जो यह क्रूर तों क्रूर वही पुनीया के सिषे ते उहां पु  
 नीयां से ॥ जो यह साधू तो साधू उहां पुनीया के हसे ते उहां  
 पुनीया से ॥ जो सोई आप करे मुःष सुंदर ते सोई दर्पन मां  
 ही प्रकासे ॥ १ ॥ ॥ छंद मनहरा ॥ ॥ जे से स्नान काच के स  
 दन मध देषी और भूकी भूकी मरत करत अभिमानजू  
 ॥ जे से गज फटिक सिला सों अरितो रे दंत जे से सिंघ कू  
 प मां ही उजक भुलान जु ॥ जे से कौउ फेरीषात फिरत सु  
 देषे जग ते से ही सुंदर सब ते रोई अज्ञानजू ॥ आपनो  
 ही भर्म सो तो दूसरो दिषाई दैत आप के विचारे को उदू स  
 रो न आनजू ॥ २ ॥ नीच ऊच मलो बुरो सज्जन दुर्जन पु  
 नी पंडित मूर्ख सत्रु मित्र रंकराव हे ॥ मान अपमान पुन्य  
 पाप सुष दुःष दोऊ स्वर्ग नर्क बंध मोक्ष हू कोचाव हे ॥ देव

ता असुरभूतप्रेतकीटकंजरऊपसुअरूपंछीस्वान  
 सूकरविलाचहे॥ सुंदर कहत यह एकई अनेकरूप  
 जोई कछू देषीयेसौ आपनोई भाव्यहे॥ ३॥ याहीके  
 जागतकामयाहीकेजागतक्रोधयाहीकेजागतलोभ  
 येहीमोहमातोहे॥ याहीकोतोयाहीबेरीयाहीकोतो  
 याहीमित्रयाकोयाहीरुषदेतयाहीदुःषदाताहे॥ या  
 हीब्रह्मायाहीरुद्रयाहीविष्णुदेषीयतयाहीदेवदेत  
 यक्षसकलसंगाताहे॥ याहीकोप्रभावसोतोयाही  
 कोंदिषाईदेतसुंदरकहतयेहीआतमाविष्याताहे॥  
 ४॥ याहीकोतोभावयाकोंसंकउपजावतहेयाहीको  
 तोभावयाहीनिसंककरतुहे॥ याहीकोतोभावयाको  
 भूतप्रेतहोईलगेयाहीकोतोभावयाकीकुमतिहरतु  
 हे॥ याहीकोतोभावयाकोंवायूकोबधुराकरेयाही  
 तोभावयाहीथिरकंधरतुहे॥ याहीकोतोभावयाकों  
 धारमेंबहाईदेतसुंदरयाहीकोभावयाहीलेतरतुहे॥  
 ५॥ आपहीकोभावसोतोआपकोंप्रगटहोत  
 आरोपकरीआपमनलायोहे॥ देवीअन्यदेवकोउभ  
 वकोंउपासेताहीकहेमेतोपुत्रधनइनहीतेपायोहे॥

जेसेस्वानहाडकोचचोरकरिमानेमौदआपहीकौसुख  
फौरीलोहूचाटयायोहे॥तेसेहीसुंदरयहआपुहीचैत  
न्यआहीआपनेअज्ञानकरिओरसोवंधायोहे॥६॥

॥ छंदं द्रवजय ॥ ॥ नीचे ते नीचे रु उचे ते ऊपर आगे ते  
आगे हे पीछे ते पीछो ॥ दूर ते दूर नजीक ते नरे ही आडे ते  
आडो ही तीछे ते तीछो ॥ बाहीर भीतर भीतर बाहीर ज्यों  
कोउ जानत त्यों करइ छो ॥ जे सोई आपनो भाव हे सुंदर ते  
सो ही हे द्रग षोली के वीछो ॥ ७ ॥ आपनें भाव ते सूर सो  
दीस ते आपनें भाव ते चंद सो भासे ॥ आपनें भाव ते ता  
रे अनंत जु आपनें भाव ते विदूल तासे ॥ आपने भाव  
ते नूर हे ते ज हे आपनें भाव ते जोति प्रकासे ॥ ते सो हि  
त ॥ दि ॥ वत् ॥ दर ज से ॥ हा ॥ ते ॥ दी ॥ ते ॥

८॥ आपनेभावतेसेवकसाहिव आपनेभावसबेको  
 ७ ध्यावे ॥ आपनेभावतेअन्यउपासत आपनेभावते  
 भक्तहूगावे ॥ आपनेभावतेदुष्टसंघारत आपनेभा  
 वतेबाहीरआवे ॥ जेसेही आपनोंभावहेसुंदरताही  
 कोतेसोईहोईदिषावे ॥ ९॥ आपनेभावतेदूरबता  
 वत आपनेभावनजीकबषान्यौ ॥ आपनेभावते

दूधपिबायेनु आपनें भावतें विठलजान्यौ ॥ आपने  
 भावतें चारभुजापुनी आपने भावतें सिंधसोमान्यौ ॥  
 सुंदर आपने भावको कारन आपही पूर्णब्रह्मपिछान्यौ  
 ॥१०॥ आपने भावतें होई उदासजु आपने भावतें प्रेम  
 सोरोवे ॥ आपने भाव मिल्यो पुनी जानत आपनें भाव  
 तें अंतरजोवे ॥ आपने भावरहे नित जाग्रत आपने  
 भाव समाधिमे सोवे ॥ सुंदरजे सोई चावहे आपने तो  
 सोई आपत हांत हां होवे ॥११॥ आपने भावतें मूलप  
 र्यो ममदेहस्वरूप भयो अभिमानी ॥ आपने भावतें  
 चंचलता अति आपने भावतें बुद्धिधिरानी ॥ आपने  
 भावतें आपविसारत आपने भावतें आत्मज्ञानी ॥  
 सुंदरजे सोई भावहे आपने तो सोई होई गयो यह प्रानी  
 ॥१२॥ ॥ इति आपने भावको अंगसं० ॥ अंग २४ ७  
 ॥ अथ स्वरूपविस्मरको अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंद इंद्रव  
 जय ॥ ॥ जाघटकी उनहारहे जे सिहि ताघटचैतन्यते  
 सोई दीसे ॥ हाथीकी देहमे हाथी सोमानत चीटीकी दे  
 हमे चीटी करीसे ॥ शिंघकी देहमें शिंघ सोमानत की  
 सकी देहमे मानत कीसे ॥ जेसी उपाधी भई जहां सुंद

रतेसोईहोईरत्यो नषसीसैं॥१॥जेसेहीपावककाठके  
जोगतेंकाठसोहोईरत्योईकठोरा ६। ॥ जेसे ॥  
गतचोरसकाठमेंलागतचोरा॥आपनोरूपप्रकासक  
रेजबजारकरेतबओरकोओरा॥तेसैंहीसुंदरचैतन्य  
आपसुंआपकौंजानतनाहींनबोरा॥२॥ ॥छंदमन  
हर॥ ॥प्रश्न॥ ॥आपहीकौंआपभूलगयोसोतोका  
हेतेंअरजअमरअविगतअविनसीअजकहतसक  
लजनश्रुतिअवगाहेतें॥निर्गुननिर्मलअतिसुद्धनि  
र्वधनितएसैंहीकहतओरग्रंथनिकेथाहेतें॥आपक  
अषंडएकरसपरिपूरनहेसुंदरसकलरमिरत्योब्रह्म  
ताहेतें॥सहजसदाउद्योतयाहीतेंअचंभाहोतआपु  
हीकौंआपभूलगयोसोतोकाहेतें॥३॥ ॥छंदमन  
हर॥ उत्तर॥ आपहीकौंआपभूलगयोसकषचाहेतें  
जेसेंमीनमांसकौंनिगलिजातलोमलगिलोहको  
कंटकनहीजानतउमाहेतें॥जेसेंकपिगागरमेंसूठ  
बांधिराषेसठछांडनहीदेतसोतोस्वादहीकेवाहेतें  
॥जेसेंसुकजारीयरचूचमारीकटकतसुंदरसहतदुः  
षदेषयाहीलाहेतें॥देहकौंसंजोगपाईइंद्रिनकेवस

परयो आपही को आप भूलि गयो सुख चाहै ते ॥४॥ ॥  
 छंदइंद्रवजय ॥ ॥ देष हूचै तन मानत के सो ॥  
 हृषीये अति छाकत नाही किछु सद्ध हे भ्रम असे सो ॥ ज्यों  
 कोई पाई रहे ठग मूरी ही जानें नही किछु कारन ते सो ॥  
 ज्यों कोई बालक संकट पावत कं पिउते अरु आनत भे  
 सो ॥ ते से ही सुंदर आप को भूलि स देष हूचै तन माने हे  
 के सो ॥५॥ भूलि गयो भ्रम ते ब्रह्म आपे ज्यों कोई कूप में  
 जांकी अलापत ऐसी ही भांति सुकूप आलापे ॥ ज्यों जल  
 हालत हेल गि पोंन कहै भ्रम ते प्रति बिंब हिकां पे ॥ देह के  
 प्रा न के जे मन के कत मानत हे सब मोहिकों व्यापे ॥ सुंदर  
 पेच परयो अति से करि भूलि गयो भ्रम ते ब्रह्म आपे ॥६॥  
 ॥ ज्यों दूज को उकलां डि महा तम भूद्र भयो करि आप को  
 मान्यो ॥ ज्यों को उभू पति सो बत से जर करं क भयो स्वयं  
 मही जान्यो ॥ ज्यों को उरूप की रासी अत्यंत कुरूप करे भ्रम  
 म भै चक आन्यो ॥ ते से ही सुंदर देह सो होय के या भ्रम आप  
 ही आप भुलान्यो ॥७॥ अकई व्यापक वस्तु निरंतर वि  
 स्वन ही यह ब्रह्म विलासे ॥ ज्यों नट मंत्र नि सो द्रष्ट बांध  
 त हे कछू और ही और ही भासे ॥ ज्यों रजनी मही दूज्य





भर्मभयोहे।

१७६

॥तेसेंहीसुंदरनिजस्वरूपकोंविसा

॥आपकरील्योहे॥११॥भू

लिकेस्वरूपकोअनाथसोकहतुहेदीनदीनछ

होई

न भन्नमाहीदेहकेसंजोगपराधीन=

सोरहतुहे॥सीतलगेघांमलगेभूषलगेसोकमोहमा

नअतिषेदकोलहतुहे॥अंधभयोपंगुभयोमूकहूब

धीरभयोएसेमानीमानीभर्मनदीमेंबहतुहे॥सुंदरअ

धिकमोहीयाहीतेअचंभाआहीभूलिकेस्वरूपकोअ

नाथसोकहतुहे॥१२॥जेसेंकोईकहेमेतोस्वप्नेमेंऊठ

योजागिकरिदेवेउहीमनुषस्वरूपहे॥जेसेंकोईराजा

पुनीसोवतभिषारीहोईआंषउधरेतोमहाभूपनिको

भूपहे॥जेसेंकोउभर्महूतेकहेमेरोसिरकहांभर्मकेग

येतेजानेसिरतदरूपहे॥तेसेंहीसुंदरयहभर्मकरि

भूल्योआपभर्मकेगएतेयहआतमाअनुपहे॥१३

॥जेसेंकोईपोसतीकीपागपडीभौमीपरहाथलेकेंक

हेएकपागमेंतोपाईहे॥जेसेंसीधसलीमनोरथनिको

कीयोधरकहेमेरोधरगयोगागरीगिराईहे॥जेसेंका

हूं भूतल ग्यो बकत हे आक बाक सुद्धि सब दूर भई ओ  
 रे मति आई हे ॥ ते से ही सुंदर यह भर्म करि भूलो आप  
 भर्म के गए ते यह आतमा सदाई हे ॥ १४ ॥ आप ही चैत  
 न्य यह इंद्रि न चैत न्य करि आपु ही मगन होई आनंद व  
 ढायो हे ॥ जे से नर सीत काल सीव तनि हाली वोढ आप  
 ही तप त होई आप सुःष पायो हे ॥ जे से बाल लकरी को  
 घौरा करि डाक चढे आप असवार होई आप ही कुदायो  
 हे ॥ ते से ही सुंदर यह जड को संजोग पाय आप सुःमानि  
 मां नि आप ही भुलायो हे ॥ १५ ॥ कहूं भूल्यो काम रत कहूं  
 भूल्यो साधी जत कहूं भूल्यो ग्रेह मध्य कहूं बन बासी  
 हे ॥ कहूं भूल्यो नीच मान कहूं भूल्यो मोह बांधी कहूं तो  
 उदासी हे ॥ कहूं भूल्यो मोन धरे कहूं बक बाद करे कहूं  
 भूल्यो मके जाय कहूं भूल्यो कासी हे ॥ कहत सुंदर अ  
 हंकार हू ते भूल्यो आप एक आवेरो ज अरु दूजे आवे  
 हासी हे ॥ १६ ॥ में बहूत दुःष पायो में बहूत सुःष पायो  
 मे अनंत पुंन्य कीये मेरे अति पाप हैं ॥ मे कुलीन विद्या  
 वंत पंडित प्रवीन महा मे तो भूढ अकुलीन मेरो नीच  
 बाप हैं ॥ मे हों राजा मेरी आण फिरे चहू चक्र मां ही मे

सोरंकद्रव्यहीनमोहीतोसंतापहें॥सुंदरकहतअहं  
 कारहीतेजीवमयोहंकारगणेशहएकब्रह्मआपहें  
 ॥१७॥देहईरूपपुष्टलगेदेहईदूबरीलगेदेहईकोंसीत  
 लगेदेहहीकोंतावरो॥देहईकोंतीरलगेदेहईकोंतोप  
 ॥देहईकोंक॥देहईकोंगंधावरो॥देहईस्वरूप  
 लगेदेहईकुरूपलगेदेहईजोवनलगेदेहवृधडावरो॥  
 देहईसोबाधीहेतआपविषेमानीलेतसुंदरकहतए  
 सोबुधीहीनबावरो॥१८॥ ॥छंदइंद्रवजय॥ ॥आप  
 हीचैतनब्रह्मअषंडितसोअमतेकछूअन्नपरेषे॥ढूढ  
 तताहीफिरेजितहीतीतसाधतजोगबनावतमेषे॥ओ  
 रउकष्टकरेअतिसंकरप्रतक्षआत्मतत्वनपेपे॥सुंदरभू  
 लआपनिजरूपहीहेकरकंकनदर्पनदेपे॥१९॥शूत्रग  
 ॥मिलीमयोद्वजब्राह्मनहोयकेब्रह्मनजान्यो॥क्ष  
 त्रियहोयकेक्षित्रधर्योसिरहयमयपयदलसोमन  
 ॥वैश्यमयोवपुकीवयदेष्टतजूठप्रपंचवनिजही  
 ठान्यो॥सूद्रमयोमिलिसूद्रसरीरहिसुंदरआपनहीप  
 हीचान्यो॥२०॥ज्यौरविकौरविढूढतहेकहूंतममिलेत  
 नसीतगमाउं॥ज्यौंससिकोंससिचाहतहेपुनीसीत

लङ्कैकरीतमबुजांऊं॥ज्यौंकोउसांनभएनरदेरतहेधर  
 मेंअपुनेधरजांऊं॥सौंयहसुंदरभूलिस्वरूपहीब्रह्मक  
 हेकबब्रह्महीसांऊं॥२१॥आपुनदेष्टतहेअपनोमुःष  
 दर्पनकाटलग्योअतिथूला॥ज्यौंद्रगदेष्टततेरहिजात  
 मयोजबहीपुत्तरीपरिफूला॥छायअज्ञानरह्योअति  
 अंतरजानिसकैनहीआत्ममूला॥सुंदरयोउपज्योभन  
 केमलज्ञानविनानिजरूपहीमूला॥२२॥देहस्वरूप  
 मयोमुःषबोलेंदीनहूओविललातफिरेनितइंद्रिनके  
 वसछिककछोले॥सिंघनहीअपनोबलजानतजंबु  
 कज्यौंजितहीतितडोले॥चैतनताविसराईनिरंतरले  
 जडताअमगांठनषोले॥सुंदरभूलगंयोनिजरूपहीदे  
 हस्वरूपमयोमुःषबोले॥२३॥देहस्वरूपमयोअभि  
 मानीमिसर्षीयासकषसेजसुःषासनहयगजसौंमीमहा  
 रजधानी॥होंदुःषीयादिनरेनभरौदुःषमोहिविपतिप  
 रीनहिछांनी॥हौंअतिउत्तमजातिबडोकुलहोअतिनी  
 चक्रियाकुलहानी॥सुंदरचैतन्यतानसंभारतदेहस्व  
 रूपमयोअभिमानी॥२४॥गर्भविषेउतपतिभईजब  
 जन्मलियोसिसुसुखनजानी॥बारुकुंवारकिसोरजु

वादिकवृद्धमयोअतिबुद्धिनिसानी॥जेसीहीभांतिमई  
 वपूकीगतितेसोईहोईरह्योयप्रानी॥सुंदरचैतनतान  
 संभारतदेहस्वरूपमयोअसिमानी॥२५॥ज्यौंकोईत्या  
 गकरेअपनोंधरबाहीरजायकेंभेषबनावे॥मूंडमुंडाय  
 केकानफरायविभूतिलगायजटाउबढावे॥जेसोईस्वां  
 गकरेवपूकोपुनितेसोहीमानतेसोहोयजावे॥त्योंयह  
 सुंदरआपनजानतभूलिस्वरूपहीओरकहावे॥२६॥  
 ॥इतिस्वरूपविस्मर्णकोअंगसमाप्तः॥अंग२५॥छु  
 ॥अथविचारकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥प्र  
 थमअवनकरिचित्तएकाग्रहृदरीगुरुसंतआगमकहें  
 ॥दुतियमननवारवारहीविचारिदेखेंजोई  
 कछूसुनेताहीफेरीकेंसंभारीयें॥तृतीयप्रकारनिदध्या  
 सहीजुनीकेकरीनिहसंगविचारतआपुनपोतारीयें॥  
 साक्षातकारयाहीसाधनकरतहोईसुंदरकहतद्वैतबु  
 धीकोनिवारीयें॥१॥देखेंतोविचारकरिसुनेतोविचार  
 करीबोलेतोविचारकरीकरेतोविचारहें॥षाईतोविचा  
 रकरीपीवेतोविचारकरीसोवेतौविचारकरीकरतोही  
 बारहें॥बैठेतोविचारकरिउठेतौविचारकरीचलेतोवि

चारकरीसोईमतसारहैं॥देईतोविचारकरीलेईतोविचार  
 करीसुंदरबिचारकरयाहीनिरधारहैं॥२॥एकहीविचार  
 करतीसुषदुःखसमजनेंएकहीविचारकरीमलसबधो  
 ईये॥एकहीविचारकरीसंसारसमुद्रतरेंएकहीविचार  
 करीपारंगतिहोईहैं॥एकईविचारकरिबुधिनानाभाव  
 तजेएकईविचारकरिदूसरोनकोईहै॥एकहिबिचार  
 करिसुंदरसंदेहमिटेएकईविचारकरिएकब्रह्मजो  
 ईहैं॥३॥ ॥छंदइंद्रविजय॥ ॥रूपकोनासमयोक  
 छूदेर्षयेरूपतोरूपहीमाहीसमावे॥रूपकेमध्यअ  
 रूपअषंडितसोतोकहूंकछूजाईनआवे॥बीचअ  
 ज्ञानभयोनंवतत्वकोवेदपुरानसवेकोउगाहे॥सो  
 ईविचारकरेजवसुंदरसोधतताहीकहूँनहिपावे॥४  
 ॥भोमीसोतोहीगंधकोछांडतनीरसोतोरसतेनही  
 न्यारो॥तेजसूतोमलरूपरह्योपुनीवायूसपर्ससदा  
 सपियारो॥व्योमरुशब्दजुदेनहीहोवनअसेंहीअंतः  
 कर्नबिचारो॥एनवतत्वमिलेंइनतत्वनिंसुंदरभिन्नस्व  
 रूपहमारो॥५॥क्षीनरूपुष्टशरीरकोधर्मजुसीतहुउ  
 छजराम्रतठाने॥भूषतृषागुनप्रानकोव्यापतसोक

रुमोहउभेमनअने॥बुधिविचारकरेनिसवासुरचि  
 त्तचितेंसुअहंअभिमाने॥सर्वकोप्रेरकसर्वकोसार्थ  
 जुसुंदरआपकोन्यारोहीजानें॥६॥एकहीकूपतेन  
 हीसीचतईषअफीमहीअंबअनारा॥हेतउहे॥  
 द्वाप्रनेकनिमिष्टकटूकनिषाटाअरुषारा॥स्योहीउपा  
 धीसंजोगतेआत्मदीसतआहीमित्योसविकारा॥का  
 ढलीयेंसुविवेकविचारसोसुंदरसुद्धस्वरूपहेन्यारा॥७  
 ॥रूपपराकोनजानिपरेकछूठतहेजेहीमूलतेछानी  
 ॥नाभिविषेमिलिसप्तर्षी॥जे॥४॥  
 घानी॥नादसंजोगअदेपुनिकंठजुमध्यमयाहीबिचा  
 रतेजानी॥अक्षरभेदमिलेमुःषद्वारसुबोलतसुंदर  
 वैषरीबानी॥८॥ज्योंकोईरोगभयोनरकेघटवैदक  
 हेंयहवायूविकारा॥कोउकहेग्रहआईलगेतातेपुं  
 न्यकीयेकछूहोईऊवारा॥कोईकहेयहचूकपरीकछू  
 देवनिदोसकीयोनिर्धारा॥तेसेहीसुंदरतंत्रनिकेम  
 तभिन्नहीभिन्नकहेजुविचारा॥९॥जेविषयतमपूरर  
 हेतिनकोरजनिमहीबादरछायो॥कोउममुक्षकीये  
 गुरुदेवतेहेंभयेयुक्तजुशब्दसुनायो॥ ६ ॥

उनकेपुनतारनिसोरजुसर्पदिषायो॥सुंदरसूरप्रकाश  
तहीअमदूरभयोरजुकोरजुपायो॥१०॥कर्मसुभासुभ  
कीरजनीपुनीअर्धतिमोमयअर्धउजारी॥भक्तिसोतो  
यहअरुनउदयअंतनिसादिनसंधिविचारी॥ज्ञानसों  
भानुउदेनिसवांसरवेदपुरानकहेजुपुकारी॥सुंदरज्ञा  
नप्रभाववषांतयोंनिहचेसमकेविधिसारी॥११॥

॥छंदमनहर॥ ॥देहईसोआपमानिदेहईसोहोईर  
ह्योजडताअज्ञानतमसूद्रसोईजांनयें॥इंद्रिनकेआ  
पारनिअसंतनिपुनबुद्धितमोरजोदूहंकरिवैस्पहूप्र  
मानीयें॥अंतःकर्नमाहीअहंकारबुधीजाकेरजोगुन  
वर्द्धमानक्षत्रीपहीचांनीयें॥सत्यगुनबुद्धिएकआत  
माविचारजाकेसुंदरकहतवहीब्राह्मनवषांतीयें॥१२

॥आतमाकेविषेदेहआईकरिनासहोईआतमाअ  
षंडसदाएकईरहतुहें॥जेसेंसापकंचकीकोंलीयेरहे  
कोउदिनजीरनउतारकरिनौतुनगहतुहें॥जेसेंदुमहू  
केपत्रफूलफलआईहोतनिनकेगयेतेंदुमओरउल  
हतुहें॥जेसेंव्योममांहीअभ्रहोईकेविलाईजातएसो  
हिबिचारकरिसुंदरकहतुहें॥१३॥षरीकीडरीसोंअंक



लिषतविचारीयतलिषतलिषतवहीडरीघसिजातुहें  
 लेषोसमजोहेंजबसमुजपरीहेतबजोईकलूसहीभयो  
 सोईठहरातुहें॥दारहीसोंदारमथिप्रगटपावकभयोव  
 हेदारजरिपुनिपावकसमातुहे॥तेसेंहीसुंदरबुद्धिब्र  
 ह्मकोबिचारकरीकरतकरतवहबुद्धिदूविलातुहे॥१४  
 ॥आपकोसमजुदेखोआपुहीसकलमांहीआपहीमेस  
 कलजगतदेषीयतुहे॥जेसेंव्योमव्यापकअषंडपरिपू  
 रनहेबादलअनेकनानासूपलेषियतुहे॥जेसेंमोमाघ  
 टजलतरंगपावकदीपवायूमेंबधूरासोईविस्वरेषीय  
 तुहे॥अैसेंहीबिचारतविचारहूलीनहोईसुंदरहीसु  
 दररहितपेक्षीयतुहे॥१५॥देहकोसंजोगपाईजीवगमे  
 नामभयोघटकेसंजोगघटाकासहीकहायोहे॥ईस्वर  
 हीसकलविगटमेंविराजमानमठकेसंजोगमटाका  
 सनामपायोहे॥महाकासमांहीसबघटमठदेषीयत  
 बाहीरभीतरएकगगनसमायोहें॥तेसेंहीसुंदरब्रह्म  
 ईस्वरअनेकजीवत्रिविधिउपाधिमेदग्रंथनिमेंगायो  
 हे॥१६॥ ॥प्रष्ट॥ ॥देहदुःषपावेकिधोः ॥ ३ः  
 किधोंपानदुःषपावेकिधोंलहतनअहारकौं॥मनदुः

षपावेकिधोंबुधिदुःषपावेकिधोंचित्तदुःषपावेकिधों  
 दुःषअहंकारकों॥गुनदुःषपावेकिधोंभूत्रदुःषपावे  
 किधोंप्रकृतिदुःषपावेकिधोंपुर्वआधारकों॥सुंदरपृ  
 छतकछूजाननपरततातेकोंनदुःषपावेगुरुहोया  
 विचारकों॥१७॥ ॥कवितउत्तर॥ ॥देहकोंतोदुःष  
 नाहींदेहपंचभूतनिकीइंद्रीनकोंदुःषनाहींदुःषनाहींमां  
 नकों॥मनहूकोंदुःषनाहींबुद्धिहूकोंदुःषनाहींचित्तहू  
 कोंदुःषनाहींनाहींअभिमानकों॥गुननिकोंदुःषनाहीं  
 भूत्रहूकोंदुःषनाहींप्रकृतिकोंदुःषनाहींदुःषनपुमानकों  
 ॥सुंदरविचारएमेंशिषकोंकहतगुरुदुःषएकदेवीयन  
 बीचकेअज्ञानकों॥१८॥प्रथवीभांजनअंगकनकक  
 टकपुनिजलहीतरंगदोउदेखिकरिमानये॥कारनका  
 र्जएतोप्रगटहीथूलरूपताहीतेनंजरमांहीदेवीकरि  
 आनीहे॥पावकपवनव्योमएतोनहीदेवीयतदीप  
 कवधूराअभ्रप्रतप्तवषांनीये॥आतमाअरूपअ  
 तिसूक्ष्मतेसूक्ष्महेसुंदरकारनतातेदेहमेंनजानी  
 यें॥१९॥जैनमतउहेजिनराजकोंनभूलिजायदान  
 तपसालसत्तभावनातेतरीयें॥मनवचकायसुद्धस

बसोंदयालु रहे दोषबुधि दूर करि दया उर धरीयें ॥ जो  
 धनामन बजब मन को निरोध होई बंध के बिचार सो  
 ध आतमा को करीयें ॥ सुंदर कहत ऐसे जीव तही मुक्त  
 होई मूए ते मुक्त कहता को परहरीयें ॥ २० ॥ देह वोर दे  
 ॥ यें तो देह पंचभूतनि को ब्रह्मा अरु कीटलग देह ई प्र  
 धान हे ॥ प्रान वोर देषीयें तो प्रान सब ही को एक सुधा पुं  
 नित्र पादो उच्चापत समान हे ॥ मन वोर देषीयें तो मन को  
 स्वभाव एक संकल्प विकल्प करे सदाई अज्ञान हे ॥ आ  
 तमा विचार कीये आतमाई दीसे एक सुंदर कहत को  
 उदुसरो न आन हे ॥ २१ ॥ ॥ इति विचार को अंग स० ॥  
 अंग २६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ अथ ब्रह्मनिःकलंक को अंग प्र  
 ः ॥ ॥ छंद मन हर ॥ ॥ एक को उदाता गाय ब्राह्मन  
 कौं देत दान एक को उदया हीन मारत न संकहे ॥ एक को  
 ईत पस्वीत पस्या मांही सावधान एक को उकाम क्रीडा  
 कामनि को अंत हे ॥ एक को ऊरूप वंत अधिक विराज  
 मान एक को उकोढी कोढ चूवत करं कहे ॥ आरसी से प्रति  
 बिंब सब ही को देषीयत सुंदर कहत ऐसे ब्रह्म नि कलंक  
 हे ॥ १ ॥ रविके प्रकास ते प्रकास होत नेत्रनिकों सब को उ

सुभासुभकर्मकोकरतुहें॥ कोउजग्यदानतपजपने  
 मव्रतकोउड्द्रावसकरिकोउध्यानकोधरतुहें॥ को  
 उपरदारापरधनकोतकतजार्दकोउहिंस्थाकरिकरि  
 उदरभरतुहें॥ सुंदरकहतब्रह्मसासीरूपएकरस  
 याहीमेंउपजिकरिवाहीमेंभरतुहें॥ २॥ जेसेजलज  
 तुजलहीमेंउतपनहोयजलहीमेंविचरतजलकेआ  
 धारहे॥ जलहीमेंक्रीडाकरिविविधविवहारहोतका  
 मक्रोधलोभमोहजलमेंसंहारहे॥ जलकौनलगेकलू  
 जीवनकेरागदोषउनहीकेक्रियाकर्मउनहीकीलारहे  
 ॥ तेसेहीसुंदरयहब्रह्ममेंनगतसबब्रह्मकुनलागे  
 कलूजगतविकारहे॥ ३॥ स्वेदजजरायुजइंडजउद्भ  
 जपुंनिचारधानतिनकेचोरासीलषजंतुहें॥ जलचर  
 थलचरव्योमचरमिन्नमिन्नदेहपंचभूतनिकीउपजि  
 षपतुहें॥ सीतधांमपवनगगनमेंचलतआईगगन  
 अलिमजामेमेघहूअनंतहे॥ तेसेहीसुंदरयहमृष्टिस  
 बब्रह्ममांहीब्रह्मनिकलंकसदाजानतमहंतहे॥ ४॥  
 ॥ इतिब्रह्मनिःकलंककौअंगसमाप्तः ॥ ॥ अंग २७  
 ॥ ७७ ॥ ७७ ॥ अथआत्सअनुभवकोअंगप्रारंभः

॥ छंदद्रवजय ॥ ॥ हे दिल में दिलदार सही अधीयां उ  
 लटी करी ताही चितैये ॥ आब में षाक में वाद में आतस  
 जान में सुंदर जां निज नैये ॥ नूर में नूर हे तेज में तेज हे जो  
 ति मे जोति मिले मिलि जैये ॥ क्या कहिये कहते नब नेक  
 छूजो कहिये कहते ईल जैये ॥ १ ॥ जो कहो हे सब मेव ह  
 एक तो सो कह के सोहे आधि दिषैये ॥ जो कहो रूप न रेष  
 दी से कछू तो सब जूठ के माने ईक ईये ॥ जो कहूं सुंदर ने न  
 निमाऊ तो ने न हूबे न गये पुन हैये ॥ क्या कहिये कहते नब  
 नेक छूजो कहिये कहते ईल जैये ॥ २ ॥ होत बिनोद जु तो  
 अमि अंतर सो सुष आप में आप ही पैये ॥ बाही रको  
 उमग्यो पुनी आवत कंठ ते सुंदर फेर पठैये ॥ स्वाद निवे  
 र निवे र यो न जात मांनु गुड गुंगे ही नित बवैये ॥ क्या कहि  
 ये कहते नब नेक छूजो कहिये कहते ईल जैये ॥ ३ ॥ व्यौ  
 म को व्यौम अतंत अषडित आदीन अंत सुमध्य कहां  
 हे ॥ को परमान करे परि पूरन है त अहै त कछून जहां हे ॥  
 कारन कारज भेद नही कछू आप में आप ही आप तहां  
 हे ॥ ४ ॥ सुंदर दी सत सुंदर मांही सु सुंदर ता कहि कौन उ  
 हां हे ॥ ४ ॥ ॥ छंद इंद्रवर ॥ ॥ एक के दोई न एक न दोई ऊ



चनकेपरेहेसोवचनमेंआवेनहीसुंदरकहतवहीअनु  
भवप्रमानजु॥८॥इंद्रिनहीजान  
कोप्रांनहूनजानीसकेस्वासआवेजाईहे।मनहूनजानिस  
केसंकल्पविकल्पकरेबुधिहूनजानिसकेसुन्योसुवताईहे  
॥चित्तअहंकापुनिएहूनहीजानीसकेवाब्दहूनजानिस  
कैअनुमानपाईहे॥सुंदरकहतताहीकोउनहीजानीस  
।वाकरदेधीयेसुएसीनहीलाईहे॥९॥ ॥

॥श्रीअनजानतचक्षुजानतजानतनाहीजुसुंघत  
घ्राणे॥ताहीसपरसतुचानसकेपुनिजानतनाहीनजीम  
बषाने॥मननजानतबुधिनजानतचित्तअहंकारक्योंप  
हीचाने॥सुंदरवाब्दहूनजानिसकेनहीआतमआपको=  
आपहीजाने॥१०॥सूरकेतेजतेसूरजर्द  
तेचंद्रउजासे॥तारेकेतेजतेतारेउदीसतबिजुलतेजते  
बिजुचकासे॥दीपकेतेजतेदीपकदीसतहीरकेतेजतेह  
रोईभासे॥तेसेहीसुंदरआतमाजानहूआपकेज्ञानते=  
आपप्रकासे॥११॥कोउकहेंयहअष्टिस्वभावतेकोउक  
हेंयहकर्मतेअष्टी॥कोउकहेंयहकालउपावतकोउक  
हेंयहईस्वरतिष्ठी॥कोउकहेंयहअसेहीहोवतक्योंक





ह्योतिनलावसो सुनायो हे ॥ सुंदरजिनग्रहीति नंदगले की  
 बांह कही दंतजिनग्रह्योतिन मूसर दिषायो हे ॥ कानजि  
 नग्रह्योतिन सूप सोबनाय कह्यो पीठजिनग्रहीति न दि  
 दे ॥ १५ ॥ जे सोहे ते सोहि ताही सुंदर सुअक्षीजा

नं दिषाऊगरो मचायो हे ॥ १६ ॥ न्यायशा-

स्त्र ॥ १७ ॥ स्वरा ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ १७ ॥ विशेषिकशास्त्र पुनीकालवार्दि हे ॥

॥ १८ ॥ सांध्यशास्त्र

॥ ह्यो हे ॥ सुंदर कहत षट् शास्त्र मांही भयो वाद जाके  
 नुभव ज्ञान वाद में नव ह्यो हे ॥ १७ ॥ प्रज्ञान मानंद ब्रह्म ए

हि अथर्वण यो लहे ॥ एक एक वचन में तान पद हे प्रसि  
 ६ ॥ विचार करि अर्थ तत्व को गहे ॥ चार वेद मि

८ ॥ इंद्र निके भोग जब चाहत बआय रहें  
 ९ ॥ दिव लोक इंद्र लो

कविधिलोकशिवलोकवैकुण्ठकेसुःखलोगागितानंद  
 गायोहे॥अक्षयअषंडएकरसपरिपूरनहेताहीतेपूर्ण  
 नंदअनुभवतेपायोहे॥याहीकेअंतरभूतआनंदज  
 हांलोंओरसुंदरसमुद्रमांहीसर्वजलआयोहे॥१९॥ए  
 कतोमायाविलासजगतप्रपंचयहचारषांनिभेदपाय  
 हैतभासरह्योहे॥दूसरोविषेविलासइंद्रिनिकीविषेयं  
 चशब्दस्पर्सरूपरसगंधरह्योहे॥तीसरोवाक्यविलास =  
 सोतोसववेदमांहीबर्निकेजहांलगिवचनतेकरह्योहे॥चो  
 थोब्रह्मकोविलासतिहूंकोअभावजहांसुंदरकहतवह  
 अनुभवतेलह्योहे॥२०॥जीवतहिदेवलोकजीवतहीइं  
 द्रलोकजीवतहीजनतपसत्यलोकआयोहे॥जीवत  
 हीविधिलोकजीवतहीशिवलोकजीवनवैकुण्ठलोकजौ  
 अकुण्ठगांयोहे॥जीवतहीमोक्षसिलाजीवतहीमिस्त  
 मांहीजीवतहीनिकटपरमपदपायोहे॥आतमाकोअ  
 नुभवजिनकीजीवतभयोसुंदरकहततिनसंसयमि  
 टायोहे॥२१॥  
 ज्यौमभ्रमतिनकोशर  
 मअंतःकर्णभ्रमतिनहीकेदेवतामोभ्रमतेबषांन

सतरजतमभ्रमपुनिअहंकारभ्रममहतत्वप्रकृतिपु

थिं॥ २० ॥

नुभवकीये एक आतमांही जानिये ॥ २१ ॥ भौमी हू विरल

न होई अपहू विलीन होई तेज हू विलीन होई वायू जो वह

तु हे ॥ औम हू विलीन होई त्रिगुन विलीन होई शब्द हू वि

लीन होई अहं जो कह तु हे ॥ महतत्व लीन होई प्रकृति वि

लीन होई पुर्ष विलीन होई देह जो गहतु हे ॥

लोक कहिये सुलीन होई आतमा के अनुभव आतमा

रहतु हे ॥ २३ ॥ माया की अपेक्षा ब्रह्मरात्रि की अपेक्षा

दिन जड की अपेक्षा करी चैतन बखानिये ॥ अज्ञान अ

पेक्षा ज्ञान बंध की अपेक्षा मोक्ष द्वैत की अपेक्षा सो तो

अद्वैत प्रमानीये ॥ दुःख की अपेक्षा सुःख पाप की अपेक्षा

पुनजूत की अपेक्षा ताही सत्य करि मानीये ॥ सुंदर सक

लय हवचन वि

नीये ॥ २४ ॥ आतमा कहत गुरु सुद्ध निर्वधनित सत्य

करि माने सो तो शब्द प्रमान हे ॥

षंड परि पूरन हे औम उपमा ते उपमान सो प्रमान हे ॥ जा

की सता पाई सब इंद्रिय चैतन्य होई याही उपमा ते उपम

नउप्रमानहै॥ अनुभवजानेंतबसकलसंदेहमिदेसुंदर  
 कहतयहप्रतक्षप्रमानहै॥ २५॥ एकघरदोयघरती  
 नघरच्यारघरपंचघरतजेतबछटोघरपाईहैं॥ एकए  
 कघरकेआधारएकएकघरएकघरनिराधारआपही  
 दिपाईहैं॥ सौतोघरसाक्षीरूपघरघरमेंअनूपताहूघर  
 मध्यकोउदिनठहराईयें॥ ताकेपरेसाक्षीनअसाक्षीन  
 संदरकछूवचनअतीतकहूंआईहेनजाईहै॥ २६॥ ए  
 कतोअवनज्ञानपावकज्यौंदेवीयतमायाजलपरसत  
 वेगबुजिजातहै॥ एकहेमननज्ञानबिजुलीज्यौंघन  
 मध्यमायाजलबरषततामेंनबुजातहै॥ एकनिदध्या  
 सज्ञानबडवाअनलजेसेंप्रगटसमुद्रमाहीमायजल  
 षातुहै॥ अनुभवसाक्षातज्ञानप्रलयअग्निसमसुंदर  
 कहतहैतप्रपंचविलातहै॥ २७॥ भोजनकीवातसुनी  
 मनमेंसुदीतभयोमुःषमेंनपरेज्योलोमेलियेनग्रासहै  
 ॥ सकलसामग्रीआनिपाककौंकरनलागोमननकर  
 तकबजीमहोएआसहै॥ पाकजबभयोतबभोजन  
 कर्नबेठोमुःषमेंमेलतजाईयहैनिदध्यासहैं॥ भोज  
 नपूरनकरित्रपतिभयोहेजबसुंदरसाक्षातकारअनु

भवप्रकासहे ॥२८॥ श्रवनकरतजबसबसोंउदा

ईचित्तएकाग्रहआनिगुरुमुःषसुनिये ॥ बेठिकेए  
कांतठोरअंतःकर्नमाहीमननकरतफेरउहेज्ञानगुनि

॥ ब्रह्मअपरोक्षजांनीकहतहेअहंब्रह्मसोहंसोहंहो  
ईसदानिदध्यासधुनीये ॥ सुंदरसाक्षात्कारकीटहीते

होईश्रवंगयहअनुभवयहेस्वस्वरूपमनिये ॥२९॥ जब

जग्यासहोईचित्तएकठोरआनीमृगज्यौंसुनतनाद

श्रवनसोंकहीये ॥ जेसेस्वांतिबूदहूकोंचात्रुकरटतपु

निअसेंहीमननकरेकबबूंदलहीये ॥ रात्रिकोंचकोर

जेसेचंद्रमाकोधरेध्यानअसेंजानिनिदध्यासद्रढक

रिग्रहीये ॥ यहैअनुभवयहेकहीयेसाक्षात्कारसुंदर

पारेतेंगलपानीहोईरहीये ॥३०॥ काहूकोंपूछतरंकध

नकेसेंपाईयतकानदेकेसुनतश्रवनसोईजांनीये ॥ उन

कह्योधनहमदेव्योहेफलांनीठोरमननकरतभयोक्

बघरआंनीये ॥ फेरिजबकह्योधनगड्योतेरेघरमां

हीषोदनलग्योहेतबनिदध्यासठानीए ॥ धननिकस्यो

हेजबदरिद्रगयोहेतबसुंदरसाक्षात्कारतृपतिबषां

नीये ॥३१॥ चकमकटोकेतेचमतकारहोतकछुअ

सेही अवर्न ज्ञान तब ही लों जानीये ॥ कफ मन लगे जब  
 प्रगटे पावक ज्ञान सिलगत जाई वह मन न बषानीये ॥  
 बंद्ध मान भए काठ कर्म नी कौं जरावत इही निदध्यास  
 ज्ञान ग्रंथ निमै गानीये ॥ सकल प्रपंच यह जरी कै समा  
 ई जात सुंदर कहत वह अनुभव प्रमानीये ॥ ३२ ॥ ॥  
 ॥ इति आत्म अनुभव को अंग समाप्तः ॥ अंग २८ ॥  
 ॥ अथ ज्ञान को अंग प्रारंभः ॥ छंद मन हर ॥ ॥  
 अवन सुनत मुःष बोलंत वचन घांत संधत फूल न रूप  
 देषत द्रग न हे ॥ त्वकंस परसर सनाग्र सत कर ग्रहत  
 असन अरु चलत पंग न हे ॥ करत गवन पुनि बैठत भव  
 न सेज सोवत रवन पुनी वोढत नग न हे ॥ जो जो कछू वि  
 वहार जानत सकल भ्रम सुंदर कहत ज्ञानी गगन मग  
 न हे ॥ १ ॥ कर्म न विकर्म करे भावन अभाव धरे सुभहू-  
 अस्त भपरे याते नंधर कहे ॥ वसती न सुन्य जाके पाप  
 हून पुन्य ताके अधिक न नून्य वाके स्वर्ग न नर कहे ॥ स  
 षटुःष सम दोऊ नीच हून ऊंच को उएसी विधिरहे सोऊ  
 मिल्यो न फर कहे ॥ एक ही न दोय जाने बंध मोक्ष भ्रम  
 माने सुंदर कहत ज्ञानी ज्ञान में गर कहे ॥ २ ॥ अज्ञानी

कोंदुःषकासमूहजगजानीयतज्ञानीकोजगतसबः  
 आनंदस्वरूपहे॥नेनहीनकोंतोघरबाहरनसूजेक  
 लूजहांजहांजायतहांतहांअंधकूपहे॥ १॥  
 कासअंधकारमयोनासवाकेजहांरहेतहांसूर्जकी  
 पहे॥सुंदरअज्ञानीज्ञानीअंतरबहुतआहं  
 रातिवाकेदिवसअनूपहे॥३॥ज्ञानीअरुअज्ञानीकी  
 क्रियासबएकसीहीअज्ञआसाओरज्ञानीआसननिरा  
 सहे॥अज्ञजोईजोईकरेअहंकारबुधिधरे  
 रबिनुकरतउदासहे॥अज्ञसुःषदुःषदोउआपविषेमा  
 निलेतज्ञानिसुःषदुःषकौनजानेमेरेपासहे॥अज्ञकौ  
 जगतयहसकलसंतापकरे  
 विलासहे॥४॥ज्ञानीलोकसंग्रहकौंकरतव्योहारविधि  
 अंतःकरणमेतोस्वप्नकीसीदोरहे॥देतउपदेसनाना  
 भांतिकेवचनकहीसबकोउजानतसकलसिरमोरहे  
 ॥हलनचलनपुनीदेहसोंकरतनितज्ञानमेगरकगति  
 लीयेनिजठोरहे॥सुंदरकहतजेसेंदंतगजराजसुःषषा  
 ईबेकेओररुदिषाईबेकेओरहे॥५॥इंद्रनिकोज्ञान  
 जाकेसोतोहेपसुसमानदेहअभिमानधानयानहं

लीनहैं॥ अंतःकर्णज्ञानकलूकविचारजाके मनुष्यो  
हारसक्तकर्मनी आधीनहे॥ आतमाविचारज्ञानजाके  
निसवासरहे॥ सोईसाधूसकरुहीबातमें प्रवीनहे॥  
एकपरमात्माको ज्ञानअनुभवजाके सुंदर कहत वह  
ज्ञानी भ्रमछीनहे॥ ६॥ धोषोनरहतको उज्ञानको प्रका  
सते जाही ठोर रबिको उद्योत मयो ताही ठोर अंधकार  
भागि गयो ग्रहवनवासते॥ न तो कलूबनते उलटि आ  
वे धरमांही न तो चचनचलि जाई कनक आवासते॥ जे  
से पंषी पंषटुटी जाई ठोर पखो आई ताही ठोर गिरर  
ह्यो उडवे की आसते॥ सुंदर कहत मिटि जाई सब दोड  
दुषधोषोनरहतको उज्ञानके प्रकासते॥ ७॥ जे से को  
उदे सजाई मापा कहें और सीही समझेन को उवासें क  
हे क्या कहतुहे॥ कोउ दिन रहे करि बोलि सीषे उनही की  
फेरी समझवे तब सब को लहतुहे॥ ते से ज्ञान कहें ते सु  
नत विपरीत लगे आप आप नोई मत सब को गहतुहे  
॥ उनही के मत करि सुंदर कहत ज्ञान तवही ते ज्ञान ठह  
राई के रहतुहे॥ ८॥ एक ज्ञानी कर्मनिमें तत पर देषी  
यत भक्तिको प्रभाव नाहीं ज्ञानमें गर कहें॥ एक ज्ञानी



भक्तिको अत्यंत प्रभावलीये ज्ञानमांही निश्चेकरिकर  
मसोंतर कहें ॥ एक ज्ञानी ज्ञानही में ज्ञानको उचारकरे  
भक्ति अरु कर्म इन दुहुं तें फर कहें ॥ कर्म भक्ति ज्ञान तिनों  
वेद में बंधा न कहें सुंदर बत योगुरुता ही मेलर कहें ॥  
९ ॥ जे से पंषी पग निसों चलत अवनि आई ते से ज्ञानी दे  
॥ जे से पंषि बुच करि चुगत अहा  
र पुनिते से ज्ञानी उर मे उपासना धरतु हैं ॥ जे से पंखी पंष  
निसों उडत गगन मांही ते से ज्ञानी ज्ञान करि ब्रह्म मे चर  
तु हैं ॥ सुंदर कहत ज्ञानी तीनों भांत देषीयत असी विधि  
जाने सब संसय हरतु हैं ॥ १० ॥ ॥ छंद इंद्र वजय ॥ ॥ ए  
क क्रिया करि ऋषि नियावत आदी रुअंत लोम मत्व बं  
ध्यो हे ॥ एक क्रिया करि पाक करे जब भोजन लोकं छू  
अन्न रंध्यो हे ॥ एक क्रिया मल त्यागत हेल गुनीत करे क  
हूं नाहीं फंध्यो हे ॥ त्यों यह कर्म उपासना ज्ञान हैं सुंदर ती  
न प्रकार सध्यो हे ॥ ११ ॥ दोउ जने मिलि चोपर पेलत सा  
रि धरे पुनि दारत फासा ॥ जीतत हे सुसुषी मन में अ  
निहारत हे सोई भरे उउसासा ॥ एक जनो दोउ वोर ही षि  
लत हारन जीत करे जुत मासा ॥ ते से अज्ञानी के द्वैत भ

योत्रमसुंदरज्ञानीके एकप्रकासा ॥१२॥ सवैया ॥  
 ॥जीवनरेसअविद्यानिद्रासुखसिज्यासोयोकरिहे  
 त ॥ कर्मषवासपुटभरिलार्इतातेबहुविधिभयोअचे  
 त ॥ भक्तिप्रधानजगायोकरगहीआलसभस्योजभाई  
 लेत ॥ सुंदरअबनिद्रावसनाहींज्ञानजागर्नसदास्वचे  
 त ॥१३॥ ज्ञानीकर्मकरेनानाविधअहंकारयातनको  
 धोवे ॥ कर्मनिकोफलकछूनबांवे ॥ अंतेःकर्मवासनाधोवे  
 ज्यांकोउषेतीकोजोततलेकरिबीजभूनि केबांवे ॥ सुंदर  
 कहेसनोद्रष्टांतहीनागोनाहार्इसकहानिचेवे ॥१४॥  
 ॥इतिज्ञानकोअंगसमाप्तः॥ ॥अंग१९॥ ॥छु॥ ॥छु॥  
 ॥अथनिरसंसेकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदर्मनौहर॥ ॥भा  
 वेदेहछूटिजाहूकासीमहीगंगात्रटभावेदेहछूटिजाओ  
 सेत्रमधहरमे ॥ भावेदेहछूटिजाओविप्रकेसदनमध्य  
 भावेदेहछूटिजाओस्वपचकेधरमे ॥ भावेदेहछूटोदे  
 सआर्यअनारजमे ॥ भावेदेहछूटिजाओवनमेनगर  
 मे ॥ सुंदरज्ञानीकेकछूसंभयरहेजुनाहींस्वर्गनरकस  
 बभागीगयोभरमे ॥१॥ भावेदेहछूटिजाओआजहीप  
 लकमांहीभावेदेहरहोचिरकालजुगअंतजु ॥ भावेदेह

छूटिजाओग्रीधमपावसक्रतुसर्दससीरसीतछूटतव  
 संतजु॥ भावेंदसनायनहूभावेउतरायनहूभावेदेहस  
 र्पसिंधवीजलीहनतजु॥ सुंदरकहतएकआतमाअ  
 रबंडजांनीयाहीभांतिनिरसंसेभयेसबसंतजु॥२॥

॥ छंदइंद्रविजय॥ ॥ केयहदेहगिरोवनपर्वतकेयह  
 देहनदीमेंबहोजु॥ केयहदेहधरोधरतीमहीकेयहदे  
 हकसांनदहोजु॥ केयहदेहनिरादरनिंदहुकेयहदेह  
 सराहकहोजु॥ सुंदरसंसयदूरभयोसबकेयहदेह  
 चलोकिरहेजु॥३॥ केयहदेहसदासुखसंपतिकेयह  
 देहविपतपरेजु॥ केयहदेहनिरोगरहोनितकेयहदे  
 हहीरोगचरोजु॥ केयहदेहहुतासनपेठहूकेयहदेह  
 हिमोरगरोजु॥ सुंदरसंसयदूरभयोसबकेयहदेह  
 जीवोकेमरोजु॥४॥ ॥ इतिनिरसंसेकोअंगसमाप्तः॥

॥ अंग३०॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ अथप्रेमज्ञानीकोअंग  
 प्रारंभः॥ ॥ छंदइंद्रविजय॥ ॥ प्रीतकीरीतकछूनही  
 राषतजातनपातनहीकुलगारो॥ प्रेमकेनेमकहो नही  
 दीसतलाजनकांनलग्योसबषारो॥ लीनभयोहरिसों  
 अभिअंतरआठहूजांमरहेमतवारो॥ सुंदरकोउक

जं केर गोकुलगांमकोपेडोईन्यारो॥१॥ज्ञान  
 दीयोगुरुदेवक्रपाकरीदूरिकीयोभ्रमषोलिकिवारो॥  
 ओरकीयाकहीकोनकरेअबचित्रलग्योपरिब्रह्मपिया  
 रो॥पावविनाचलबोकेहिठाहरपंगुभयोमनमितहमा  
 रो॥सुंदरकोउकजांनीसकेयहगोकुलगांमकोपेडोईन्या  
 रो॥२॥एकअबंधितज्योनभव्यापकवाहीरभीतरहेइ  
 कसारो॥द्रष्टिनमुष्टिनरूपनरेषनस्वेतनपीतनरक्तन  
 कारो॥चक्रितहोईरहेअनुभवविनजांहालगिनाहीन  
 ज्ञानउजारो॥सुंदरकोईकजांनीसकेयहगोकुलगां  
 मकोपेडोईन्यारो॥३॥हंहविनाविचरेवसुधापरजाघ  
 टआतमज्ञानअपारो॥कामनक्रोधनलोभनमोहन  
 रागनदोषनमारोनथारो॥जागेनभोगनत्यागनसंग्र  
 हदेहदिसानढंक्वोनउधारो॥सुंदरकोउकजांनीसके  
 यहगोकुलगांमकोपेडोईन्यारो॥४॥लक्षअलक्षअ  
 दक्षनदक्षनपक्षअपक्षनतूलनभारो॥जूठनसाच  
 अवाचनवाचनकंचनकाचनदीनउदारो॥जानअ  
 जाननमानअमाननसानगुमाननजीतनहारो॥सुं  
 दरकोउकजांनीसकेयहगोकुलगांमकोपेडोईन्या

रो॥५॥ ॥ इति प्रेमज्ञानीको अंगसमाप्तः॥ अंग ३९

॥ छु ॥ ॥ छु ॥ ॥ अथ अद्वैतज्ञानको अंगप्रारंभः॥

॥ छंदद्वंद्वविजय ॥ ॥ होतुमकोनहो ब्रह्मअषंडितदे  
हमेक्यौनहीदेहकेनेरे ॥ बोलतकेसेंकहोनहीबोलत  
जानीयेकेसेंअज्ञानहेतेरे ॥ दूरकरोअमनिअवधारि  
कहोगुरुदेवकहोनितटेरे ॥ होतुमएसेंतूहुंपुनिअसें  
ईदोएनहिनहीद्वैतहेतेरे ॥ १॥ हंकछुओरकेतूंकछू=  
ओरकीहेकछूओरकिसोकछूओरे ॥ होंअरुतूंयहहे  
कछूसोपुनबुद्धिविलासभयोऊकओरे ॥ होंनहीतूंन  
हीहेकछूसोनहीबुजेविनाजितहीतितदोरे ॥ हूंपुनि  
तूंपुनिहेकछूसोपुनिसुंदरव्यापिरह्योसबठोरे ॥ २॥  
उत्तममध्यमओरसुभासभभेदअभेदजहांलगजो  
हे ॥ दीसतभिन्नतवोअरुदर्पनवस्तुविचारतएकहिलो  
हे ॥ जोसुनियेअरुद्रष्टीपरेपुनीवाबिनओरकहूंअब  
कोहे ॥ सुंदरसुंदरव्यापिरह्योसबसुंदरमेपुनिसुंदरसो  
हे ॥ ३॥ ज्यौवनएकअनेकअनेकभयेदुमनामअनंत  
निजातिहून्यारी ॥ वापीतडागरूकूपनदीसबहेजलए  
कसुदेषोनिहारी ॥

राकमसालहूबारी॥सुंदरब्रह्मविलासअष्टांशितभेद  
 अभेदकीबुधिसुतारी॥४॥एकशरीरमेंअंगसएवहू  
 एकधरापरीधामअनेका॥एकसिलामहीकोरकीयेस  
 बचित्रबनईधरेइकठेका॥एकसमुद्रतरंगअनेकहुके  
 सेंकेकीजीयेमिन्नविवेका॥द्वैतकछूनहीदेधीयेसुंदरब्र  
 ह्मअष्टांशितएककोएका॥५॥ज्यौंसुतकायटनीरतरंग  
 हीतेजमसालकीएजुबहुता॥वायूबधूरनिगांठपरि  
 बहूबादलव्योमसुव्योमसुव्योमजुसूता॥वृक्षसुबीज  
 हेबीजसुब्रह्महेपूतसोबापहेबापसुपूता॥वस्तुविच  
 रतएकहीसुंदरतानेसुवानेतोदेधीयेसूता॥६॥भौमी  
 हुचैतन्यअपहुचैतन्यतेजहुचैतन्यहेजुप्रचंडा॥वा  
 यूहीचैतन्यव्योमहूचैतन्यशब्दहूचैतन्यपिंडब्रह्मांडा  
 ॥हेमनचैतन्यबुद्धिहूचैतन्यचित्तहूचैतन्यआहीउ  
 ढंडा॥जोकछूनामधरेसोईचैतनचेतनसुंदरब्रह्मअ  
 षंडा॥७॥एकअष्टांशितब्रह्मविराजतनामजुदोकरि  
 विस्वकहावे॥एकईग्रंथपुरानबषानतएकईदतव  
 सिष्ठसुनावे॥एकईअर्जुनउद्धवसौंकहीकछरुपा  
 करीकेससुजावे॥सुंदरद्वैतकछूमतिजांनहूएकई

व्यापकवेदवतावि॥८॥ ॥छंदमनोहरा॥ ॥सिष्यपु  
 लेगुरुदेवगुरुकहेपुछसीष्यमेरेएकसंसयहेकौनपु  
 छेअबही॥तूमकह्योएकब्रह्मअजहूमेकहूएकएक  
 तोअनेकताकौइहतोअमसबही॥अमईहकोनको  
 हेअमहिकोअमअयोअमहिकोअमकैसेतुनजानेक  
 बही॥कैसेकरिजांनोप्रभूगुरुकहेहेनिश्चेधरीनिश्चेए  
 सेजांन्योअबएकब्रह्मतबही॥९॥ब्रह्महेठोरकोठोरदू  
 सरोनकोउऔरबस्तूकोविचारकियेवस्तूपहिचानिये  
 ॥पंचततीनगूनविस्तरेविविधभांतिनामरूपजहांल  
 गैमिथ्यामायामानीये॥सेषनागआदिदेकेवैकुण्ठगौ  
 लोकपुनीबचनविलाससबभेदअमभांनिये॥नतो  
 कोउउरजोनसूरजोकहोसोकोनसुंदरसकलएहउबा  
 वाईजांनिये॥१०॥प्रथमहीदेहमेतेंबाहेरकोचोकी  
 पखोइंद्रियव्यापारसुषसत्यकरिजांन्योहै॥कोनउस  
 जोगपाईसदगुरुसोभेदअईउनउपदेसदेकेभीतर  
 कूंआन्योहै॥भीतरकैआवतहिबुधिकोप्रकासअयो  
 हुकोनदेहकोनजगतकिनमांनोहै॥सुंदरविचारत  
 योउपज्योअद्वैतज्ञानआपकोअधंडब्रह्मएकपहि

५॥ न्योहै ॥ ११ ॥ ॥ हंसालुछंद ॥ ॥ सकल संसार वि  
 स्तार कर वरणीयो सर्ग पाताल मतिपुरी भ्रम होहै ॥  
 एक ते गीनत गीनत जाईये सोल गै फेरी करि एक को ए  
 कहि गहोहै ॥ एनही एनही एनहिरहें अवसेष सो वेद  
 हूकहोहै ॥ सुंदर सही सो विचार कें आपन पो आपमे  
 आप कूं आप हिलहोहै ॥ १२ ॥ एक तूं दोय तूं चार तूं पंच  
 तूं तत्व ते जगत कियो ॥ नाम अस्तरूप होई बहूत विधि  
 विस्तरो तुम विना और को उनहि वियो ॥ रावतूरं कतूं  
 दीन तूं दाइ तूं दोई करी मेल ते लियो दियो ॥ सकल एह  
 तुम मांही उपजेष पे कहत सुंदर बडो विप्लव हीयो ॥  
 १३ ॥ तोही मे जगत यह तूं ही हे जगत मांही तो मे अरु  
 जगत में भिन्नता कहारही ॥ भोमी हीति भाजन अनेक  
 विधि नाम रूप भाजन विचार देषे उहे एक हे मही जल  
 ते तं रंग फेन बुदबुदा अनेक भांति सो उतो विचार ऐक  
 वहे जल हे सही ॥ जे ते महा पुरुष हें सब को सिद्धांत ए  
 क सुंदर अखिल ब्रह्म अंत वेद हे कही ॥ १४ ॥ जे से ईष  
 रस की मिठाई भांति भांति भई फेर करी गारे इक्षर स  
 ही लहनु हे ॥ जे से घृत थी ज के डरा सो बंध जात पुनि



फेरपधरेतेंवहध्रतईरहतुहे॥जेसेंपानीजमीकेप  
 षांनहूसोदेधीयतसोपषांनफेरिपांनीहोयकेंवहतु  
 हे॥तेसेंहीसुंदरयहजगतहेब्रह्ममाहीब्रह्मसोज  
 गतमयवेदसुकहतुहे॥१५॥जेसेंकाठकोरितामेंपूत  
 रीबनायराषीजोविचारीदेधीयेतोउहेएकदारहे॥जे  
 सेंमालारसूतहूकीमनीकाहूसूतहीकेभीतरहूपोयो  
 पुनिसूतहीकोतारहे॥जेसेंएकसमुद्रकेजलहीकोले  
 नभयोसोउतौविचारेपुनिउहेजलपारहे॥तेसेंहीसुं  
 दरयहजगतसोब्रह्ममयब्रह्मसोजगतमययाहीनि  
 रधारहे॥१६॥जेसेंएकलोहकेहथीयारनानाविध  
 कीयेआदीमध्यअंतएकलोहईप्रमानीये॥जेसेंएक  
 कंचनमेंभूषनअनेकभयेआदीअंतमध्यएककंच  
 नईजानीये॥जेसेंएकमेनकेसंवारेनरहाथीहयआ  
 दीअंतमध्यएकमेनकेबषांनीये॥तेसेंहीसुंदरयह

॥१७॥ब्रह्ममेजगतयहएसीविधिदेधीयतजेसी  
 विधिदेधीयतफूलरीमहीरमें॥जेसीविधिगलीमदु  
 लीचेमेंअनेकमांतिजेसीविधिदेधीयतचूनीउच

॥ जेसी विधि कांगुरे उकोट परि देवीय त जेसी विधि देवी  
 यत बुद बुदानी रमें ॥ सुंदर कहत लीकहा त परि देवीय  
 त जेसी विधि देवीय त सीतला सरीर में ॥ १८ ॥ ब्रह्म अरु  
 माया जे सें शिव अरु शक्ति पुनी पुर्ष प्रकृति दोउ कहौ  
 कें सुनाय हें ॥ पति अरु पतनी ईश्वर अरु ईश्वरी हुना  
 रायन लक्ष्मी द्वैवचन कहा एहे ॥ जे सें कोई अर्ध नारी  
 नाटे स्वरी रूप धरे एक बीज ही तें दोउ दालि नाम पाए हें  
 ॥ ते सें ही सुंदर वस्तु ज्यों हेत्यों हिकर सउ समय प्रकार हो  
 ई आप ही दिया एहें ॥ १९ ॥ ॥ छंद इंद्र विजय ॥ ॥ ब्रह्म  
 निरीह निरामय निर्गुन नित्य निरंजन और न भासे ॥ ब्र  
 ह्म अषंडित हे अध उर्धवा ही रभीतर ब्रह्म प्रकासे ॥  
 ब्रह्म ही सूक्ष्म स्थूल जहां लग ब्रह्म ही साहीब ब्रह्म ही  
 दासे ॥ सुंदर और कछु मत जांत हू ब्रह्म ही देषत ब्रह्म  
 त मासे ॥ २० ॥ ब्रह्म हि माही विराजत ब्रह्म हि ब्रह्म वि  
 नाजिन और ही जानो ॥ ब्रह्म ही कुंजर कीट हू ब्रह्म ही  
 ब्रह्म ही रंकरु ब्रह्म ही रानो ॥ कारु ही ब्रह्म स्वभाव हू ब्र  
 ह्म ही कर्म हू जीवरु ब्रह्म वषांनो ॥ सुंदर ब्रह्म विना कछु  
 नाहीन ब्रह्म ही जानी सबे स्रम भांनो ॥ २१ ॥ आदि हू तो

सोई अंतहि हे पुनि मध्यकहा कछू और कहावे ॥ कार  
 न कार जना मधरे पुनि कारज कारन माही समावे ॥ कारज  
 देषि भयो बिच विभ्रम कारन देषि विभ्रम बिलावे ॥ सुं  
 दर या निश्चे अमि अंतर द्वैत गए फिरि द्वैत न आवे ॥ २२  
 ॥ ॥ छंद मन हर ॥ ॥ ब्रह्म अरु माया के तो माथे नही  
 शृंग हे द्वैत करि देषे जब द्वैत ही दिषाई देत एक करि देषे  
 तब उहे एक अंग हैं ॥ सूरज को देषे जब सूरज प्रकासर हो  
 किर्णों को देषे तो किर्ण नाना रंग हैं ॥ भ्रम जब भयो तब मा  
 या एसो नाम धर्यो भ्रम के गए तें एक ब्रह्म सर्व गहें ॥ सुं  
 दर कहत या की द्रष्टि हू को फेर भयो ब्रह्म अरु माया के  
 तो माथे नही शृंग गहें ॥ २३ ॥ ओत्र कछू और नाही नेत्र क  
 छू और नाही नासा कछू और नाही रसनान और हैं ॥ त्व  
 क कछू और नाही वाक कछू और नाही हाथ कछू और  
 नाही पावन की दोर हे ॥ मन कछू और नाही बुधिकछू  
 और नाही चित्त कछू और नाही अहंकार तोर हे ॥ सुंद  
 र कहत एक ब्रह्म विना और नाही आप ही में आप व्या  
 पर हो सब ठोर हे ॥ २४ ॥ ॥ इति अद्वैत ज्ञान को  
 अंग समाप्तः ॥ ॥ अंग ३२ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७७ ॥

अथ जक्त तिथ्या को अंग प्रारंभः ॥ ॥ छंद मनोहर ॥  
जगत को नाम सुनी जगत सुलायो हे कीयेन विचार क  
छू मन क परी हे कान धारी आई सुनिकरि डरि विषया  
यो हे ॥ जे से को उ अ न छ तो अ से ही बु ला द य त वार वी त  
गई पर को उ न ही आयो हे ॥ वेद हु बर निके जगत त रुठा  
ढो कीयो अंत पु नि वेद जर मूल ते उ ठा यो हे ॥ ते से ही सुं द  
र या को को इ एक पा वे से द जगत को नाम सु नि जगत सु  
ला यो हे ॥ १ ॥ अ से ई अ ज्ञान को ई आय के प्र ग ट म यो दि  
व्य द्रष्टि दूर ग ई दे षे चाम द्रष्टि कौं ॥ जे से एक आ र सी स टा  
ई हा थ मा ही र हे स सु ष न दे षे फेर फेर दे षे प्र ष्टि कौं ॥ जे  
से एक व्यौं म पु नि वा द र सौं छा य र त्थो व्यौं मन ही दे ष त  
दे ष त ब हू वृ ष्टि कौं ॥ ते से एक ब्र ह्म ही वि रा ज मा न सु द र  
हे ब्र ह्म कौं न दे षे को उ दे षे स ब मृ ष्टि कौं ॥ २ ॥ अ न छ तो ज  
गत अ ज्ञान ते प्र ग ट म यो जे से को ई बा ल क वे ता ल दे षी  
ड स्यो हे ॥ जे से को ई स्व प ने मे दा व्यो हे अ थारि आ या मुः  
ष ते न आ वे बो ल अ से दुः ष प स्यो हे ॥ जे से अं धी यारी  
रे न जे वरी न जनें ता ही आप ही ते सा प मानी भ य अ ति  
क स्यो हे ॥ ते से ही सुं द र एक ज्ञान के प्र का स बि नु आप दुः

षपायआयआपपचिमस्योहे॥३॥ब्रह्मईजगतहो  
 ईब्रह्मदूररह्योहेमृतकासमाईरहीभांजनकेरूपमां  
 हीमृत्युकाकोनाममितिभाजनईगत्योहे॥कनकस  
 माईत्योहीहोईरह्योआभूषनकनककहेनकोउआ  
 भूषनकह्योहे॥बीजहूसमाईकरिव्रषहोईरह्योपुनि  
 वृषहीकौंदेषीयतबीजनहीलह्योहे॥सुंदरकहतयह  
 योहीकरिजांनोसबब्रह्मईजगतहोईब्रह्मदूरिरह्योहे  
 ॥४॥कहतहेदेहमाहीजीवआईमिलिरह्योकहांदेह  
 कहांजीववृथाचूकपस्योहे॥बूडवेकेडरतंतरनिकोउ  
 पायकरेअसेंनहीजानेयहमृगजलभस्योहे॥जेवरी  
 कोसापजेसेंसीपविषेरूपोजानीओरकोओरहीदेषी  
 योहीभ्रमकस्योहे॥सुंदरकहतयहएकईअषंडब्र  
 ह्मताहीकौंपलटकेजगतनामधस्योहे॥५॥ ॥

इतिजक्तमिथ्याकोअंगसमाप्तः॥॥अंग३३॥६७॥  
 ॥अथआश्वर्जकोअंगप्रारंभः॥॥छंदमनोहर॥  
 ॥वेदकोविचारसोईसनकेसंतनसुःषआपहूविचा  
 रकरिसोईधारियतुहे॥जोगकीजुगतिजांनिजग  
 तेउदासहोईसंन्यमेंसमाधिलाईमनभारीयतुहे॥

असेअसेकरतकरतकेतेदिनबीतेसुंदरकहतअ  
 जहूविचारीयतुहे॥ कारोहीनपीरोनतोतातोहीन  
 सीरोकछूहाथनपरततातेहाथजारीयतुहे॥१॥म  
 नकोंअगमअतिवचनथकीतहोतबुद्धिहूविचार  
 करिबहूषंडियतुहें॥अवननसुनेताहीनेनहूनदे  
 षेताहीरसनाकोरससबरसछांडियतुहें॥तुकको  
 स्पर्सनाहींध्रानकोनविषेहोईपगनिहूकरिजितति  
 तहींडाईयतुहें॥सुंदरकहतअतिसूक्ष्मस्वरूपक  
 छूहाथनपरततातेहाथमीडीयतुहे॥२॥गुफाकों  
 संवारतहेआसनहूमारिकरिप्रानहीकौंधारधांसना  
 कसीठीयतुहें॥इंद्रनिकोंघेरकरिमनहूकोंफेरपुनी  
 त्रकुटीमेंहेरहेरहीयोचीटीयतुहें॥सबछटिकाय  
 पुनीसुन्यमेंसमायतहांसमाधिलगाईकरिआं  
 षमीटीयतुहें॥सुंदरकहतहमओरउकीयेउपाए  
 हाथनपरततातेहाथमीटीयतुहें॥३॥बोलेहीन  
 मौनधरेबैठेहेनगौनकरेजागेहीनसोवेसोतोदूर  
 हेनसीरोहे॥आवेहीनजाईनतोथिरअकुलातपु  
 निभूषोईनघातकछूतातोहीनसीरोहे॥लेनहेन

देतकेछूहेतनकूंहेतपुस्यामहीनस्वेतपुनीरातो  
 हीनपीरोहे॥दूवरोनमेढोकछुलांबोहीनछोटोता  
 तेसुंदरकहेतकहाकाचहीनहीरोहे॥४॥भूमीही  
 नआपनतोतेजहीनतापनतोवायूहीनव्योम  
 नतोपंचकोपसारोहे॥हाथहीनपावनतोनेनवे  
 नभावनतोरंकहीनरावनतोवृधहीनवारोहे॥  
 पिंडहीनप्रांननतोजाननअजानतोबंधनिर्बान  
 नतोहरवोनभारोहे॥द्वैतनअद्वैतनतोभीतन  
 अभीतनातोसुंदरकह्योनजाईमिल्योहीनन्या  
 रोहे॥५॥ ॥सुंदरद्वंद्वविजय॥ ॥पापनपुंन्य  
 नस्थूलनसून्यनबोलेनमौननसोवेनजागे॥  
 एकनदोईनपुरुषनजोईकहेकहाकोईनपी  
 छेनआगे॥वृद्धनबालनकर्मनकालनद्रुस्व  
 विलासनऊरेनभारे॥बंधनमोक्षअप्रोक्ष  
 नप्रोक्षनसुंदरहेनअसुंदरलागे॥६॥तत्वअ  
 तत्वकह्योनहीजातजुसुन्यअसुन्यउरेनपरेहे  
 ॥जोतिअजोतिनजांनिसकेकोऊआदीनअंत  
 जीवेनमरेहे॥रूपअरूपकछूनहिदीसतमेद

अभेदकरेनहरेहे॥सुद्धअसुद्धकहेपुनिकौंनजु  
 सुंदरबोलिनमौनधरेहे॥७॥षोजतषोजतषो  
 जिगयेपुनिषोजतहेअरुषोजिहेअने॥गावत  
 गावतगायगरहेबहूगावतहेअरुगायहेगानेदे  
 षतदेषतदेषिरहेसबदीसेनहीकछूठोरविकाने  
 ॥बूजतबूजतबूजिकेसुंदरहेरतहेरतहेरहिराने  
 ॥८॥पिंडमेहेपुनिपिंडलिपेनहीपिंडपरेपुनित्यौं  
 हिरहावे॥श्रोत्रमेहेपरिश्रोत्रसुनेनहीद्रष्टिमेहे  
 परिद्रष्टिनआवे॥बुद्धिमेहेपरिबुद्धिनजानतचि  
 त्तमेहेपरिचित्तनपावे॥वाब्दमेहेपरिवाब्दथक्यो  
 कहिराब्दहूसुंदरदूरबतावे॥९॥भोमीहूतेसेंही  
 आपहुतेसेंहीतेजहूतेसेंहीतेसेंहीपोना॥व्योम  
 हूतेसेंहीआहीअषंडिततेसेंहीब्रह्मरह्योपरि  
 भोना॥देहसंजोगविजोगभयोतबआयोसो  
 कौंनगयोतोहिकोना॥जोकहींयेतोकहेनबने  
 कछूसुंदरजानीगहीमुःषेमौना॥१०॥एकहीब्र  
 ह्मरह्योभरपूरितोदुसरोकौंनबनावनहारो॥जो  
 कोईजीवकरेपरमानतोजीवकहाकछूब्रह्मतेन्या



## सुंदरविलास

रो॥ जो कहें जीव भयो जगदीस ते तोर विमांही क  
 हांको अंधे रो॥ सुंदर मोन गही यह जान के कोन  
 हूँ सांति न होत निधारी॥ ११॥ जो हम भोज करे अ  
 पि अंतर तो ऊह भोज बुरे ही विरुवे॥ जो हम बा-  
 हीर कौं उठि दोरत तो कछू बाहीर हाथ न आवे॥ जो  
 हम काहू कौं पूछत हैं पुनि सोई अगाध अगाध बता  
 वे॥ ताही ते को उन जानि सके तिही सुंदर कोन ही ठो  
 र बतावे॥ १२॥ कोन कहै उस की सुषवाते नैन न बेन  
 न चैन न आसन वासन स्वासन प्यासन याते॥ सी  
 तन धां मन ठोर न ठामन पुर्षन वामन मातन ताते  
 ॥ रूपन रेषन श्लेष अश्लेषन स्वैतन पीतन स्यां मन  
 राते॥ सुंदर मोन गही सिध साधक कौन कहै उस  
 की सुषवाते॥ १३॥ वेद थके कही तंत्र थके कही ग्रं  
 थ थके नि स वा सर गाते॥ से श थके सब ग्रंथ थके  
 पुनि भोज कीयो बहू सांति विधाते॥ पीर थके पुनि  
 मीर थके पुनि धीर थके बहू बोल गिराते॥ १४॥  
 न गही सिध साधक कौन कहै उस की सुषवाते॥ १५॥  
 ॥ जो गिथ के कही जैन थके ऋषि ताप सथ किरहे

फलपाते॥ न्यासीथकेवनवासिथकेजुउदासी  
 थकेबहूपेरफिराते॥ शेषमसार्ईकओरउला  
 ईकथाकीरहेमनमेसुसकाते॥ सुंदरमोनगही  
 सिधसाधककोनकहेउसकीमुःषवाते॥ १५॥  
 ॥ इतिआश्वजकोअंगसमाप्तः॥ ॥ अंग ३५॥  
 ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥ ॥ छु॥  
 इतिश्रीसुंदरदासजीकृतसुंदरविलासग्रंथस  
 माप्तः॥ श्रीलुष्णार्पणमस्तु॥ ॥ शुभंभवतु॥

॥ सुंदरविलासका अंग और सब संवैया की टीप ॥

अंग संवैया	अंग संवैया	अंग संवैया	अंग संवैया
१ अंग २७	१० अंग ५	१९ अंग ६	२८ अंग ४
२ अंग ३६	११ अंग २६	२० अंग ३१	२९ अंग ३२
३ अंग २६	१२ अंग २३	२१ अंग १३	३० अंग १४
४ अंग ११	१३ अंग ६	२२ अंग ३०	३१ अंग ४
५ अंग १३	१४ अंग १४	२३ अंग १८	३२ अंग ५
६ अंग १२	१५ अंग ८	२४ अंग ३७	३३ अंग २४
७ अंग १३	१६ अंग ७	२५ अंग १२	३४ अंग ५
८ अंग ५	१७ अंग ४	२६ अंग २६	३५ अंग १५
९ अंग ६	१८ अंग १०	२७ अंग २१	१०३
१४९	१०३	१९४	
		एकंदर	संख्या ५५९

मंबई मो डोसाभाई होर मोजीवाडियाये ओं यापो  
तनारामवाडी आगलनाज्ञानसागर छापखाना





